332

उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम

चित्रकला

प्रयोगात्मक

2

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्त संस्थान)

ए-24-25, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर- 62, नोएडा-201309 (उ.प्र.)

वेवसाइट: www.nios.ac.in, टॉल फ्री नंबर 18001809393

एनआईओएस वाटरमार्क 70 जीएसएम पेपर पर मुद्रित।

© राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

पुनर्मुद्रण : दिसंबर, 2023 (18,000 प्रतियाँ)

सचिव, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, ए-24-25, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-62, नोएडा-201309 द्वारा प्रकाशित एवं मैसर्स एजुकेशनल स्टोर्स, एस-5, बुल्ड रोड, इंडस्ट्रियल एरिया, आरटीओ ऑफिस के पास, साइट-1, गाजियाबाद द्वारा मुद्रित।

सलाहकार समिति

प्रो. सरोज शर्मा
अध्यक्ष
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा (उ.प्र.)

डॉ. राजीव कुमार सिंह
निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा (उ.प्र.)

डॉ. संध्या कुमार
उप निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा (उ.प्र.)

पाठ्यक्रम समिति

प्रो. पवन सुधीर
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
कला एवं सौंदर्य शिक्षा विभाग
एनसीईआरटी, नई दिल्ली

डॉ. ज्योत्स्ना तिवारी
प्रोफेसर
कला एवं सौंदर्य शिक्षा विभाग
एनसीईआरटी, नई दिल्ली

श्री सतीश शर्मा
निदेशक, शिल्प भारती
ललित कला एवं शिल्प संस्थान
साउथ पटेल नगर, नई दिल्ली

डॉ. सर्बदमन मिश्र
सह आचार्य
शासकीय कॉलेज अजमेर, अजमेर

डॉ. नमन आहूजा
सह-आचार्य
जे.एन.यू., दिल्ली

डॉ. अनिल ढेंगले सूर्या
वरिष्ठ कलाकार
गृह मंत्रालय, दिल्ली

श्रीमती बीनू चौधरी
प्रिंसिपल
नूतन मराठी सीनियर सेकेंडरी स्कूल
नई दिल्ली

सुश्री बोबिता चौहान
ड्राइंग टीचर
एस.के.वी, मदनपुर खादर
नई दिल्ली

श्रीमती अपराजिता रॉय
कला शिक्षिका, आर.पी.वी.वी
गांधी नगर, दिल्ली

श्री मृणमय बरना
पी.जी.टी. चित्रकला
रायसीना बंगाली स्कूल
मंदिर मार्ग, नई दिल्ली

श्रीमती संचिता भट्टाचार्य
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी एवं
पाठ्यक्रम समन्वयक
रा.मु.वि.सं., नोएडा

पाठ लेखक

श्री सतीश शर्मा
निदेशक, शिल्प भारती
ललित कला एवं शिल्प संस्थान
साउथ पटेल नगर, नई दिल्ली

श्री जॉय रॉय चौधरी
पी.जी.टी. चित्रकला
वायु सेना बाल भारती
पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली

श्रीमती अपराजिता रॉय
कला शिक्षक आर.पी.वी.वी
गांधी नगर, दिल्ली

श्री डिप्टी सिंह
कला शिक्षक
राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, दिल्ली

डॉ. गीतिका गुप्ता
कला शिक्षाविद्
इंदिरापुरम, गाजियाबाद

भाषा संपादक

प्रो. वाई.एस. अलोने
प्रोफेसर, दृश्य अध्ययन
स्कूल ऑफ आर्टस एंड
एस्थेटिक्स, जे.एन.यू., नई दिल्ली

डॉ. बालकृष्ण राय
उप निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

डॉ. मोनिका कदियान
शैक्षिक अधिकारी (हिंदी)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

श्रीमती सर्वेश कुमारी
हिंदी अधिकारी
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा

श्रीमती संचिता भट्टाचार्य
वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी एवं
पाठ्यक्रम समन्वयक
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, नोएडा

टाइप सेटिंग

मैसर्स श्री कृष्णा ग्राफिक्स
दिल्ली

विषय-सूची

मॉड्यूल 1: प्रकृति और वस्तु का अध्ययन

1. पेंसिल और रंगों से प्रकृति-चित्रण 1
2. छाया प्रकाश द्वारा स्थिर वस्तु-चित्रण 16
3. मुखाकृति चित्रण 26

मॉड्यूल 2: विभिन्न संरचना, पोस्टर और बनावट का निर्माण

4. संयोजन के रचनात्मक रूप 39
5. पोस्टर निर्माण 55
6. बनावट और मुद्रण का निर्माण 66

मॉड्यूल 3: कोलाज, ग्राफिक्स और विभिन्न कला रूपों का निर्माण

7. कोलाज निर्माण 85
8. अनुप्रयुक्त कला : ग्राफिक डिजाइन 94
9. आदिवासी एवं लोककला के संदर्भ में सृजनात्मक डिजाइन 112

मॉड्यूल - 1

प्रकृति और वस्तु का अध्ययन

1. पेंसिल और रंगों से प्रकृति-चित्रण
2. छाया प्रकाश द्वारा स्थिर वस्तु-चित्रण
3. मुखाकृति चित्रण

1

पेंसिल और रंगों से प्रकृति-चित्रण

प्रकृति (Nature) शब्द लैटिन भाषा के 'नैचुरा' (Natura) शब्द से बना है, जिसका अर्थ है जन्म। इस शब्द को आज अनेक रूप में प्रयुक्त किया जाता है परन्तु अक्सर इसे भू-विज्ञान एवं वन्य जीवन के संदर्भ में ही लिया जाता है जिसका आशय प्राकृतिक पर्यावरण अथवा जंगल होता है। प्राकृतिक चित्रण में यह महत्वपूर्ण है कि आवश्यक रूप एवं आकारों को पहचाना जाए। चित्र का उद्देश्य हमारी आँखों एवं मस्तिष्क को इस प्रकार प्रशिक्षित करना है कि वे जीवन की सामान्य वस्तुओं को देख एवं समझ सकें तथा प्रकृति में व्याप्त सौन्दर्य को पकड़ सकें। प्रकृति में लगभग हर प्रकार के रंग, टैक्सचर, आकार, अनुपात, संतुलन एवं सौन्दर्यपूर्ण लयात्मकता का एक समुचित प्रकार से समन्वय होता है। अत: प्रकृति की विशालता को कागज पर उतारना लगभग असंभव है। किन्तु कला तत्वों के अभ्यास से प्रकृति को समझने का प्रयास किया जा सकता है।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पढ़ने के उपरान्त आप :

- वृक्ष, फूल आदि के चित्र आसानी से बना सकेंगे;
- विभिन्न प्राकृतिक आकारों का अध्ययन एवं संयोजन कर सकेंगे;
- प्रकृति का अध्ययन करते समय उसके विभिन्न अवयवों के अनुपात, संतुलन एवं लय के बीच अन्तर को पहचान सकेंगे;
- विभिन्न रंगों एवं उनकी छटाओं के मध्य अन्तर कर सकेंगे;
- हल्के एवं गहरे शेडस् के द्वारा प्रकाश के स्रोत को चित्रित कर सकेंगे;
- संयोजन में स्थान, संतुलन एवं परिदृश्य को प्रस्तुत कर सकेंगे;
- आलंकारिक एवं प्राकृतिक रूपों के मध्य अंतर स्पष्ट कर सकेंगे।

1.1 परिदृश्य

यह चित्रांकन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष है। इसकी सहायता से द्विआयामी सतह पर त्रिआयामी प्रभाव का भ्रम उत्पन्न किया जाता है। इसे यदि हम सामान्य शब्दों में कहें तो जैसे-जैसे देखने वाले से वस्तु की दूरी बढ़ती जाती है वैसे-वैसे वे छोटे दिखाई देने लगते हैं। हम यहाँ परिदृश्य के तीन प्रकार देखेंगे और यह भी देखेंगे कि प्रकृति चित्रण में कलाकार किस प्रकार इनका प्रयोग करते हैं।

(क) एक बिंदु परिदृश्य

(ख) दो बिंदु परिदृश्य

(स) तीन बिंदु परिदृश्य

अभ्यास आरंभ करने से पहले हमें यह जान लेना चाहिए कि दृष्टि-रेखा अथवा नेत्रतल अथवा क्षितिज का अर्थ क्या है? यहा एक काल्पनिक अक्ष है, जहाँ हमारी दृष्टि (नेत्र) भूमि सतह के समान्तर टिकती है। यह व्यक्ति की ऊँचाई पर निर्भर करती है, इसे हम वह बिन्दु भी कह सकते हैं, जहाँ से देखने वाले एवं वस्तु के मध्य की दूरी मापी जाती है।

1.1.1 एक बिंदु परिदृश्य

कल्पना कीजिए कि एक चित्रकार किसी सीधी सड़क अथवा रेलवे लाइन की पटरियों के मध्य खड़ा है एवं दूर देख रहा है। वह किसी कागज पर प्रकृति के इस दृश्य को चित्रित करना चाहता है। आप यह देखेंगे कि सड़क अथवा रेल पटरियों के दोनों किनारे दूरी बढ़ने के साथ एक दूसरे

चित्र 1.1: रेल की पटरियां, एक बिंदु परिदृश्य

के करीब आते दिखते हैं तथा एक दूरी के बाद आपस में मिलकर हमारे दृष्टि से ओझल हो जाते हैं। यही नहीं, सड़क के दोनों ओर लगे वृक्ष भी इसी प्रकार दिखते हैं, पास वाले बड़े एवं दूर स्थित छोटे। जिस बिन्दु पर ये दोनों किनारे मिलते प्रतीत होते हैं, उसे अदृश्यता बिंदु (वैनिशिंग प्वॉइंट) कहते हैं।

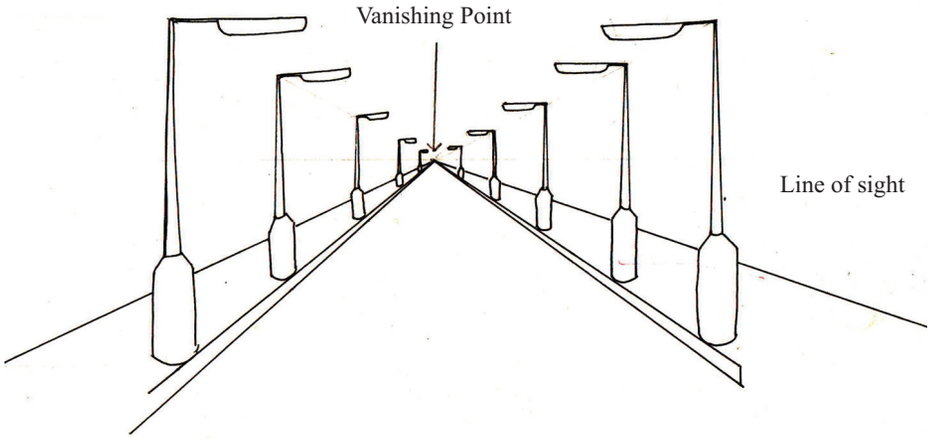

चित्र 1.1(क): सड़क, एक बिंदु परिदृश्य

1.1.2 दो बिंदु परिदृश्य

उदाहरण के लिए, किसी भवन को उसके कोने वाले बिन्दु से देखें अथवा दोनों ओर जा रही सड़क को कोने से देखें तो हमें वे दूरी बढ़ने के साथ दोनों ओर आकार में घटते दिखाई देते हैं। इसका अर्थ यह है कि यदि किसी वस्तु के हमें दो किनारे दिखते हैं, तब उसके चित्रण में दो वेनेशिंग प्वॉइंट आवश्यक हैं। शहरों के दृश्य बनाते समय इस प्रकार के परिदृश्य का अनुभव होता है।

चित्र 1.2: शहर का दृश्य, दो बिंदु परिदृश्य

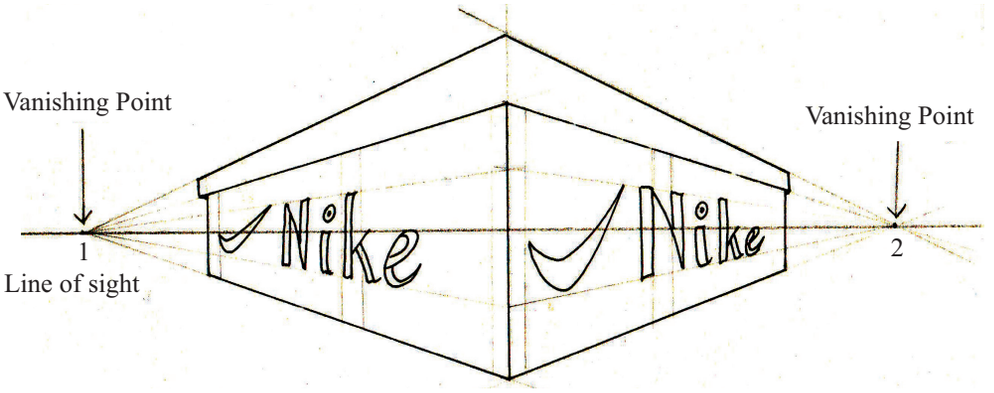

चित्र 1.2(क): जूतों का डिब्बा, दो बिंदु परिदृश्य

1.1.3 तीन बिंदु परिदृश्य

इस प्रकार के परिदृश्य का प्रयोग उस समय किया जाता है जब हम किसी भवन का चित्रण नीचे अथवा ऊपर से देखकर करते हैं। तब हमें प्रत्येक दीवार के दो वेनेशिंग प्वॉइंट के साथ तीसरा वेनेशिंग प्वॉइंट भी दिखता है, दीवार के ऊँचाई की ओर अथवा नीचे की ओर।

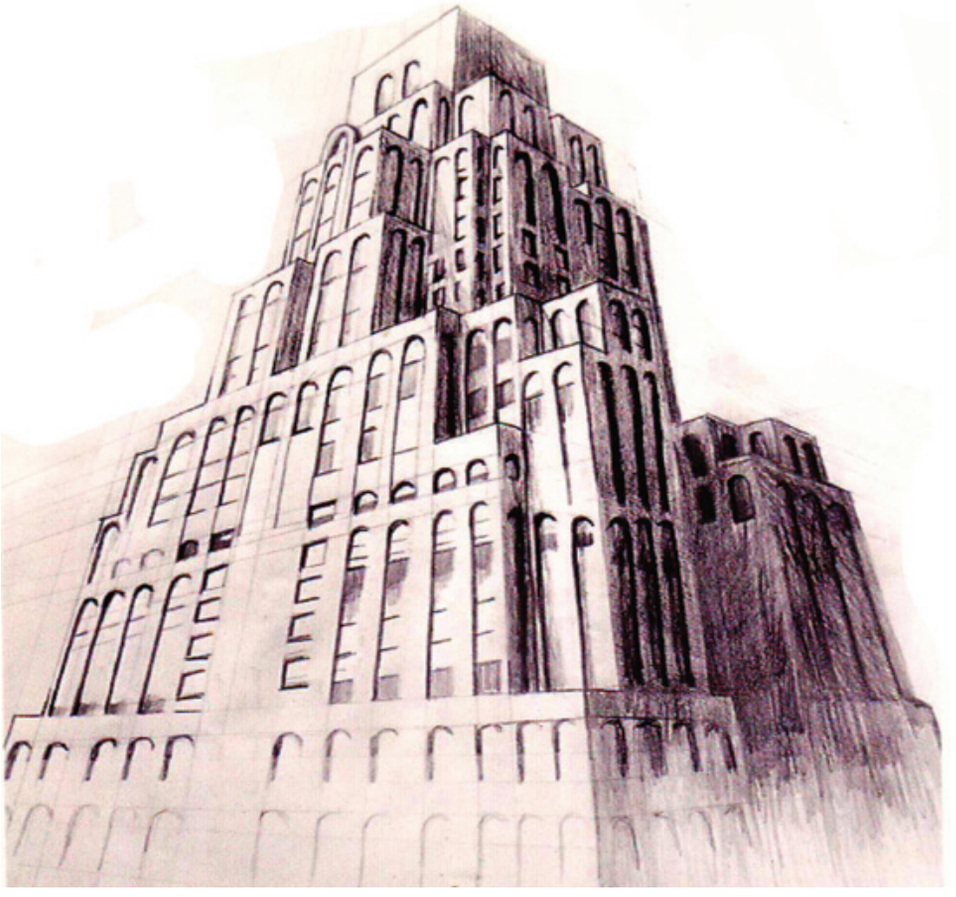

चित्र 1.3: भवन, तीन बिंदु परिदृश्य

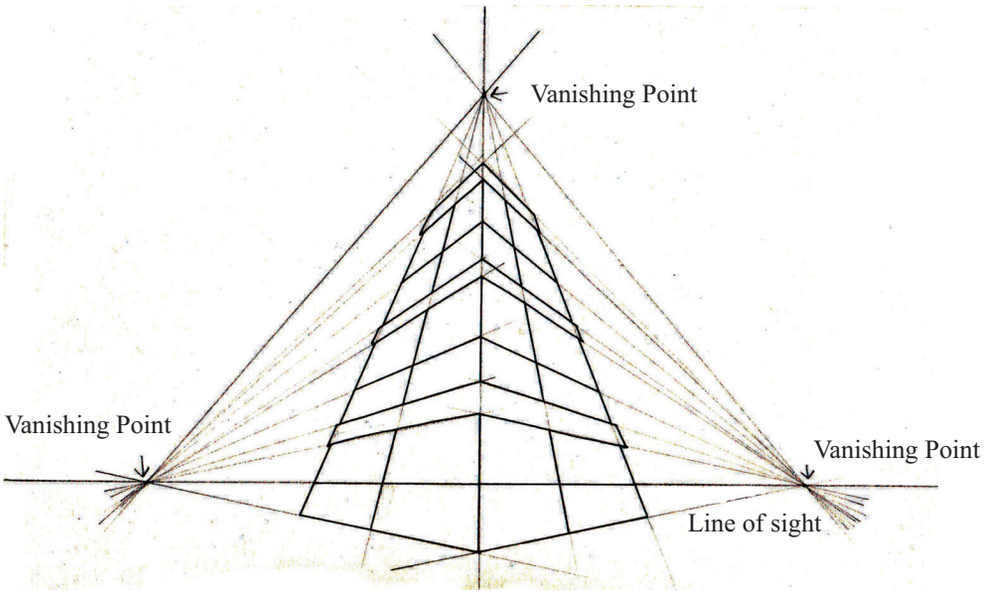

चित्र 1.3(क): भवन का रेखांकन, तीन बिंदु परिदृश्य

1.2 संतुलन

एक अच्छा संयोजन इस बात निर्भर करता है कि आपने दिए हुए स्थान में आकारों का व्यवस्थापन कितना संतुलित एवं अनुपातिक किया है। यहाँ स्थान का आशय उस क्षेत्र से है जिसका प्रयोग चित्र में किया जाना है। उस स्थान का प्रयोग हम कैसे करेंगे, यह हमारी अपनी बौद्धिक क्षमता पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए हम देखते हैं कि दस भिन्न-भिन्न विद्यार्थियों को कोई स्थान देते हैं, तो वे इस स्थान का प्रयोग भिन्न-भिन्न प्रकार से करेंगे। इसका अर्थ यह है कि उन सभी के द्वारा बनाया गया चित्र एक दूसरे से भिन्न होगा। नीचे दिए गए चित्रों को देखें; उन्हें देख कर आप समझ सकेंगे कि इनमें कौन-सा चित्र अच्छी तरह संतुलित है एवं सही अनुपात में संयोजित किया गया है।

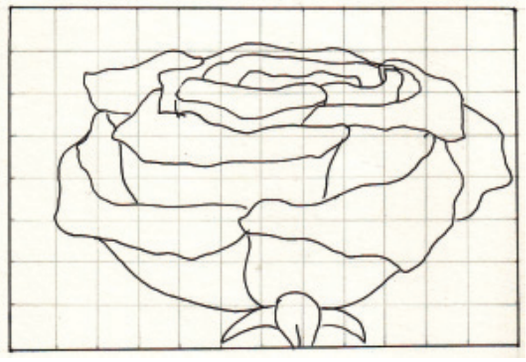

चित्र 1.4

चित्र 1.4 में पुष्प का चित्र दिए गए स्थान के अनुपात में बहुत बड़ा बनाया गया है।

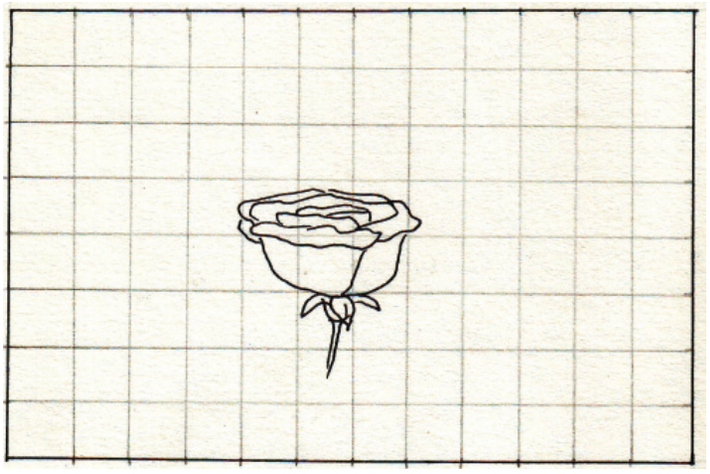

चित्र 1.4(क)

चित्र 1.4(क) में दिए गए स्थान की तुलना में पुष्प बहुत छोटा बनाया गया है।

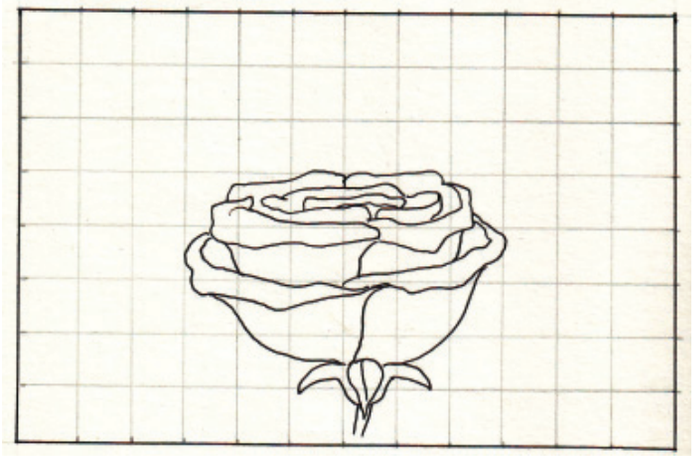

चित्र 1.4(ख)

परन्तु चित्र 1.4(ख; में पुष्प का चित्र दिए गए स्थान के अनुरूप पूर्ण संतुलन एवं अनुपात में चित्रित किया गया है।

1.3 पैंसिल द्वारा शेडिंग

पेंसिल चित्रांकन का सबसे सरल एवं सुलभ उपकरण है। बाजार में रंगीन पेंसिल भी उपलब्ध हैं। इन्हें सख्त (H) एवं काला (B) श्रेणी में बांटा गया है। हर पेंसिल का प्रयोग अधिकांशत: कागज पर किया जाता है। एक अच्छे चित्रांकन में अनेक श्रेणी (ग्रेड) की पेंसिलों का मिला-जुला प्रयोग किया जाता है। लेकिन पहले हमें यह समझना होगा कि स्केचिंग एवं ड्राइंग दो अलग-अलग चीजें हैं। किसी विषय-वस्तु के चित्रण के लिए हम स्केचिंग से आरंभ करते हैं, उसके मूल्य, अनुपात एवं बनावट को समझते हुए धीरे-धीरे हम उसकी पूर्ण विवरणात्मक ड्राइंग की ओर बढ़ते हैं। इसके बाद हम प्रकाश स्रोत को ध्यान में रखते हुए शेडिंग करते हैं अथवा रंग भरते हैं। लेड

पेंसिल एवं रंगीन पेंसिल दोनों से ही एक ही तकनीक से काम किया जाता है। अन्तर केवल इतना है कि रंगीन पेंसिलों से रंगांकन करते हुए हम रंगों की विभिन्न छटाओं को आसानी से देख सकते हैं जो लेड पेंसिल से किए जाने वाले एक वर्णीय शेडिंग कार्य में दिखाई नहीं देतीं।

1.3.1 पौधे के चित्रण हेतु आवश्यक सामग्री

पौधे के चित्रण हेतु विद्यार्थी के पास निम्नलिखित सामग्री होनी चाहिए :

1. ड्राइंग बोर्ड अथवा हार्ड बोर्ड
2. ड्राइंग पेपर
3. ड्राइंग क्लिप अथवा पिन
4. रंगीन पेंसिल एवं एच.बी., 2बी, 4बी, 6बी ग्रेड की लेड पेंसिल
5. रबर
6. पेंसिल छीलने के लिए कटर या शार्पनर

अभ्यास 1

पौधे का चित्रण श्वेत-श्याम (लेड पेंसिल शेडिंग)

प्रकृति में अनेक प्रकार के पौधे, फूल एवं पत्तियाँ पाए जाते हैं। आरंभ करने के लिए कोई एक पौधा चुन लें। स्केचिंग आरंभ करने से पूर्व उसके प्रत्येक विवरण का बारीकी से अध्ययन करें। इसके बाद दिए गए कागज पर एच. बी. पेंसिल से स्केचिंग शुरू करें। स्केचिंग करते समय पौधे की बनावट एवं उसकी कोमलता का ध्यान रखें। तदुपरान्त 2बी. पेंसिल की सहायता से पौधे के अधिकतम विवरण दर्शाते हुए रेखांकन पूर्ण करें।

चित्र 1.5: पौधा

केवल बाह्यरेखाओं से किसी वस्तु की ठोस स्थिति को नहीं दर्शाया जा सकता। इसलिए छाया-प्रकाश का चित्रण आवश्यक है। इसके लिए चित्र में छाया एवं प्रकाश की मात्रा समझना जरूरी है। इससे चित्र में अतिरिक्त गहराई प्राप्त होती है तथा त्रि-आयामी प्रभाव उत्पन्न होता है। धीरे-धीरे इससे पत्तियों का आकार एवं प्रभाव निखरता है।

चित्र 1.5(क): पौधा

चित्र बनाने की शुरुआत उंगलियों का हल्का दबाव डालते हुए बनाई गई हल्की रेखाओं से करना चाहिए क्योंकि इन्हें मिटाना भी आसान होता है। पेंसिल की सहायता से कागज पर विभिन्न टोन प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। 2बी. पैंसिल का हल्के हाथ से प्रयोग करते हुए कोमल टोन प्राप्त करें। गहरी टोन प्राप्त करने के लिए अधिक दबाव डालते हुए 4बी. पैंसिल का तथा अत्यधिक गहरी टोन की प्राप्ति के लिए 6बी. पैंसिल का प्रयोग करें।

चित्र 1.5(ख)

अभ्यास 2

रंगों से फूल का चित्रण (रंगीन पेंसिल से शेडिंग)

कलाकारों को फूलों का सौंदर्य हमेशा से आकर्षित करता रहा है। अब हम गुलाब के फूल का चित्रण करेंगे। चित्र बनाना आरंभ करने से पहले फूल के प्रत्येक विवरण का बारीकी से अध्ययन करें। इसके बाद दिए गए कागज पर लाल रंग की पेंसिल से फूल बनाना शुरू करें। इसके बाद हरे रंग की पेंसिल से पत्तियों को अधिकतम विवरण के साथ चित्रित करें।

चित्र 1.6: गुलाब

अब लाल एवं हरे रंग की छटाओं का महत्व समझने का प्रयास करें। अब फूल में लाल रंग की हल्की एवं मध्यम टोन की सहायता से शेडिंग का प्रयत्न करें तथा ऐसा ही हरे रंग से पत्तियों में करें।

चित्र 1.6(क)

चित्रांकन के अंतिम चरण में फूल एवं पत्तियों में गहरी टोन भरकर गहराई एवं त्रि-आयामी प्रभाव उत्पन्न करें।

चित्र 1.6(ख)

यद्यपि सारी वनस्पतियाँ हरे रंग की होती हैं किन्तु हमें हरे रंग की भिन्न टोन्स का प्रयोग करना चाहिए, जिससे अधिकतम प्रभाव उत्पन्न किया जा सके। जलरंगों के प्रयोग की अनेक तकनीकें हैं परन्तु सबसे अधिक प्रयोग की जाने वाली तकनीक हैं- अपारदर्शी (पोस्टर रंग) एवं पारदर्शी (जल रंग)।

पोस्टर रंग (अपारदर्शी तकनीक)

पोस्टर रंग अपारदर्शी होते हैं। वे उस रंग सतह को छिपा देते है जिस पर वे लगाए जाते हैं। सफेद अथवा हल्का रंग टोन की विविधता के लिए प्रयोग में लाया जाता है। यह तकनीक सुविधाजनक होती है क्योंकि इसमें आप एक रंग पर दूसरे रंगों की अनेक सतह लगा सकते हैं तथा किसी गलती को सुधार सकते हैं। चूँकि पोस्टर रंग अपारदर्शी होते हैं, इसलिए हल्के टोन से रंगांकन आरंभ करना चाहिए।

जलरंग (पारदर्शी तकनीक)

जलरंग लगाने के कई तरीके हैं, उनमें से अनेक इस बात पर निर्भर करते हैं कि कागज में नमी है अथवा नहीं है। जलरंगों की पतली एवं अर्द्धपारदर्शी परत लगाने के लिए रंग में उपयुक्त मात्रा में पानी मिलाना चाहिए। जब एक रंग की परत पर दूसरे की परत लगाई जाती है तब पहली परत का रंग, दूसरे रंग की परत के अन्दर से साफ झलकता रहता है। इसलिए अधिक प्रकाश दर्शाने हेतु सफेद भाग छोड़ने के बाद रंग की हल्की टोन लगाई जाती है।

परिदृश्य चित्रित करने हेतु आवश्यक सामग्री

परिदृश्य चित्रण करने हेतु शिक्षार्थियों के पास निम्नलिखित सामग्री होनी चाहिए-

1. ड्राइंग बोर्ड अथवा हार्ड बोर्ड
2. ड्राइंग पेपर
3. ड्राइंग क्लिप अथवा पिन
4. एच. बी. पैंसिल
5. मिटाने वाला रबर (इरेजर)
6. पेंसिल छीलने के लिए कटर या शार्पनर
7. जलरंगों के ट्यूब अथवा टिक्कियाँ
8. रंग मिलाने के लिए ट्रे
9. 2, 4, 6, 8, 10 एवं 12 नम्बर के जलरंग ब्रश
10. कपड़े का एक टुकड़ा
11. पानी रखने हेतु प्याला

अभ्यास 3

जलरंग से परिदृश्य चित्रण

दृश्य का रेखांकन पेंसिल से पूरा करें। अधिक प्रकाश दर्शाने के लिए सफेद भाग छोड़ें और यह ध्यान रखें कि सफेद भाग पर कोई दाग-धब्बा न लगे।

चित्र 1.7: परिदृश्य

पहले, रंग की हल्की टोन लगाएँ, जब रंग की यह परत हल्की नम हो तभी परिदृश्य में छाया-प्रकाश का ध्यान रखते हुए रंग की मध्यम टोन की परतें धीरे-धीरे लगाएँ।

चित्र 1.7(क)

चित्रण के अंतिम चरण में चित्र में गहराई उत्पन्न करने के लिए रंग की गहरी टोन का प्रयोग करें। गहरी टोन बनाने के लिए अधिक रंग में कम मात्रा में पानी मिलाएँ। इसके बाद अत्याधिक प्रकाश दर्शाने के लिए कागज के छोड़े गए सफेद भाग में रंग की बहुत हल्की टोन लगाएँ।

चित्र 1.7(ख)

आपने क्या सीखा

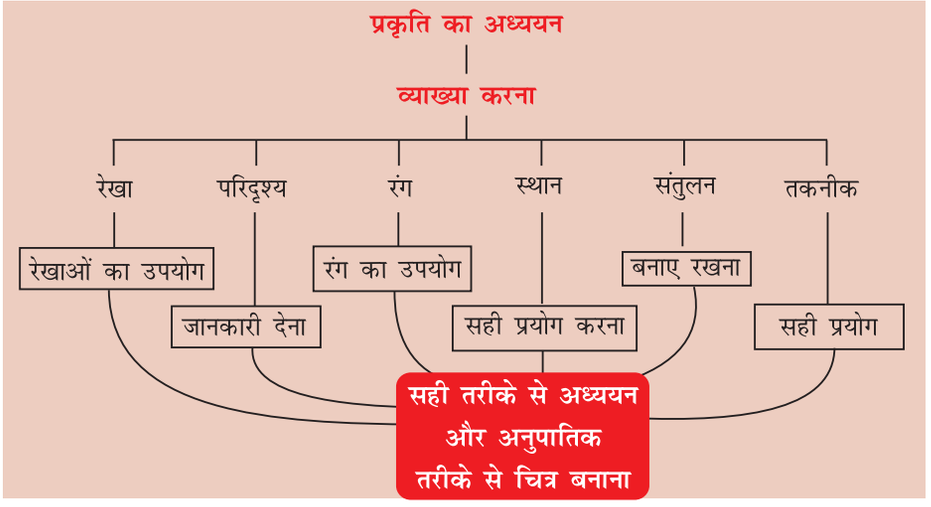

पाठांत प्रश्न

1. गमले में लगा एक साधारण पौधा लें एवं उस पर पड़ने वाले छाया प्रकाश को ध्यान में रखकर कागज पर उसका चित्र बनाएँ।
2. फूलों का एक संयोजन चित्रित करें एवं उसमें 2बी., 4बी., एवं 6बी. पेंसिलों की सहायता से शेडिंग करें।

3. एक काल्पनिक परिदृश्य चित्रित करें एवं इसमें अपारदर्शी तकनीक से पोस्टर रंग भरें।
4. घर से बाहर जाकर परिदृश्य चित्रण हेतु एक स्थान का चयन करें, इसका रेखांकन तैयार करें तथा इसमें पारदर्शी तकनीक से जलरंग भरें।

शब्दकोश

प्राचीन	पुराना
जंगल उजाड़	एक जंगली क्षेत्र जो मनुष्यों की छेड़-छाड़ से अछूता है
दृष्टि-भ्रम	ऐसी कोई चीज जो देखने का भ्रम पैदा करे
वैनिशिंग प्वाइंट	एक ऐसा बिन्दु जहाँ दूर जाती समानान्तर रेखाएँ मिलती प्रतीत हों
अपारदर्शी	जिसके आर-पार देखा न जा सके
निश्चित करना	स्थान पक्का करना
टोन्स	रंगों की छटाएँ
परिदृश्य	चित्रांकन का एक पक्ष (perspective)

2

छाया प्रकाश द्वारा स्थिर वस्तु चित्रण

स्थिर वस्तुओं के भिन्न-भिन्न आकारों का चित्रण, जिसमें उस वस्तु विशेष का आकार रंग, रूप, कठोरता, कोमलता इत्यादि जो भी उस वस्तु के गुण हो, सुसज्जित ढ़ंग से संयोजित कर उनका चित्रण करना स्थिर वस्तु-चित्रण (स्टिल लाइफ चित्रण) कहलाता है। स्टिल लाइफ में फोटोग्राफ की भांति किसी भी चित्र को हूबहू दर्शाकर आकार और वस्तु के अनुपात एवं सन्तुलन के साथ-साथ छाया, प्रकाश और रंग-संगति को ध्यान में रखते हुये चित्रित किया जाता है।

स्टिल लाइफ चित्रण के लिए कुछ तत्वों का समावेश मुख्य माना जाता है। कला के मूलतत्व जैसे बिन्दु, रेखा, अनुपात, आकार, रेखांकन, दृष्टि क्रम, संयोजन, माप, संतुलन, प्रकाश व छाया इत्यादि हैं। स्टिल लाइफ चित्रित करने के लिए इनमें को ध्यान में रखकर वस्तु को उचित स्थान प्रदान कर, एक निश्चित दूरी पर स्थिर बैठकर रेखांकन किया जाता है। स्टिल लाइफ अध्ययन से शिक्षार्थी के अवलोकन करने की क्षमता बढ़ती है। गहन अध्ययन का अवसर मिलता है: वस्तु के सूक्ष्म अध्ययन के अवसर के साथ-साथ उसकी मूलभूत विशेषताओं के आधार पर निर्दिष्ट वस्तु का त्रि-आयामी चित्रांकन स्टिल लाइफ में संभव होता है।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के बाद आप :

- कला के मूल तत्वों की जानकारी प्राप्त कर रेखांकन कर सकेंगे;
- स्थिर वस्तु में प्रयुक्त साधन सामग्री की जानकारी प्राप्त कर उसका उपयोग कर सकेंगे;
- रेखांकन के साथ-साथ शेडिंग तथा छाया-प्रकाश के प्रभावों का दृश्यांकन कर सकेंगे;
- वस्तु के गहन अध्ययन एवं अवलोकन क्षमता का विकास कर सकेंगे;
- पाठ के अंतर्गत दिए गए विभिन्न चरणों में दृश्यांकन से अवगत होकर एक सही एवं संपूर्ण स्टिल लाइफ चित्रण कर सकेंगे।

2.1 स्थिर वस्तु चित्रण में प्रयुक्त कला के मूल तत्व

किसी भी वस्तु चित्रण के लिए उसके बाहरी रूप को समझना आवश्यक होता है जिसे आकार कहते हैं, जो आयाताकार, वर्गाकार, गोलाकार, त्रिभुजाकार इत्यादि हो सकते हैं। हम अनेक प्रकार के रूप, जैसे- मनुष्य, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे इत्यादि को रेखांकित करते हैं। बनाई गई आकृतियाँ वास्तविक आकृति की नकल होकर भी वास्तविक का बोध कराती हैं।

किसी भी रेखांकन में परिप्रेक्ष्य का बहुत महत्व होता है। आकार-प्रकार, रूप-रंग, दाये-बायें, ऊँची-नीची, दूरी-सामीप्य ये ही दृष्टिगत होकर स्वाभाविक चित्र के क्रम को दर्शाता है। प्रकृति में प्रत्येक वस्तु दृष्टि पथ में पारदर्शी वायुमंडल के माध्यम से देखी जाती है। किसी भी वस्तु के रूप-रंग, उसकी दूरी को देखने का माध्यम वस्तु पर पड़ने वाले प्रकाश की मात्रा पर निर्भर करता है। जैसे-जैसे वस्तु हमारी दृष्टि से दूर होती चली जाती है उसका रूप क्रमशः छोटा होता चला जाता है और अंत में वह एक बिन्दु सी प्रतीत होती है। वस्तुओं का रूप वास्तव में एक जैसा होता है पर हम उसे एक जैसा देख नहीं पाते हैं और किसी भी दृश्य का हम वैसा ही चित्र बनाते हैं जैसा कि हमें दिखाई देता है। यही परिप्रेक्ष्य स्टिल लाइफ में मुख्य भूमिका निभाता है और स्टिल लाइफ अंकन में परिप्रेक्ष्य का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक होता है।

स्टिल लाइफ चित्रण के लिए स्थान विभाजन की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। सर्वप्रथम हम चित्र फलक का उचित स्थान निर्धारण करते हैं। चित्र बनाने से पहले एक केंद्र बिंदु निर्धारित करना आवश्यक होता है, जो सम्पूर्ण चित्र को पूरा करने में सहायक होता है। यह ध्यान रखने योग्य होता है कि चित्र कागज के बीच में और आकार के अनुरूप क्षैतिज अथवा लंबवत हो।

किसी भी वस्तु के रेखांकन में अनुपात एवं संतुलन होना आवश्यक होता है। रेखांकन में संतुलन उसमें रेखा, आकार, रंगों, छाया-प्रकाश जैसे तत्वों द्वारा निर्धारित होता है। संतुलन के द्वारा व्यक्ति अथवा वस्तु के आकार के अतिरिक्त उसको रंग, भार, घनत्व/क्षेत्र को दिखाने में समर्थ होता है। रंगों को छाया-प्रकाश एवं हल्के व गहरे प्रभावित करती हैं। संतुलन स्थिर वस्तु चित्रण का एक ऐसा गुण है जिससे संतुलन में स्थायित्व एवं समतुल्यता आती है। समतुल्यता के अभाव में सम्पूर्ण संयोजन लड़खड़ाता-सा प्रतीत होता है। इसके अतिरिक्त एक सही स्थिर वस्तु-चित्रण में उचित माप की भी आवश्यकता है। यह माप मात्र रेखा, बिन्दु और स्थान को ही विभाजित नहीं करता अपितु चित्र में संतुलन को भी दर्शाता है। उचित माप के अभाव में वस्तु का छोटा-बड़ा रूप स्पष्ट नहीं होगा और यह रेखांकन अनुपातिक तौर पर उचित नहीं माना जाएगा।

किसी वस्तु के धरातलीय गुण अथवा बनावट के भी स्थिर वस्तु चित्रण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस धरातलीय गुण के द्वारा हम वस्तु के वास्तविक रूप को दर्शा सकते हैं। स्टिल लाइफ में टैक्सचर अथवा बनावट दर्शाने के लिए रेखा, रंग, टोन (संगति) के उचित समावेश का उपयोग होता है। इनके प्रयोग से बनाया रेखांकन हूबहू प्रतीत होता है।

इसकी परिपूर्णता का अंतिम चरण छाया-प्रकाश का संयोजन होता है। किसी भी वस्तु को हम प्रकाश किरणों के कारण ही देख सकते हैं। वस्तु के ऊपर पड़ने वाली प्रकाश की दिशा और

स्थिति, वस्तु में छाया का निर्माण करती है और यह छाया और प्रकाश का संयोजन किसी भी चित्र में सजीवता और भार प्रदान करने में सहायक होता है।

2.2 स्थिर वस्तु (स्टिल लाइफ) चित्रण की विधि : वस्तु की माप

वस्तु को निर्दिष्ट स्थान पर रखकर, एक निश्चित दूरी पर बैठकर, दायें हाथ में पेंसिल को सीधा पकड़कर एक आँख बंदकर, हम वस्तु का सही माप निर्धारित करते हैं एवं उसका चित्र बनाना प्रारंभ करते हैं। स्टिल लाइफ चाहे पेंसिल शेडिंग, क्रेयॉन-पेस्टल रंग अथवा जलरंग, किसी भी माध्यम से बना रहे हों, प्रथम चरण में हम पेंसिल द्वारा माप लेकर ही रेखांकन प्रारंभ करते हैं जिससे चित्र का उचित आकार संयोजन, अनुपातिक संतुलन और स्थान भी निर्धारित हो सके।

2.2.1 आवश्यक सामग्री

ड्राइंग बोर्ड, ड्राइंग पिन, पेपर, पेंसिल (HB, 4B, 6B) पेस्टल रंग, जलरंग, ब्रुश (सं. 2, 4, 8, 10), कलर पैलेट, रबर, पेंसिल कटर आदि।

अभ्यास 1

पेंसिल द्वारा स्थिर वस्तु (स्टिल लाइफ) चित्रण

प्रथम चरण

सर्वप्रथम वे सारी वस्तुएँ जो हमें स्टिल लाइफ के लिए प्रयोग करनी हैं, उनको एक निश्चित स्थान पर संयोजित कर लें। उसके बाद हल्के रंग वाली पेंसिल के द्वारा हल्के हाथ से सामने रखी हुई वस्तुओं का एक बिंदु निर्धारित करते हुए उनके आकार के अनुरूप रेखांकन करें। सभी वस्तुओं को पूरी तरह बनाने के बाद फालतू रेखाओं को मिटाकर रेखांकन स्पष्ट कर लें।

चित्र 2.1

द्वितीय चरण

बनाए गए रेखांकन में अब हम पेंसिल द्वारा छाया प्रकाश के अनुरूप शेडिंग करना प्रारम्भ करते हैं। प्रारम्भ में छायांकन करते हुए प्रकाश वाला हिस्सा छोड़कर बाकी सारे भाग पर शेडिंग करना

शुरू करते हैं। शेडिंग की टोन को हल्का-गहरा करने के लिए हाथ के दवाब को कम ज्यादा करने के साथ-साथ 4बी पेंसिल हल्की टोन के लिए तथा गहरी टोन के लिए 6बी पेंसिल का प्रयोग करते हैं।

चित्र 2.1(क)

तृतीय चरण

यह स्टिल लाइफ चित्रण का अंतिम चरण होता है, इसमें पूरे चित्र को अंतिम रूप प्रदान करते हैं। चित्र के प्रत्येक हिस्से को बहुत ध्यान से देखते हुए गहरी और हल्की (शेडिंग) छायांकन के द्वारा त्रि-आयामी प्रभाव प्रदान करने का प्रयत्न करें। आगे की वस्तु पूरी तरह से स्पष्ट और पीछे की वस्तु को धुंधला दिखाकर परिप्रेक्ष्य को उभारें। गहरी एवं हल्की (शेडिंग) छायांकन के द्वारा चित्र के प्रत्येक हिस्से को स्पष्ट करते हैं। चित्र पूरा करने के बाद सभी फालतू रेखाओं को मिटाकर चित्र को अंतिम रूप प्रदान करते हैं।

चित्र 2.2(ख)

अभ्यास 2

पेस्टल रंगों द्वारा स्थिर वस्तु चित्रण

प्रथम चरण

सर्वप्रथम जिन वस्तुओं को चित्रित करना है उनका चयन और संयोजित कर लें। वस्तुओं को आकार के अनुरूप ही रखना चाहिए। अपने पेपर को ड्राइंग बोर्ड पर लगाकर, एक निश्चित दूरी पर बैठकर, बताए गए तरीके द्वारा माप लें। एक केंद्र बिंदु बनाकर चित्र को बनाना प्रारंभ करें। सारी वस्तुएँ बनाने के बाद स्पष्ट रेखा के द्वारा उन्हें अंतिम रूप प्रदान करें। फालतू रेखाओं को मिटा दें।

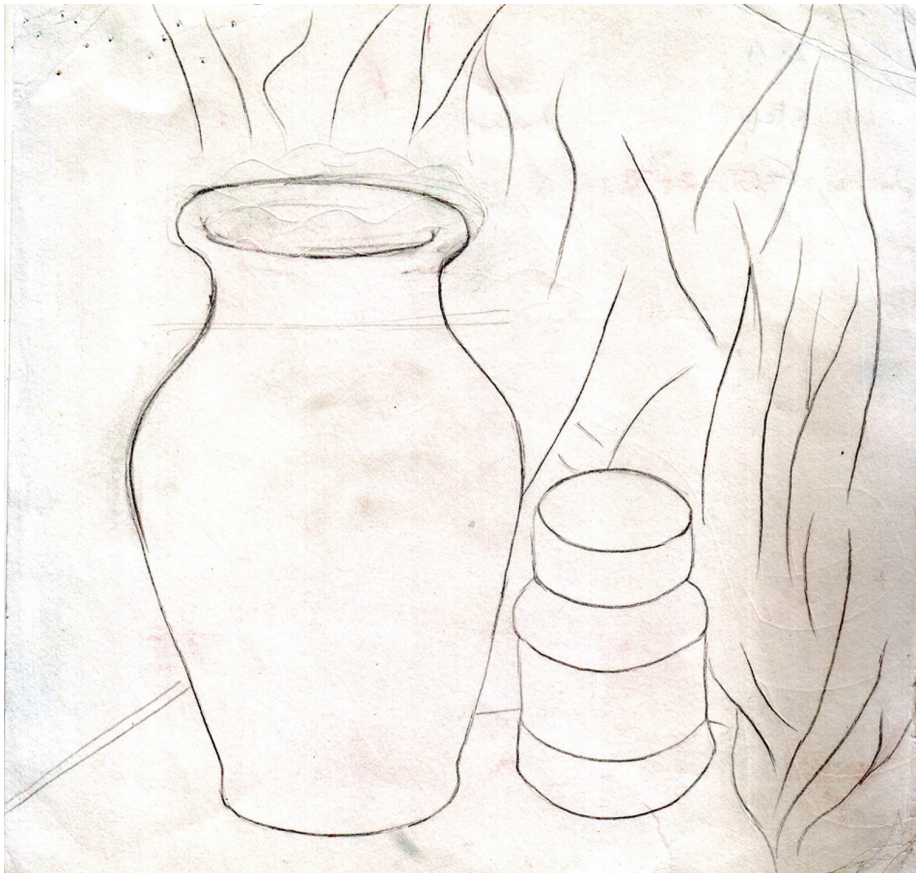

चित्र 2.2

द्वितीय चरण

इस चरण में बनाए गए चित्र में पेस्टल रंग द्वारा रंगांकन प्रारम्भ करते हैं। रंगांकन हमेशा हल्के रंग से गहरे रंग की तरफ किया जाता है। छायांकन करते हुए अधिक प्रकाश वाले क्षेत्रों को ऐसे ही छोड़ दिया जाता है, शेष भाग में पड़ने वाली छाया के आधार पर हल्की शेडिंग देते हुए, पूरे चित्र में हल्के हाथ से छायांकन करें।

चित्र 2.2(क)

तृतीय चरण

इस चरण में हम चित्र को अंतिम रूप प्रदान करने के लिए हल्की और गहरी शेडिंग देते हुए रंगों के माध्यम से त्रि-आयामी प्रभाव देने के साथ-साथ परिप्रेक्ष्य भी दर्शाने का प्रयास करते हैं। पृष्ठभूमि को अधिक गहरी शेडिंग देते हुए इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं कि वह चित्र के अन्य भाग से अलग दिखाई दे। छायांकन करते हुए रंग के गहरे-हल्के प्रभाव के द्वारा चित्र को अंतिम रूप प्रदान करते हुए समाप्त करते हैं।

चित्र 2.2(ख)

अभ्यास 3

जलरंगों द्वारा स्थिर वस्तु का चित्रण

प्रथम चरण

सर्वप्रथम हमें जिन वस्तुओं का चित्रण करना है, उन्हें एक निर्दिष्ट स्थान पर संयोजित कर देते हैं। इसके पश्चात एच.बी. पेंसिल द्वारा हल्के हाथ से सामने रखी हुई वस्तुओं को अपने ड्राइंग बोर्ड पर लगे पेपर पर बनाना शुरू करते हैं। चित्र को बनाने से पहले उसके आकार और माप से पूरी तरह अवगत होना चाहिए। चित्र हमेशा पेपर के बीच में ही बनाना चाहिए। पेपर के चारों ओर बराबर स्थान छोड़ना चाहिए। चित्र को उनकी मूल विशेषताओं के आधार पर उचित रूप से हूबहू बनाकर फालतू रेखाओं को मिटाकर स्पष्ट कर लेना चाहिए।

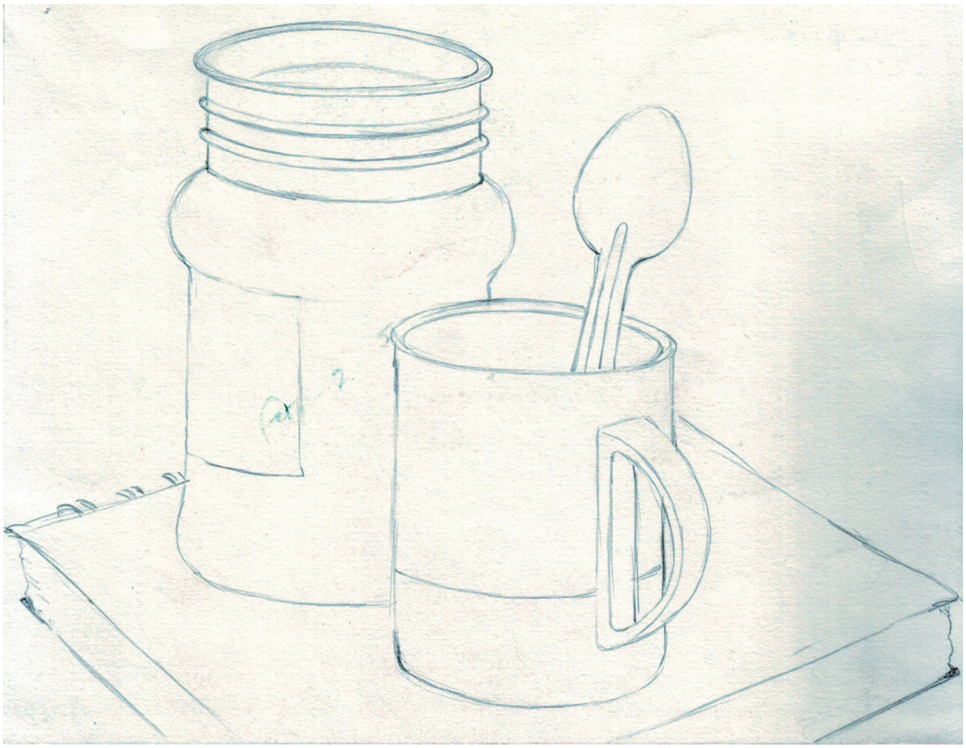

चित्र 2.3

द्वितीय चरण

इस चरण में हम बनाए गए रेखांकन में जल रंग भरना शुरू करते हैं। प्रथम सतह बिल्कुल हल्के रंग की होनी चाहिए। इससे चित्र में सही टोन को निकाला जा सकता है। इस चरण में चित्र में एक जैसा हल्का रंग भरते हैं। मात्र कुछ जगहों पर ही हल्का गहरा रंग भरते हैं। ज्यादा प्रकाश वाले भाग को ऐसे ही छोड़ देते हैं।

चित्र 2.3(क)

तृतीय चरण

इस अंतिम चरण में चित्र के प्रत्येक भाग को ध्यानपूर्वक देखते हुए तथा छाया प्रकाश के प्रभाव का अध्ययन करते हुए विभिन्न टोन निकालना प्रारम्भ करते हैं। इसके लिए चित्र के एक भाग का छायांकन करते हैं। रंगों के प्रभाव द्वारा गहरी और हल्की तान देते हैं। ज्ञात रहे कि रंगों को गाढ़ा व हल्का करने में जलरंग की वास्तविक पद्धति उसकी पारदर्शिता प्रभावित न हो। रंगों की तान हल्की और सुंदर त्रि-आयामी रूप को दर्शाने वाली हो। चित्र के प्रत्येक हिस्से को पूरा करते हुए अंतिम रूप प्रदान करें।

चित्र 2.3(ख)

आपने क्या सीखा

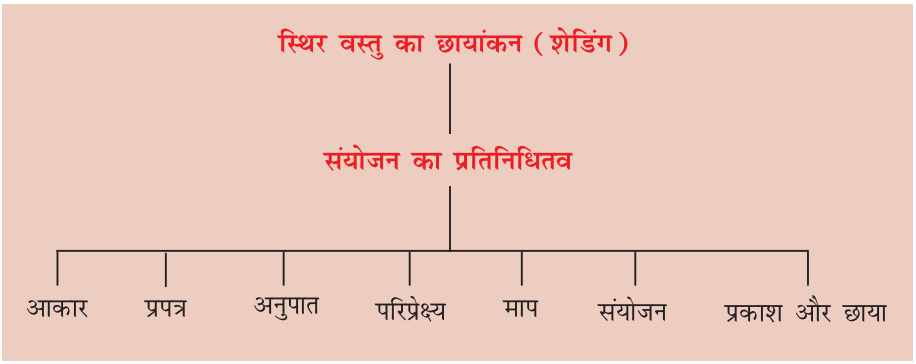

पाठांत प्रश्न

1. स्टील के तीन बर्तनों को संयोजित कर उनका पेंसिल से रेखांकन करें।
2. पीतल और प्लास्टिक के बर्तनों को संयोजित कर पेस्टल रंगों से उनका स्थिर (स्टिल लाइफ) चित्रण करें।

3. चीनी-मिट्टी की केतली, कप एवं प्लेट को संयोजित कर जलरंगों से उनका चित्रण करें।
4. एक ट्रे में पपीता, केले एवं सेव को संयोजित कर उन्हें जलरंग से चित्रित करें।
5. स्टिल लाइफ के चित्रण हेतु कौन-कौन सी सामग्री आवश्यक है?
6. स्टिल लाइफ चित्रण में किन बिन्दुओं का ध्यान रखना आवश्यक है?

शब्दकोश

परिप्रेक्ष्य	वस्तुओं की दूरी का ठीक-ठीक अनुपात दिखाना।
त्रिआयामी चित्रांकन	वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई के साथ गहराई को भी दर्शाना।
संयोजित करना	यथोचित प्रकार सजाकर रखना।
हूबहू	वास्तविक के समान।

3

मुखाकृति चित्रण

मुखाकृति चित्रण, व्यक्ति चित्रण अथवा छवि चित्रण चित्रकला की एक प्रमुख विधा है। इस पद्धति में हम व्यक्ति की चारित्रिक विशेषताओं को दर्शाते हुए व्यक्ति विशेष की मुखाकृति चित्रित करते हैं। इस विधा में हम मुख्य रूप से मुखाकृति का चित्रण करते हैं तथा दर्शक उस चित्र को देखकर आसानी से पहचान जाता है कि यह चित्र अमुक व्यक्ति विशेष का है।

यथार्थवादी व्यक्ति चित्रण के सम्बन्ध में भारतीय साहित्य जैसे महाभारत, रामायण और पुराणों में भी उल्लेख मिलते हैं। अनेक ग्रंथों में कला एवं कला संबंधी सिद्धांतों का उल्लेख हुआ है। वात्स्यायन रचित कामसूत्र में चित्रकला के षडांग के आधार पर चित्रकला के नियमों का विवेचन किया गया है।

मुखाकृति चित्रण में सबसे प्रमुख तत्व व्यक्ति के मुख का आकार का है। यह गोलाकार, अंडाकार, चौकोर और पंचभुज हो सकता है। मुख्य रूप से मुखाकृति में दो आँखे, दो भौहें, एक नाक, दो कान और एक मुँह होता है। परन्तु यह प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न-भिन्न होते हैं। इसी प्रकार एक व्यक्ति विशेष में भी उसका बाह्य रूप भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में बदला हुआ दिखाई देगा। जब हम एक व्यक्ति को अलग-अलग कोणों से देखते हैं तो द्विआयामी चित्र पटल पर भी हमें अलग-अलग रूप में चित्रित करना पड़ेगा। इसी प्रकार एक ही व्यक्ति का चित्र अलग-अलग दृष्टितल से अर्थात आँख की सतह से देखें तो वह हमें भिन्न-भिन्न रूप में दिखाई देगा।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के बाद आप :

- मुखाकृति की जानकारी प्राप्त कर उसका निर्माण करेंगे;
- मानव मुखाकृति के अनुपात का उल्लेख कर सकेंगे;
- एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति की मुखाकृति किस प्रकार भिन्न है, इसकी जानकारी प्राप्त कर प्रस्तुत कर सकेंगे;

- मानव मुख के भावों को चित्र में किस प्रकार चित्रित करना है, इसकी जानकारी प्राप्त कर प्रस्तुत कर सकेंगे;
- चित्रकला के विभिन्न माध्यमों जैसे-पेंसिल, पेस्टल रंग, जलरंग, तैलरंग इत्यादि से मुखाकृति चित्रित कर सकेंगे।

आवश्यक सामग्री

ड्राइंग बोर्ड, ड्राइंग शीट, हैंडमेड पेपर, पेंसिल-एचबी, 2बी, 4बी, 6बी, रबड़, रंग-पेंसिल रंग, पेस्टल रंग, जल रंग ब्रुश (2, 4, 6, 10, 12), आधे इंच का चपटा ब्रश, कलर मिलाने का।

3.1 मुखाकृति चित्रण की विधि/तकनीक

मुखाकृति चित्रण के लिए सर्वप्रथम हम सामने बैठे व्यक्ति को सूक्ष्मता से देखेंगे कि उसकी बाह्य मुखाकृति, गोलाकार, अंडाकार, आयातकार, चौकोर अथवा पंचभुजाकार कैसी है? जैसा कि चित्र 3.1 में दिखाया गया है।

चित्र 3.1

सामने बैठे व्यक्ति को यदि हम अलग-अलग कोण से देखें तो उस व्यक्ति की मुखाकृति हमें भिन्न-भिन्न रूप में दिखाई देगी। जैसे सम्मुख मुद्रा, तीन चौथाई मुद्रा अथवा एक चश्म चेहरा। उदाहरण हेतु हम चित्र 3.2 में देख सकते हैं।

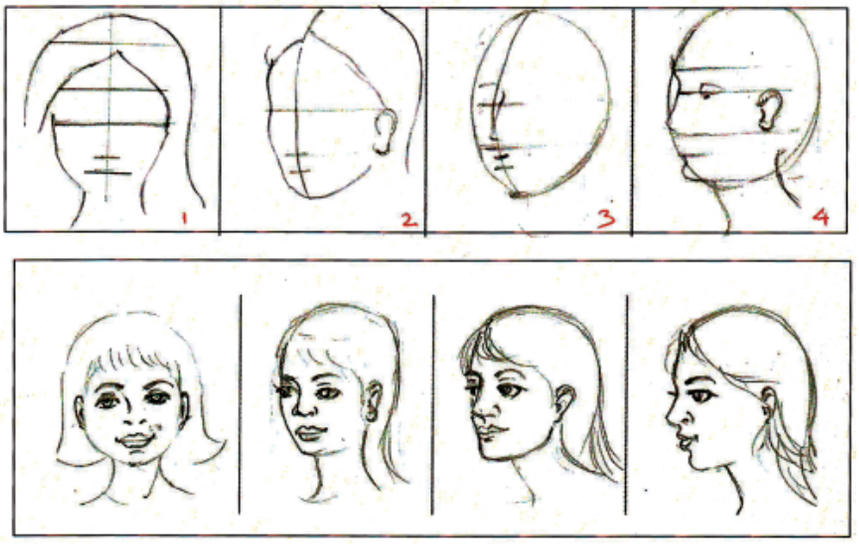

चित्र 3.2

इसी प्रकार जब सम्मुख बैठे व्यक्ति को हम अलग-अलग दृष्टि-सतह से देखते हैं तो वही व्यक्ति हमें अलग-अलग रूप में दिखाई देता है। जब हमारी आँख की सतह ऊपर होती है तो हमें उसके बालों वाला हिस्सा अधिक दिखाई देता है और जब हमारी आँख की सतह नीचे होती है तो हमें चेहरे का भाग अधिक दिखने लगता है। जब हमारी आँख की सतह सम्मुख व्यक्ति की आँख की सतह के बराबर हो, तो चेहरा स्पष्ट रूप से दिखाई देता है जैसे कि फोटोग्राफर पासपोर्ट साइज फोटो खिंचता है। जब हमारी आँख की सतह नीचे हो जाती है और सम्मुख बैठा व्यक्ति हमसे ऊपर हो जाता है तो हमें बालों का हिस्सा कम और ठोड़ी के नीचे का हिस्सा अधिक दिखाई देता है। उदाहरण के लिए हम चित्र 3.3, देखकर अपनी स्केच बुक में अभ्यास कर सकते हैं।

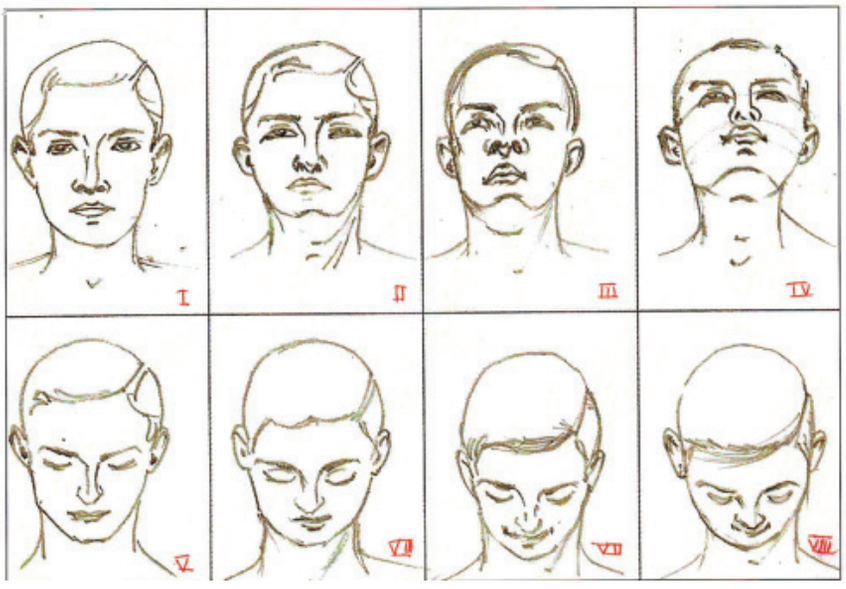

चित्र 3.3

I. आँख की सतह पर स्थित मुखाकृति

II. आँख की सतह से थोड़ा ऊपर की मुखाकृति,

III. मुखाकृति आँख की सतह से ऊपर होने के कारण ठोड़ी के नीचे का भाग अधिक और बालों का भाग कम दिखाई देता है।

IV. मुखाकृति आँख की सतह से अधिक ऊपर होने के कारण हमें सिर के बालों का भाग नहीं दिखाई देता है, जबकि ठोड़ी के नीचे का भाग बहुत अधिक दिखाई देता है।

V–VIII. इन चित्रों में इसके विपरीत अवस्था में सिर के बाल अधिक से अधिक दिखाई देता है, जबकि ठोड़ी वाला भाग कम से कम दिखाई देता है।

मुखाकृति चित्रण की प्रमुख विशेषता व्यक्ति विशेष की चारित्रिक भावों को प्रमुखता से दर्शाना है। भावों के कारण मुखाकृति की मांसपेशियों में परिवर्तन हो जाता है और वह भिन्न-भिन्न रूप में दिखाई देती हैं, जैसे शांत मुद्रा, दुखी मुद्रा, हास्य मुद्रा, चिंतित मुद्रा इत्यादि। नौ रस के आधार पर वह भिन्न-भिन्न रूप में दिखाई देने लगता है, जैसा कि चित्र 3.4 में दर्शाया गया है।

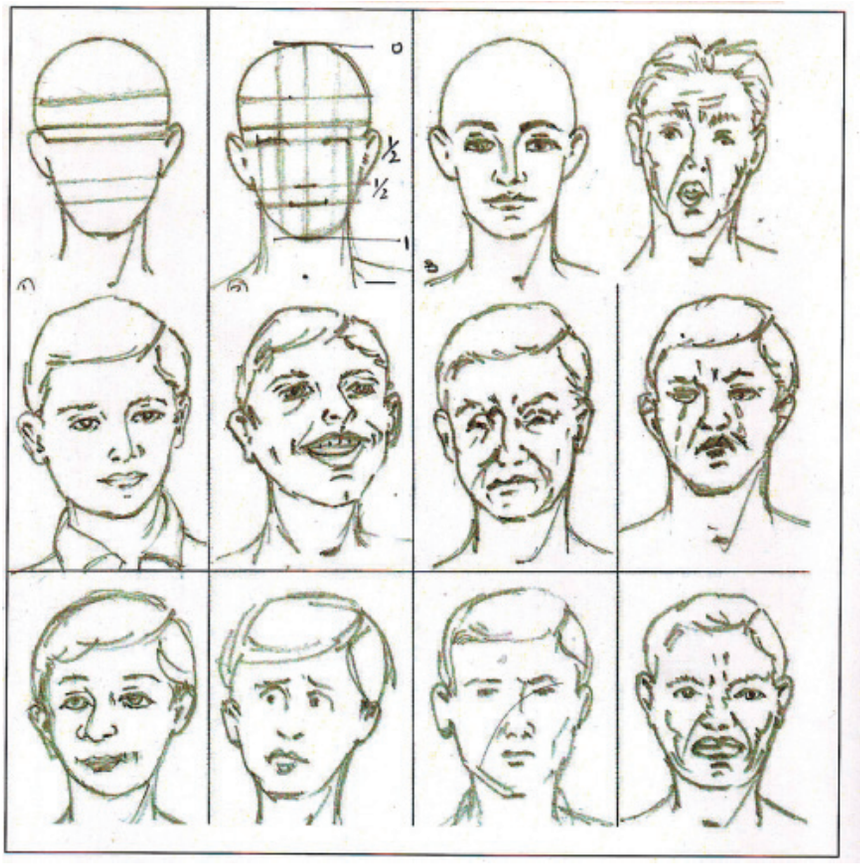

चित्र 3.4

स्मृति से मुखाकृति बनाते समय हमें उस व्यक्ति विशेष की चारित्रिक विशेषताओं का विशेष रूप से ध्यान में रखना पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति की चारित्रिक विशेषता, भाव-भंगिमा भिन्न-भिन्न होती है। इन विशेषताओं के आधार पर हम उस व्यक्ति को आसानी से पहचान लेते हैं। जैसे भगवान राम और लक्ष्मण के चित्र में राम के साँवले रंग और लक्ष्मण के गोरे रंग से हम पहचान लेते हैं कि कौन सी मुखाकृति किसकी है? बालों में लगे मोर पंख से हम आसानी से पहचान लेते हैं कि राम कौन हैं और कृष्ण कौन हैं? इसी प्रकार महात्मा बुद्ध और भगवान महावीर के चित्रों को भी उनके चारित्रिक विशेषताओं के कारण आसानी से पहचान लेते हैं और उन्हें चित्रित करने में बड़ी सुविधा होती है।

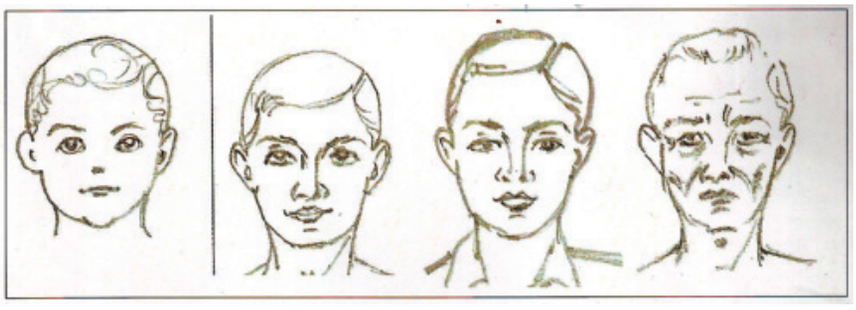

चित्र 3.4(क)

चित्र 3.4(ख)

मुखाकृति चित्रण का कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व छात्र/छात्राओं को मुखाकृति के विभिन्न भागों जैसे आँखे, नाक, कान और होंठ इत्यादि की विभिन्न अवस्थाओं एवं दृष्टि बिन्दुओं के आधार पर चित्रण करने का अभ्यास करना चाहिए, जैसा कि (चित्र 3.5 में दर्शाया गया है)। इसी प्रकार चित्र 3.6 में दर्शाए अनुसार मुखाकृति को विभिन्न अवस्थाओं जैसे पार्श्व एवं सम्मुख मुखाकृतियों की विभिन्न अवस्थाओं को भी चित्रित करने का अभ्यास करते रहना चाहिए।

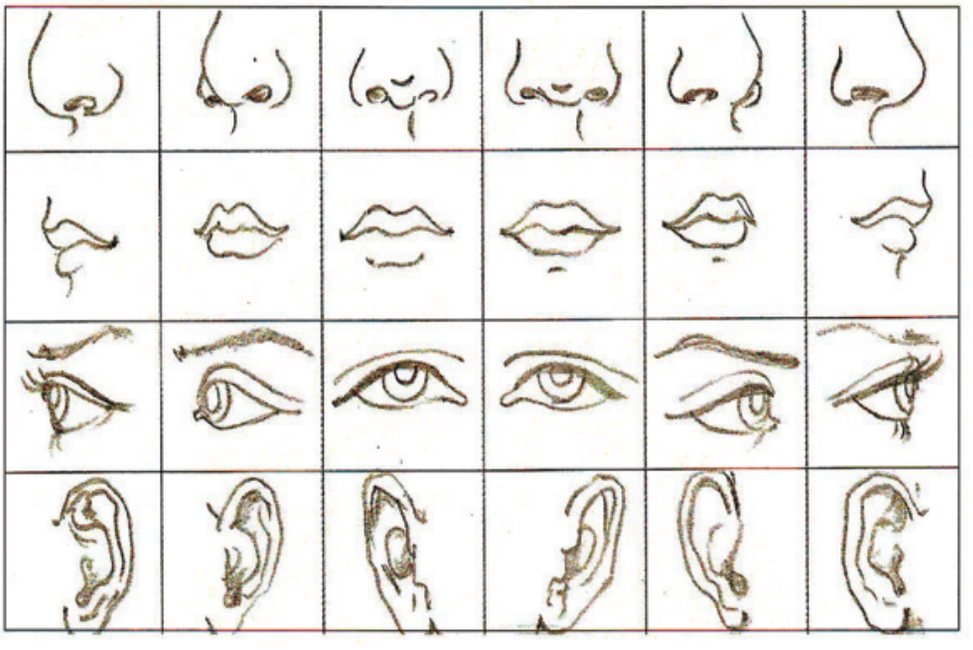

चित्र 3.5

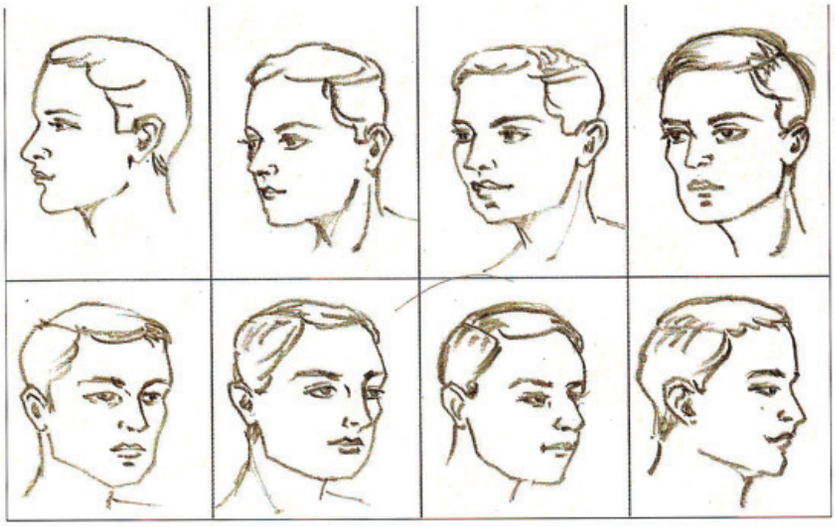

चित्र 3.6

मानव मुख का आनुपातिक संबंध

मानव शरीर के विभिन्न अंगों का आपस में एक आनुपातिक संबंध होता है। यदि किसी मानव के सिर को एक इकाई माने तो उसका पूरा शरीर उसके सिर 7½ गुण होता है। इसी प्रकार चेहरे में भी आँख, नाक, कान, इत्यादि में एक आनुपातिक संबंध होता है। अत: साधारण अथवा आदर्श मुखाकृति बनाते समय सबसे पहले हम मुख की बाह्य आकृति बनाएँगे। यह गोल, अण्डकार, आयताकार, वर्गाकार अथवा पंचभुजाकार हो सकती है। जैसा भी चित्र बनाना चाहें पहले हम उस आकृति को चुन लें। चित्र 3.1 के अनुसार हम सबसे पहले मुखाकृति के बाह्य आकार को चित्रित करेंगे। इसके पश्चात चित्र 3.4 के भाग 1 के अनुसार मुखाकृतियों के अनुसार यहाँ पर मुखाकृति की आँख और नाक को रेखांकित करेंगे। अब मध्य भाग के ऊपर और नीचे वाले हिस्सों को भी दो बराबर भागों में बाँटेंगे। नीचे वाले भाग में नाक की लम्बाई और कान की लम्बाई भी आ जाती है। ऊपर वाले हिस्से में बालों का स्थान निर्देशित हो जाता है। नाक के नीचे वाले हिस्से को फिर दो हिस्सों में बांटते हैं। इस रेखा पर ऊपर की ओर नीचे के होंठ को बनाया जाता है। आँख की रेखा और ऊपर की रेखा के मध्य भाग को एक बार फिर विभाजित करते हैं। इस भाग में भौहें चित्रित किए जाते हैं। मुखाकृति की रेखा संख्या 3 जो मध्य भाग में होती है जहाँ पर आँखो को चित्रित किया जाता है; इस रेखा को सम्मुख मुखाकृति चित्र में पाँच भागों में बांट देते है। इसके दूसरे और तीसरे भाग में आँख की चौड़ाई आ जाती है। तीसरे और चौथे भाग में दोनों आँखों के बीच का अंतर आ जाता है। चौथे और पाँचवे भाग में दूसरी आँख को चित्रित किया जाता है। प्रत्येक आँख के मध्य भाग में गोलाकार पुतली को चित्रित किया जाता है। चित्र 3.1 और चित्र 3.5 से लम्बवत रेखा नीचे की ओर बनाएं तो यह रेखा मुखाकृति को जहाँ पर काटती है, वहाँ से हम गर्दन की रेखाओं को खींचते हैं, जिससे गर्दन की मोटाई भी आ जाती है। यदि गर्दन के मध्य बिन्दु से एक सिर जितनी इकाई को दाहिनी और बाईं ओर बनाएं तो हमें कंधों का अनुपात प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार हम एक आदर्श मुखाकृति का सृजन कर लेते हैं।

अभ्यास 1

रंगीन पेंसिल से मुखाकृति चित्रण

प्रथम चरण

मुखाकृति को पूर्ण रेखांकित करने के पश्चात हम देखते हैं कि यह द्विआयामी तल पर एक द्विआयामी मुखाकृति दिखाई देती है। इस मुखाकृति में त्रि-आयामी प्रभाव उत्पन्न करने के लिए हम 2बी, 4बी, पेंसिल की सहायता से छाया-प्रकाश के प्रभाव को दर्शाते हुए त्रि-आयामी प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं। इन पेंसिलों का उपयोग करते हुए हम हल्के तान (लाइट शेडिंग) से गहरी तान (डार्क शेडिंग) की तरफ जाते हैं। रंगीन पेंसिल से रंगांकन करते समय उपर्युक्त तकनीक का ध्यान रखते हुए हमें हल्की तान से गहरी तान की तरफ जाना पड़ता है।

द्वितीय चरण

इस पद्धति में चेहरे के रंग, बालों के रंग इत्यादि को पूर्णत: सादृश्य बनाना चाहिए, जिससे कि दर्शक उस चित्र को देखकर आसानी से पहचान जाए कि यह अमुक व्यक्ति का चित्र है।

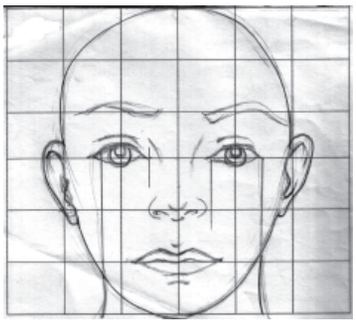

चित्र 3.7

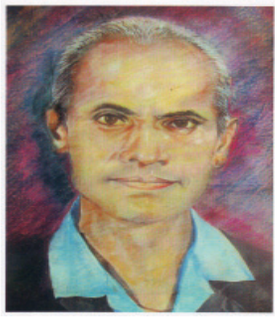

चित्र 3.7(क)

तृतीय चरण

चित्र 3.8 में एक वृद्ध व्यक्ति के चित्र को हमने रंगीन पेंसिल से बनाया है। इस चित्र में हमने तिरछी रेखाओं से छाया प्रकाश का प्रभाव उत्पन्न किया है।

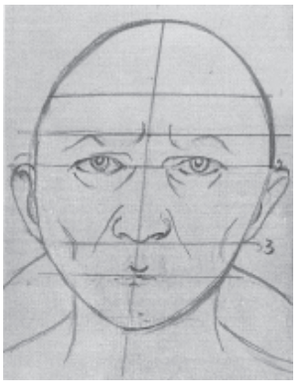

चित्र 3.8

चित्र 3.8(क)

पेस्टल रंगों द्वारा व्यक्ति चित्रण की विधि भी रंगीन पेंसिल की तकनीक के समान ही है। परन्तु इस विधि में आवश्यकता पड़ने पर गहरी तान के ऊपर हल्की तान का भी प्रयोग तैल रंगों की भाँति किया जा सकता है। अति प्रकाश दिखाने के लिए गहरी तान वाले रंगों के ऊपर हल्की तान की रंगत लगाने से चित्र बिल्कुल सजीव सा प्रतीत होता है, जैसा कि चित्र 3.9 में हमने दर्शाया है। यह चित्र चार साल के एक बच्चे का है। इस चित्र में बच्चे के मुख पर मासूम एवं निश्छल मुस्कान दिखाई दे रही है एवं आँखों में एक चंचलता दिखाई दे रही हैं। पेस्टल रंगों का बहुत सुंदरता से प्रयोग किया गया है। (चित्र 3.9)

चित्र 3.9

अभ्यास 2

जल रंग से मुखाकृति चित्रण

जल रंगों से मुखाकृति बनाने के लिए हम पहले पेंसिल से रेखाकृति बनाते हैं। तत्पश्चात जल रंग करने से पहले इस रेखाकृति को हम रबड़ से हल्का कर लेते हैं क्योंकि जल रंग पारदर्शी होते हैं। यदि हम रेखाचित्र को हल्का नहीं करेंगे तो पेंसिल की लाइनें जल रंग के नीचे से दिखाई देंगी। जलरंग तकनीक में भी हम मुखाकृति चित्रण को हल्की तान से रंग करना प्रारम्भ करेंगे। इसके बाद क्रमशः धीरे-धीरे हल्की, मध्यम, गहरी और अति गहरी तान वाली रंगतों का प्रयोग करेंगे।

प्रथम चरण

जल रंगों के चित्रण में एक बात अवश्य ध्यान रखने वाली होती है कि जहाँ पर हमें ज्यादा प्रकाश दिखाना हो, वहाँ हम ड्राइंग शीट को सफेद छोड़ देते हैं। इसी प्रकार आँखों की पुतली के साथ

वाले सफेद हिस्से पर भी कोई रंग नहीं लगाते हैं। वहाँ ड्राइंग शीट सफेद छोड़ देते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि जल रंगों में हम सफेद रंग का प्रयोग नहीं करते हैं, और न ही रंगों की हल्की तान बनाने के लिए किसी रंग में सफेद रंग को मिलाते हैं। क्योंकि सफेद रंग को जल रंग में मिलाया जाता है तो वह तान अपारदर्शी हो जाती है और उसमें भावहीनता का प्रभाव आ जाता है।

चित्र 3.10

जल रंग के चित्रण का एक उत्कृष्ट उदाहरण चित्र 3.10 दर्शाया गया है। यह चित्र एक युवा श्रमिक का है, इसके चेहरे पर मूँछे एवं दाढ़ी है और बाल बिखरे हुए हैं। चेहरे पर तान के माध्यम से दृढता एवं कठोरता का भाव परिलक्षित होता है। इस चित्र में हमने अत्यधिक प्रकाश दिखाने के लिए चित्र तल के सफेद पट का उपयोग किया है।

द्वितीय चरण

चित्र 3.10(क) जलरंग का एक अन्य उदाहरण है जिसमें चित्र, कागज के स्थान पर सिल्क के कपड़े पर बनाया गया है। यह चित्र एक नवयुवक का है।

चित्र 3.10(क)

अभ्यास 3

तैलरंग से मुखाकृति चित्रण

तैल रंग में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस विधि में हम गहरी तानों से हल्की तान की तरफ जाते हैं अर्थात् हम अपने चित्र पटल पर सर्वप्रथम मुखाकृति की छाया वाले भाग पर गहरी तानों को लगाते हैं। इसके बाद मध्यम और हल्की तान का प्रयोग करते हैं और सबसे अंत में जहाँ-जहाँ अति प्रकाश दिखाना हो वहाँ-वहाँ सफेद अथवा सफेद रंग में बहुत हल्के, पीला रंग मिलाकर तान का प्रयोग करते हैं। जैसे कि चित्र 3.11 में मशहूर चित्रकार विन्सेंट वैन्गाग्व् ने अपने स्वयं के व्यक्ति चित्र को तैल माध्यम से पीले रंग की विभिन्न तानों के प्रयोग द्वारा अपना चित्र बनाया है। इस चित्र की पृष्ठभूमि गहरी है जो काले, नीले, हरे रंग से बनाई गई है। इस चित्र में भाव बहुत ही सुन्दर दिखाई दे रहा है। इस चित्र में उनकी मन: स्थिति आँखों के माध्यम से स्पष्ट दिखाई देती है।

चित्र 3.11

आपने क्या सीखा

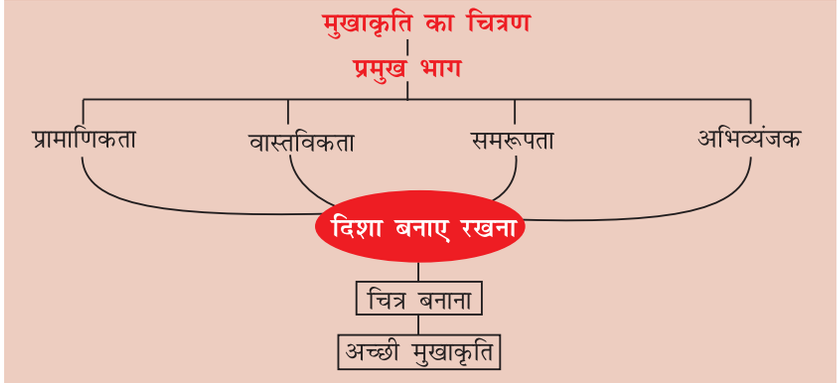

पाठांत प्रश्न

1. पाठ में दी गई विधि के अनुसार आँख, नाक, कान, होंठ इत्यादि का विभिन्न दशाओं में चित्रण करें।
2. किसी भी एक मुखाकृति का रेखांकन करें।
3. किसी भी एक मुखाकृति को पेंसिल शेंडिग के माध्यम से छाया-प्रकाश दिखाते हुए चित्र पूर्ण करें।
4. अपने परिवार के किसी सदस्य अथवा दोस्त का व्यक्ति चित्र बनाएँ।
5. रंगीन पेंसिल के माध्यम से किसी भी महापुरुष का व्यक्ति चित्र बनाएँ।

शब्दकोश

यथार्थवादी	वास्तविक
एक चश्म चेहरा	साइड पोज, जिसमें केवल एक आँख दिखती है।

मॉड्यूल - 2

विभिन्न संरचना, पोस्टर और बनावट का निर्माण

4. संयोजन के रचनात्मक रूप
5. पोस्टर निर्माण
6. बनावट का निर्माण और छपाई

4

संयोजन के रचनात्मक रूप

किसी भी चित्र में, विषय के अनुसार चित्र संयोजन का एक विशेष महत्व होता है। विभिन्न आकारों, रंगों, रेखाओं और कलाकार की कल्पना के एकत्र होने से जो चित्र रचना होती है, उसे चित्र संयोजन कहते हैं। चित्र के संयोजन में मानव आकृति, वस्तु चित्रण, ज्यामितीय आकार और प्रकृति चित्रण आदि का समावेश किया जा सकता है।

प्रकृति जैसी दिखाई देती है, कलाकार उसे अपनी कला में वैसा नहीं दर्शाता, वह प्रकृति का वही रूप चित्रित करता है जैसा वह देखता है और महसूस करता है। चित्रकार कोई फोटोग्राफर नहीं है, जो प्रकृति का यथावत रूपांकन करे। चित्रकार दृश्य को देखकर अपने मन में आये भावों को कागज पर चित्र रूप में उभारता है। कलाकार दृश्य में स्वयं को महसूस कर प्रायः उससे एकात्म होकर उसे देखता और सिरजता है। वह अपने कल्पना संसार को अपनी तूलिका के माध्यम से चित्र रूप में बनाता है।

चित्र दो प्रकार के होते हैं - 1. सत्य अनुकृति 2. काल्पनिक

सत्य अनुकृति चित्र ऐसे होते हैं, जिनको किसी दृश्य या वस्तु को प्रत्यक्ष देखकर उनका चित्र बना दिया जाता है। **काल्पनिक चित्र** के लिए लक्षण (गुण/विशेषता) और प्रमाण (उचित बोध, परिमाण, संरचना) का ज्ञान चाहिए, जैसे भिखारी, राजा, दुल्हन, भगवान, किसान आदि के भिन्न-भिन्न प्रमाण और लक्षणों को मस्तिष्क में विचार करने के बाद कलाकार चित्र बनाता है। उन्हीं लक्षणों के आधार पर दर्शक चित्र में राजा और भिखारी के बीच अन्तर जान पाता है। उपर्युक्त दोनों ही प्रकार के चित्र बनाने में भारतीय कला के छह अंगों का विशेष महत्व है, जो निम्नलिखित हैं :

1. रूपभेद अथवा दृष्टि का ज्ञान
2. प्रमाण अथवा ठीक अनुपात, नाप तथा बनावट
3. भाव अथवा आकृतियों में मन का भाव
4. लावण्ययोजना अथवा कलात्मकता तथा सौन्दर्य का समावेश

5. सादृश्य अथवा देखे हुए रूप के समान आकृति
6. वर्णिकाभंग अथवा रंगों तथा तूलिका के प्रयोग में कलात्मकता

विषय के अनुकूल उसका रूप प्रदर्शित करना कलाकार की सफलता की कसौटी होती है, जैसे देवता, नाग, यक्ष एवं अन्य महान विभूतियों के चित्र सौम्य, शान्त, करुणा की भावना को उत्पन्न करने वाला हो और राक्षस में भीषणता प्रकट करने वाला। विरह से त्रस्त महिला का शरीर दुर्बल, इधर-उधर बिखरा, और वस्त्र एवं शृंगार अव्यवस्थित से हों। कारीगर और मजदूर के हाथ में अपने-अपने औजार हों। इसी प्रकार चित्रण करते समय सामाजिक तथा भौगोलिक पृष्ठभूमि दर्शाया जाता है तथा वातावरण को भी प्रकट किया जाता है। जैसे दिन, प्रातः, संध्या, रात्री और चांदनी आदि का प्रभाव चित्रों को अनुकूल बनाता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- चित्र संयोजन के बारे में वर्णन कर सकेंगे;
- दृश्य चित्र, समुद्र चित्रण और ज्यामितीय सजावट प्रस्तुत कर सकेंगे;
- चित्र संयोजन की मुख्य बातों की पहचान कर सकेंगे;
- दृश्यदर्शी (व्यू फाइंडर) को तैयार करना, उसके महत्व तथा प्रयोग को प्रस्तुत कर सकेंगे;
- भारतीय कला के छह अंगों के बारे में उल्लेख कर सकेंगे।

4.1 महत्वपूर्ण तत्व

(क) विषय

(ख) आकार/प्रारूप

(ग) मुख्य केंद्र बिन्दु

(घ) चित्र संयोजन में प्रयोग होने वाली आकृतियाँ

(ङ) आकृतियों का स्थापन

(च) संतुलन

चित्र संयोजन के विभिन्न चरण

1. बनाए जाने वाले दृश्य या विषय-वस्तु की पूर्व कल्पना करना अर्थात् चित्र बनाने से पूर्व मन में ही चित्र को तैयार कर लेना।
2. चित्र फलक एवं माध्यम का चुनाव करना अर्थात् चित्र को किस प्रकार की सतह बोर्ड, कैनवास, कागज आदि पर बनाया जाये और किन रंगों में चित्र अधिक प्रभावशाली लगेगा इसका चयन करना। जैसे- जल रंग, तैल रंग या सूखे रंग आदि।

3. बनाए जाने वाले चित्र के विषय पर विचार करना एवं प्रारूप तैयार करना।
4. स्केच - चित्र बनाने से पूर्व एक रफ स्केच तैयार करना।
5. स्पष्ट रेखांकन - जब स्केच मन को जँचने लगे तब उस स्केच का स्पष्ट रेखांकन करना।

चित्र 4.1

चित्र 4.2

6. रंगांकन- रंग करने से पूर्व मन में विचार कर लें कि चित्र में कौन-कौन से रंगों का प्रयोग करना है।

7. रेखांकन- रंग भरने के उपरान्त बाह्य रेखा का अंकन करना।

8. फिनीशिंग- आउटलाइन करने के बाद चित्र को अंतिम रूप देना।

हल्की लाइन से चित्र बनाने के बाद चित्रकार चित्र की जाँच करे, जिससे कि वह आगे बढ़ने से पहले चित्र की त्रुटियों को दूर कर सके। इससे शिक्षार्थियों को पेपर पर रबर का प्रयोग कम करना पड़ेगा और कागज पर किसी प्रकार का रूँआ, धब्बा नहीं आएगा यानी कागज खराब नहीं होगा।

4.2 पूरा चित्र

चित्र को कब पूरा माना जाए?

एक चित्र को तब पूरा माना जाता है, जब उसमें आस-पास के क्षेत्र से भी कुछ संबंधित सहायक वस्तुओं को बनाया गया हो, जैसे अध्ययन करते हुए बच्चे के चित्र में साधारण चित्रकार पढ़ता हुआ छात्र बनाकर चित्र को पूरा समझ लेता है परन्तु एक अनुभवी चित्रकार, चित्र के आस-पास माहौल बनाता है जैसे पढ़ते हुए बच्चे के पास मेज, कुर्सी, किताबों की अलमारी, आदि को भी चित्रित करता है।

अधूरा चित्र

पूर्ण चित्र

चित्र 4.3

अभ्यास 1

शिक्षार्थियों, आप तत्काल स्केचिंग करके अपने लिए चित्र संयोजन कर सकते हैं। जैसे घर में कार्य करती हुई महिला, पालतू पशु को चारा खिलाता हुआ ग्वाला, रेलवे स्टेशन पर चाय की

दुकान, सब्जी वाला, पार्क में खेलते बच्चे आदि जहाँ भी इस प्रकार के दृश्य दिखाई दे, आपको स्केच आरंभ कर देनी चाहिए।

चित्र 4.4: सोचती हुई महिला

चित्र 4.5: पोछा लगाती महिला

चित्र 4.6: कपड़े धोती महिला

चित्र 4.7: आराम करती महिला एवं शिशु

ये सभी चित्र हल्के पेन्सिल लाइन में बनाए गए हैं इन चित्रों को चित्र स्थल पर जाकर बनाया गया है। शिक्षार्थियों आपको भी इसी प्रकार प्रतिदिन चित्र स्थल पर जाकर चित्र बनाने का अभ्यास करना चाहिए।

अभ्यास 2

प्रकृति चित्रण बनाइए

कोई भी प्राकृतिक दृश्य जैसे गांव, रेलवे-स्टेशन, पहाड़ों का दृश्य, नदी का किनारा आदि के दृश्य को हम प्राकृतिक चित्रण के रूप में प्रयोग कर सकते हैं।

प्रथम चरण

झोपड़ी, पेड़, पहाड, नाव, सड़क, रेलगाड़ी इत्यादि।

चित्र 4.8: पेंसिल से बना चित्र

ऊपर की सभी चीजों से मिलकर बने प्राकृतिक चित्र का उदाहरण दिया गया है।

द्वितीय चरण

इस चरण में, चित्र को जल रंग या किसी अन्य रंग से रंगा जाता है। रंग की शुरुआत हल्की टोन से होती है।

चित्र 4.8(क)

तृतीय चरण

इस अंतिम चरण में रंगों के टोन को तीनों आयामी गुणों को उजागर करना चाहिए। अंत में काले रंग के साथ रूपरेखा से चित्र को पूरा करें।

चित्र 4.8(ख)

अभ्यास 3

एक गाँव का दृश्य बनाएँ

गाँव के विभिन्न प्रकार के दृश्य हैं। उनमें से एक को चुनें और अपने कागज में बनाइए और हल्के रंग से शुरू करें। चित्र बनाने में आगे याद रखें कि एक या दो मानव आकृतियाँ और पशु आकृतियाँ होनी चाहिए। हमेशा हल्के दबाव के साथ रेखा की शुरुआत करें, इसलिए 2B पेंसिल का इस्तेमाल करें। एक उदाहरण नीचे दिया गया है :

प्रथम चरण

कागज पर HB पेंसिल से चित्र बनाना शुरू करें। चित्र बनाते समय चित्रण की कोमलता का ध्यान रखें। फिर रेखा चित्र को पूरा करने के लिए किसी भी कठोर पेंसिल का उपयोग करें।

चित्र 4.9

द्वितीय चरण

रचना में हल्के रंगों का प्रयोग करें। रंग लगाते समय इस बात का ध्यान रखें कि रंग आपस में न मिलें।

चित्र 4.9(क)

तृतीय चरण

इस अंतिम चरण में, चित्र में गहराई अनुभव के लिए रंगों में गहरे रंग क प्रयोग करें। काले रंग के रूपरेखा के साथ काम पूरा करें।

चित्र 4.9(ख)

4.3 प्रकृति-चित्रण का चुनाव कैसे करें?

प्रकृति चित्रण करते समय उचित दृश्य का चुनाव करना होता है। सब कुछ जो दिखाई देता है, उस सबको एक सुन्दर पेन्टिग की तरह नहीं बनाया जा सकता। क्योंकि पेपर पर चित्र बनाने की अपनी एक सीमा होती है। जिस प्रकार कैमरे से फोटो खींचते समय एक दृश्य का निर्धारण किया जाता है, उसी तरह प्रकृति-चित्रण करने से पूर्व दृश्य का निर्धारण किया जाता है।

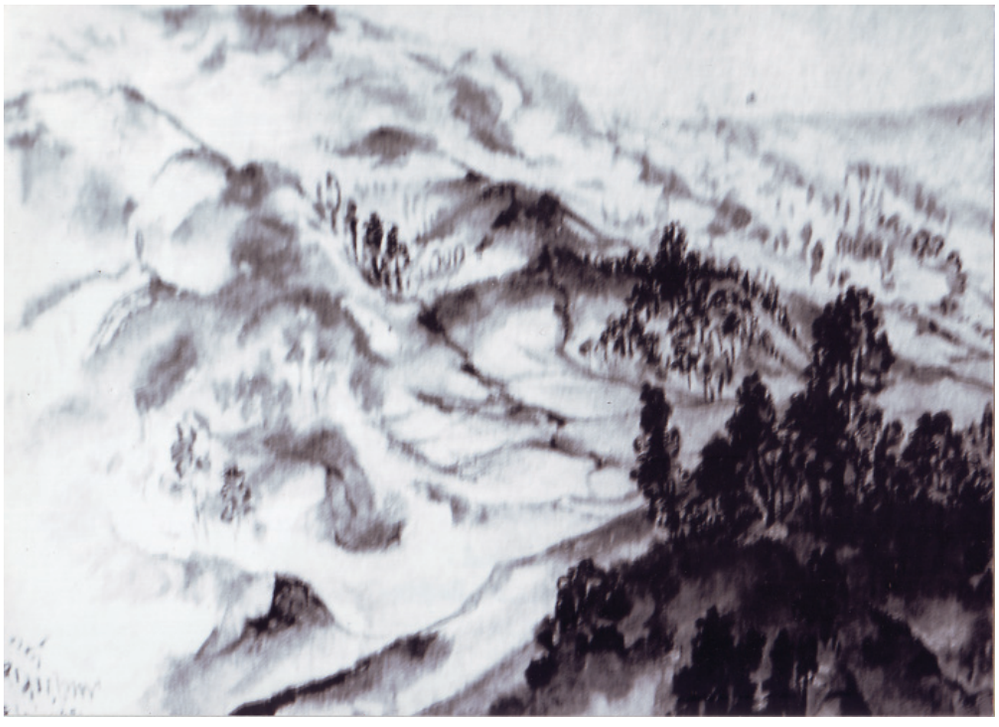

चित्र 4.10

ऊपरी बनी वस्तुओं द्वारा प्राकृतिक चित्र संयोजन

शीर्षक प्रकृति चित्रण, गांव का दृश्य

आकार 9.5 × 6.2

चित्रकार नन्दलाल बोस

माध्यम जल रंग, कागज

4.4 खोजक/दृश्यदर्शी

हम उस दृश्य के एक हिस्से का चयन करने के लिए एक दृश्यदर्शी का उपयोग करेंगे जिसे हम चित्रित करना चाहते हैं। काले पेस्टल कागज की 6×6 इंच की कागज लें। इसके बीच में 2 ×2 इंच का वर्ग काट लें। बीच में छेद वाली यह शीट आपका खोजक है इसे एक आँख से पकड़ें, दूसरी आँख बंद करें और अपना वांछित दृश्य देखें।

यहाँ खोजक के जरिए एक तस्वीर देखी जा रही है।

चित्र 4.11

4.5 ज्यामितीय अलंकरण

ज्यामितीय अलंकरण विभिन्न आकृतियों और आकार का उपयोग करता है– त्रिकोणीय, वर्गाकार, आयातकार, वृत्ताकार, अण्डकार आदि।

रंगीन कागजों के माध्यम से ज्यामितीय अलंकरण

किसी भी रंग के चिकने कागज की एक ज्यामितीय डिजाइन शीट लीजिए। इसमें से विभिन्न ज्यामितीय आकृतियों को काटें। इन आकृतियों की एक श्वेत पत्र पर रखें और एक रचना बनाएँ।

जब आप वांछित रचना प्राप्त कर लेते हैं; तो आप अलंकरण तैयार करने के लिए टुकड़ों को एक साथ चिपका सकते हैं। इसी तरह आप कागज पर विभिन्न आकृतियाँ बना सकते है और उनमें रंग भरकर सुंदर चित्रण कर सकते हैं। वस्त्रों, साड़ियों, शॉल, चादरों, दीवार पैनलों आदि पर अलंकरण का उपयोग किया जा सकता है।

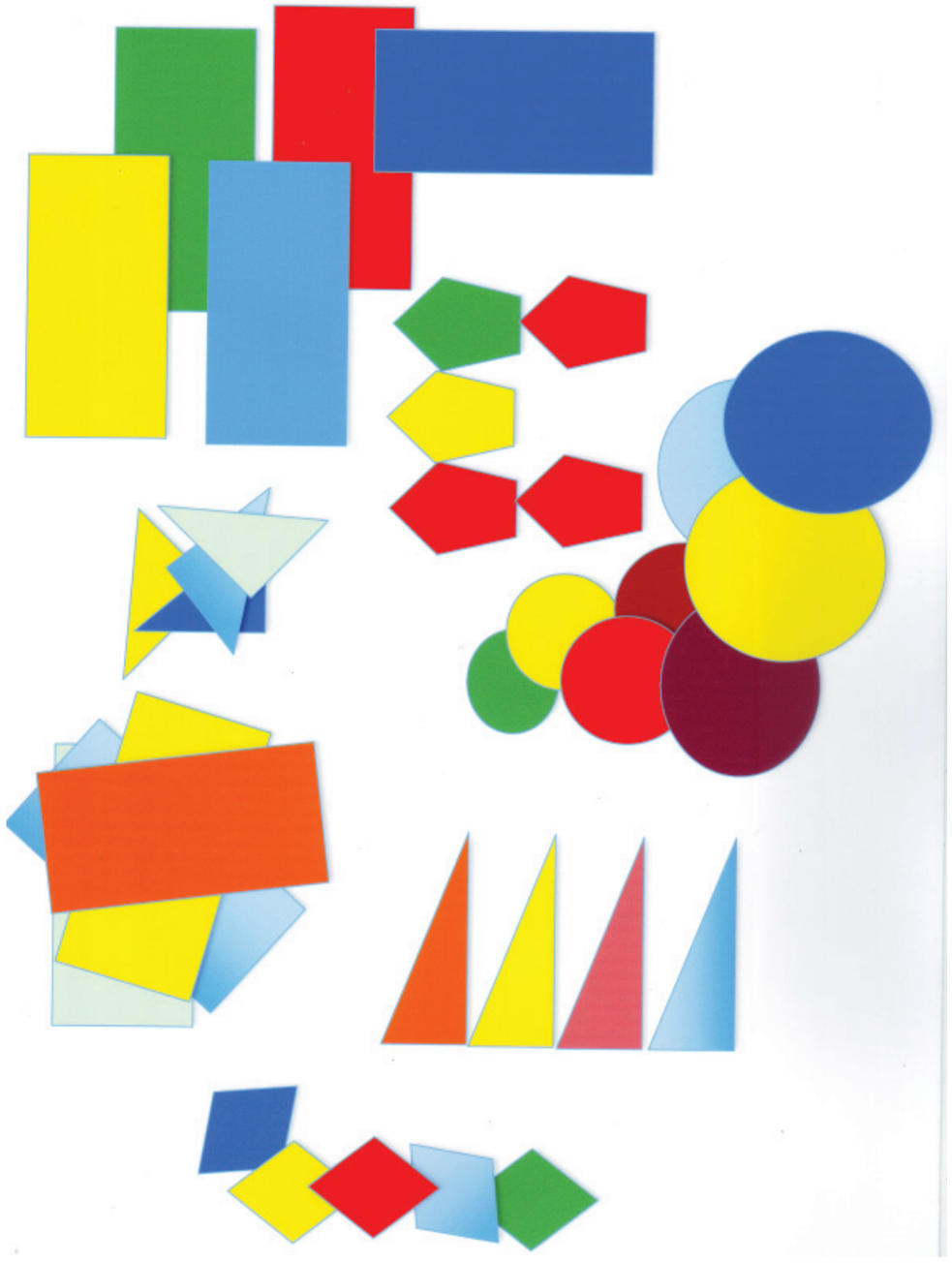

चित्र 4.12

आपने क्या सीखा

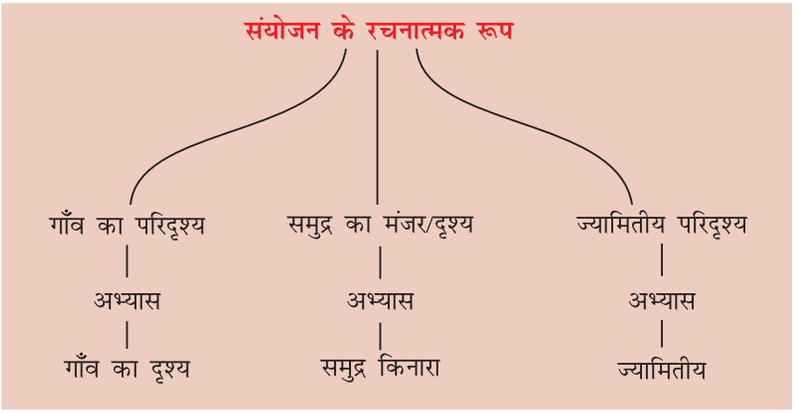

पाठांत प्रश्न

1. अपने आस-पास के दृश्य को देखकर 4×6 के आकार में दो चित्र बनाएं।
2. साड़ी के बार्डर में ज्यामितीय डिजाइन बनाएँ।
3. प्रकृति-चित्रण में बरगद का पेड़, झोपड़ी और झरना अंकन करें।
4. छह इंच के गोलाकार सफेद चार्ट पेपर पर रंगीन ग्लॉसी पेपर द्वारा ज्यामितीय डिजाइन तैयार करें।
5. कैमरा-व्यू का प्रयोग करते हुए एक प्राकृतिक दृश्य ए-4 माप के पेपर पर बनाएँ।

शब्दकोश

सिरजना	रचना करना
व्यवस्थित	संतुलित करना
अनिवार्य	जरूरी/आवश्यक
आकर्षित	मन को भाना
व्यू-फाइन्डर	दृश्य का चुनाव करने हेतु सहायक उपकरण

5

पोस्टर निर्माण

पोस्टर सूचना देनेवाला एक कागज है, जो दीवार या सतह पर लगाया जाता है। पोस्टर से आशय है ध्यान आकर्षित करने वाला। पोस्टर का उपयोग बहुत से उद्देश्यों के लिए किया जाता है। पोस्टर विज्ञापनदाताओं का नियमित साधन है। प्रचारक, प्रदर्शनकारी तथा अन्य समूह भी यह प्रयत्न करते हैं कि जनता के साथ संवाद किया जा सके। सन् 1880 में यह तकनीक समस्त यूरोप में फैल चुकी थी। इस काल में कुछ गिने चुने कलाकार ही पोस्टर का निर्माण करते थे। इनमें सर्वश्रेष्ठ थे, हैनरी-द-टालस-लाउट्रेसी और ज्यूल्स चिरेट इन्हें प्रयोग तख्तियों के विज्ञापन का जनक माना गया। यह पेंसिल चित्रकार थे तथा दृश्य सजाने वाले भी जिन्होंने 1886 में पेरिस में एक छोटा सा अमश्मुद्रण (लिथोग्राफी) कार्यालय स्थापित किया। चिरेट ने एक नई तकनीक विकसित की। जो विज्ञापनदाताओं की आवश्यकताओं के अधिक अनुकूल थी। इन्होंने और रंगों को जोड़ा जिससे संयोजन के साथ मुद्रण-कला को प्रस्तुत करने से पोस्टर और भी अधिक प्रभावी हो गए।

पोस्टर जल्द ही पेरिस की सड़क से कला भवन में स्थापित हो गए। उनकी वाणिज्यिक सफलता से कुछ कलाकारों की बड़ी माँग हुई। सन् 1884 में पेरिस में एक बहुत बड़ी प्रदर्शनी आयोजित हुई।

सन् 1890 में पोस्टर कला का आयोजन बड़े पैमाने पर यूरोप के कुछ अन्य भागों में हुआ। विज्ञापन में सब कुछ होता था- साइकिल से लेकर सांड़ युद्ध तक। 19वीं सदी के अंत के दौरान यह युग बैले यूरोप युग नाम से जाना जाने लगा। 1895 तथा 1900 में पोस्टर कला बहुत ही गंभीर कला के रूप में निखर कर आई। चिरेट ने The maiter de L'affiche (पोस्टर बनाने में प्रवीण) की श्रृंखला बनाई। इसे न केवल व्यावसायिक सफलता मिली बल्कि यह अब एक प्रमुख ऐतिहासिक प्रकाशन के रूप में भी देखा जाता है। एफोंसे मुचा तथा यूगेनी ग्रेसेट भी इस युग के प्रभावशाली पोस्टर बनानेवाले थे।

भारत में राष्ट्रीय आंदोलन (विद्रोह) के दौरान चित्रों का उपयोग पोस्टर के रूप में हुआ था। भारतीय लोगों में उनकी सांस्कृतिक विरासत की जागरुकता को बनाए रखने के लिए कलाकारों का पुनर्जागरणवादी समूह बनाया गया। जैसे: अबनीन्द्रनाथ टैगोर, नंदलाल बोस, विनोद बिहारी मुखर्जी इत्यादि कलाकारों का मुख्य योगदान रहा है। उदाहरणार्थ, नंदलाल बोस ने कुछ चित्र बनाए जिनका

उपयोग हरीपुरा कांग्रेस (महासम्मेलन) सत्र के पोस्टर के लिए किया गया। पोस्टर कर उपयोग हिंदी फिल्मी जगत में फिल्मों को लोकप्रिय बनाने के लिए भी किया गया। बड़े पोस्टर उल्लेखनीय चित्रकार एम.एफ हुसैन बनाते थे।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के पश्चात् आप :

- पोस्टर की रूपरेखा बनाने के लिए नवीन रचनात्मक अवधारणाएँ प्रस्तुत कर सकेंगे;
- विचार अथवा अवधारणा को ग्राफिक के रूप में प्रस्तुत कर सकेंगे;
- रूपों तथा शब्दों से दिए गए स्थान को डिजाइन कर सकेंगे;
- एक बहुत ही आकर्षित रंगों का संयोजन तथा उचित केलीग्राफी कर सकेंगे;
- सुलेख/कैलीग्राफी के माध्यम से विचारों तथा संकल्पनाओं का संप्रेषण कर सकेंगे।

5.1 उपयोग हेतु आवश्यक सामग्री

1. चित्रकारी बोर्ड तथा पिन।
2. चित्रकारी हेतु कागज़ (कार्ट्रिज, खड़िया, चार्ट)
3. पेंसिल - एच.बी., 2बी., 4बी.
4. रबर
5. पोस्टर रंग
6. तूलिका (दो समतल तथा गोलाकार भिन्न मोटाई की)
7. पैमाना
8. मार्कर।

5.2 पोस्टर निर्माण कैसे करते हैं

रंग, डिजाइन, अक्षर और आकार को कागज पर उतार कर संदेश को संप्रेषित करने, संकल्पनाओं को विज्ञापित करने तथा जनता की किसी समस्या को संवेदनशील बनाने में पोस्टर एक आकर्षक रूप है।

हम अपने जीवन में बहुत से पोस्टर देखते हैं। जैसे- बस स्टॉप, माल, बाजार, स्टेशनों, सड़क के किनारे, दीवारों पर, प्रकाश स्तम्भ सार्वजनिक स्थानों पर देखे जा सकते हैं। पोस्टर का लक्ष्य ही जनता का ध्यान आकर्षित करना है। जो भी हम संप्रेषित करना चाहते हैं, उसका प्रभाव पड़ता है। पोस्टर के कुछ निम्नलिखित गुण हैं :

- रचनात्मक अवधारणा
- चटक रंग तथा रंगों का प्रतीकात्मक उपयोग
- आकर्षक शीर्षक
- जहाँ आवश्यक हो तुकबन्दी पूर्ण उप शीर्षक
- स्पष्ट आकार
- आकर्षक रूपरेखा।

पोस्टर निर्माण से भारत में ऐसी बहुत सी समस्याओं का हल निकल रहा है। जिनसे देश जूझ रहा है। रंगीन तथा नए ढंग के पोस्टर महत्वपूर्ण कारणों को दर्शाते हैं। ये पोस्टर समकालीन समस्त मुद्दों पर युवा तथा परिपक्व मस्तिष्क के लिए एक अनूठा और शक्तिशाली परिप्रेक्ष्य प्रस्तावित करते हैं।

सही जानकारी और आकर्षक रूपरेखा के माध्यम से पोस्टर प्रभाव को बनाए रखने में सहायक होते हैं। इस प्रकार समाज के विकास में योगदान देते हैं तथा बेहतर तरीके से संकट से निपटने के लिए सक्रिय जनजागरण अभियान में भी योगदान देते हैं।

5.3 पोस्टर निर्माण हेतु उपयोग किए जानेवाले महत्वपूर्ण तत्व

पोस्टर निर्माण में कला तथा साहित्य के समान सूक्ष्मदर्शिता की आवश्यकता है, क्योंकि जब आप इसकी रूपरेखा बनाएंगे तो इसके साथ उपयुक्त शीर्षक तथा उप शीर्षक भी देंगे जो और भी मनोरंजक, मोहित करने वाले हों तथा प्रत्यक्ष हों। पोस्टर में रंग न बहुत अधिक चटकीले हो न बहुत अधिक हल्के हों। संतुलन अत्यंत महत्वपूर्ण कसौटी है। इनके बीच में संतुलन होनी चाहिए:

- रंग तथा रूपरेखा
- रूप तथा अक्षर (सुलेखन)
- शीर्षक/उप शीर्षक
- आवृत स्थान तथा निष्क्रिय स्थान

इस पाठ के अंतर्गत मनुष्य जीवन से संबंधित कुछ आम महत्वपूर्ण विषय दिखाएँ जाएँगे जिससे शिक्षार्थी सीख सकेंगे :

- वैचारिकता
- देखना
- पुनः प्रस्तुत करना
- चित्रित करना
- रंग
- अक्षर तथा पोस्टर हेतु सुलेख

5.3.1 एक पोस्टर का नक्शा तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण बिंदु :

- सबसे पहले हमारे चारों ओर विचार प्रक्रिया घूमती है।
- इस विषय के बारे में हम समस्त प्रासंगिक जानकारी एकत्रित करते हैं।
- सभी स्रोतों से जानकारी एकत्रित करना।
- हमारे पास पर्याप्त जानकारी हो जाने के पश्चात, हमें उन विषयों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो इस विषय हेतु अधिक लोकप्रिय हैं।
- इन तथ्यों को रूप, रंग तथा शब्दों के साथ व्यक्त करना हमारा अगला कदम होगा।
- उन रूपों का चयन करें जो इस शीर्षक के लिए उपयुक्त हों।
- इस विषय के दो अथवा तीन लेआउट निर्माण के लिए आपको इस प्रक्रिया की आवश्यकता होगी।
- शीर्षक के लिए भिन्न-भिन्न रंगों के मेल में इस रूपों का प्रयोग करें।
- उचित रूपरेखा चुनने के पश्चात् आकृति के अनुरूप चित्रकारी करना शुरू करें।
- रंग भरें।
- विभिन्न रंगों के मेल के साथ ऐसा ही नक्शा बनायें।
- सबसे अच्छा चुनकर पोस्टर का निर्माण करें।
- न तो लिखावट को रूपरेखा पर भारी पड़ना चाहिए और न ही रूपरेखा को लिखावट।

अभ्यास 1

वन्य जीवों की सुरक्षा

आपको समझाने के लिए इस पोस्टर के निर्माण की प्रक्रिया क्रमशः समझाई गई है।

सबसे महत्वपूर्ण विचार यह है कि आम आदमी का ध्यान इस ओर आकर्षित किया जाये कि वन्य जीव किस प्रकार से शिकारियों द्वारा दी जाने वाली तकलीफों का सामना कर रहे हैं। इसलिए इस नक्शे में मृत पशु की रूपरेखा बनाने हेतु अधिकतम स्थान दिया जाएगा।

पृष्ठभूमि के लिए कम ही स्थान चाहिए, जिससे कि उसमें सपाट गहरा हरा रंग भरा जा सके (जंगल के प्रतीक हेतु)। सीमांत पर छोटे पेड़ बनाये जाएँगे जो प्रकृति तथा जंगल का प्रतीक होंगे। सीमांत के आधार को लाल रखा गया है जो रक्त या हत्या का प्रतीक बनेगा। वृक्षों को नीला बनाया गया है, फर्क दिखाने के लिए और अभिरुचि हेतु। शीर्षक 'वन्य जीवों को मारना बंद करो' तथा 'शिकारियों से सुरक्षा करो', ये भी नीले रंग से बनाया जाएगा - संतुलन बनाने के लिए। हाथी को हल्के रंग से बनाया जाएगा, गहरे पृष्ठभूमि के साथ फर्क दिखाने के लिए।

वन्य जीवों की सुरक्षा हेतु पोस्टर निर्माण विधि

प्रथम चरण

एक आयताकार डिब्बा बनाएं। डिब्बे में हाथी बनाएँ (चित्र 5.1 देखें)।

द्वितीय चरण

एक बंदूक बनायें (शीर्षक तथा उपशीर्षक के लिए स्थान छोड़ें) (चित्र 5.1(क) देखें)।

तृतीय चरण

रंग करना शुरू करें (चित्र 5.1(ख) देखें)। पशु की पृष्ठभूमि में पीला रंग करें। दूसरे स्थान में भी रंग भरें जब पहला रंग सूख जाए तो हाथी में भूरा (ग्रे) रंग भरें और बंदूक में बादामी (ब्राउन) रंग भरें तथा शीर्षक लिखें।

चौथा चरण

आपका पोस्टर तैयार है। (चित्र 5.1(ग) देखें)।

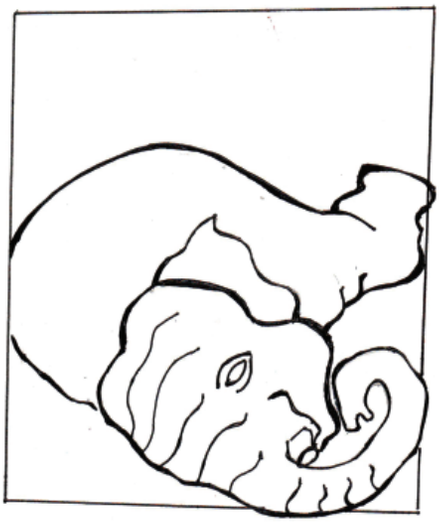

चित्र 5.1

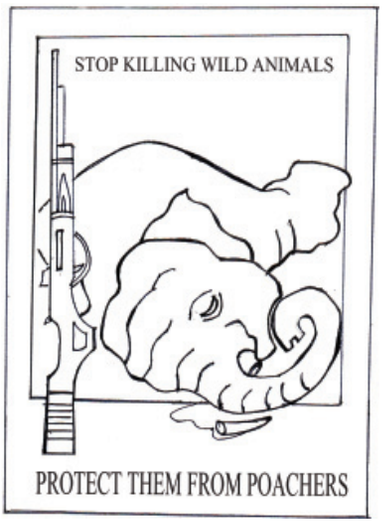

चित्र 5.1(क)

चित्र 5.1(ख)

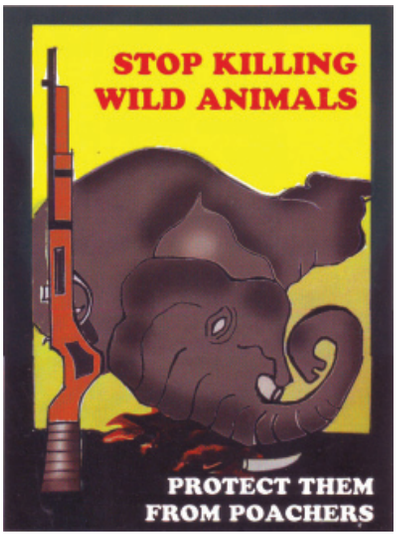

चित्र 5.1(ग)

अभ्यास 2

वनों की कटाई

पेड़ जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। यदि पेड़ नहीं होंगे तो जीवन भी नहीं होगा, बावजूद इसके हम अपने स्वार्थपूर्ण लोभ के लिए पेड़ों और जंगलों को काट देते हैं। प्रकृति इसलिए पूर्ण लगती है कि यहाँ जीवनदायी पेड़ हैं। यदि हम पेड़ों की कटाई करते हैं तो हमारा जीवन भी अल्पकालिक होगा। इसमें कोई दो राय नहीं है।

यहाँ पेड़ एक बच्चे के रूप में चित्रित है, जिसे धरती माँ से अलग नहीं किया जा सकता। फल और चिड़ियों के घोसलों के रूप में पेड़ को दाता और जीवन आधार दिखाया गया है। लोगों से बार-बार यह कहने की बजाय कि पेड़ को मत काटो; पेड़ और धरती को माँ और बच्चे के प्यार के रूप में दिखाया गया है और शीर्षक दिया गया है। 'इन दोनों को हम अलग कैसे कर सकते हैं'? तैल रंगों और मार्कर का उपयोग किया गया है। (देखें चित्र 5.2)

वनों की कटाई हेतु पोस्टर निर्माणा विधि

प्रथम चरण

कागज पर एक पेड़ बनाएँ। बड़े पेड़ पर एक ग्लोब बनाएँ और पेड़ पर चिड़िया बनाएँ।

चित्र 5.2

द्वितीय चरण

लिखावट की जगह छोड़कर रंग भरे। पीले या गुलाबी जैसे हल्के रंगों से शुरूआत करें, बाह्य रेखा काले या गहरे रंगों से रंगें। अब आपका पोस्टर तैयार है। (चित्र 5.2क देखें)।

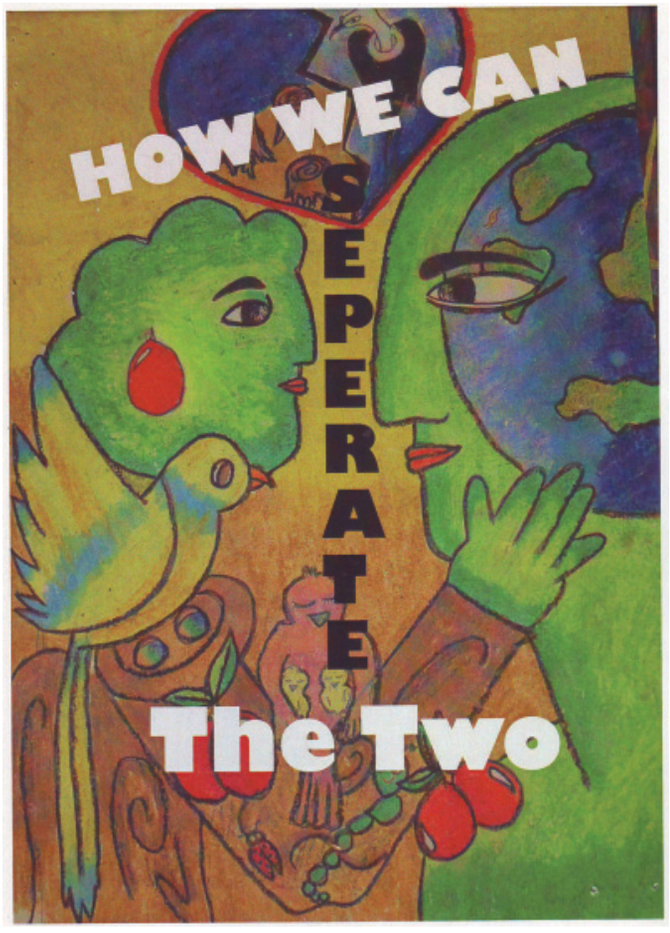

चित्र 5.2(क)

अभ्यास 3

सड़क सुरक्षा पोस्टर निर्माण विधि

सड़क दुर्घटना से बचाव के लिए सड़क सुरक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण कारक है।

यदि हम कुछ मूल सड़क सुरक्षा के उपायों जैसे: हेलमेट पहनना, सुरक्षा पेटी पहनना, ट्रैफिक नियमों का पालन करना, अपनी गति पर नियंत्रण रखना आदि नियमों को मन में बिठा लें तो बहुत सी दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है।

यह पोस्टर इस संकल्पना को दिमाग में रखते हुए विकसित किया गया है कि सड़क दुर्घटनाएं दुपहिया चालकों द्वारा हेलमेट न पहनने ओर बहुत तेज गति से वाहन चलाने से होती है। एक

युवा ईयर फोन पहन कर अपनी बाईक की गति दिखा रहा है, और इसके पीछे कुल्हाड़ी लिए एक कंकाल के रूप में मृत्यु को दिखाया गया है। अर्थ-संप्रेषण के अनुरूप शीर्षक और उपशीर्षक की लिखावट के लिए भिन्न आकार के अक्षरों का उपयोग हुआ है।

पोस्टर निर्माण की क्रमिक विधि

प्रथम चरण

मोटरसाइकिल चलाते हुए एक आदमी बनायें (फोटोग्राफ से भी संदर्भ ले सकते हैं अथवा चित्र बनाने में कठिन है, तो चित्र ट्रेस भी कर सकते हैं।

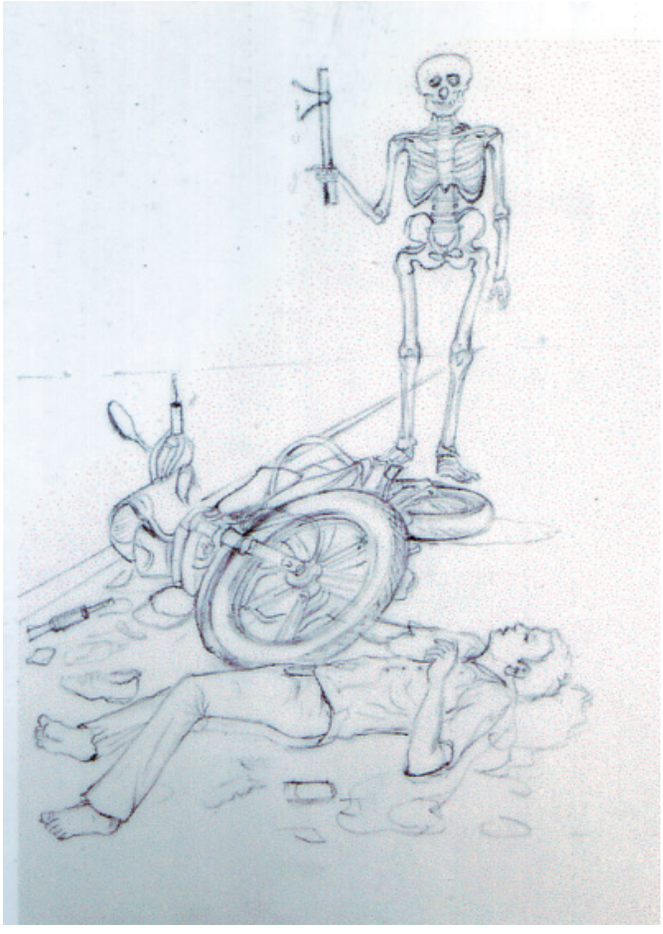

चित्र 5.3

द्वितीय चरण

पोस्टर के निचले भाग में पीला रंग भरें तथा ऊपरी भाग पर लाल रंग भरें। दोनों रंगों को बीच में मिला दें जैसा कि पोस्टर में दिखाया गया है।

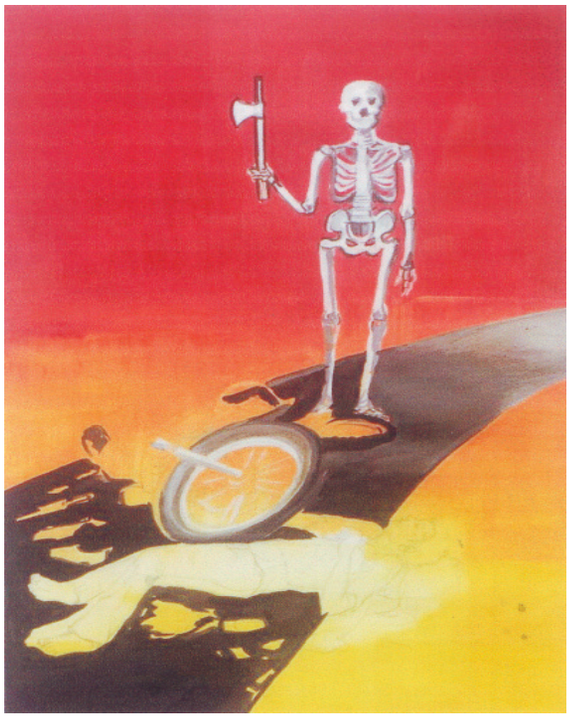

चित्र 5.3(क)

तृतीय चरण

मोटरसाइकिल तथा चालक में रंग भरें। हल्का रंग (शेड) करें तथा सफेद रंग से हाइलाइट करें। कंकाल बनाएँ तथा इसमें भूरे और सफेद रंग भरें। सड़क में काला रंग भरें।

चित्र 5.3(ख)

चौथा चरण

रूपरेखा को ध्यान में रखते हुए चुना हुआ शीर्षक लिखें। लिखाई स्पष्ट हो और अर्थ संप्रेषित करें। इस बात का ध्यान रखें कि लिखाई के लिए जगह छोड़नी है तदुनसार रूपरेखा बनानी है। आवश्यकतानुसार लिखावट रूपरेखा को आच्छादित कर सकते हैं। आपका पोस्टर तैयार है।

चित्र 5.3(ग)

कृपया ध्यान दें : आप चित्र को तभी खोज सकते हैं जब आवश्यक हो। एक मुक्तहस्त चित्रण हमेशा एक बेहतर विकल्प होता है।

आपने क्या सीखा

पोस्टर बनाना

- व्यावहारिक लागू कला का रूप
- प्रकृति का रचनात्मक और अनिवार्य एवं मजेदार रूप
- रूपों, फॉन्ट और रंगों के साथ अभ्यास
- प्रतीकात्मक
- आकर्षक
- कैप्शन बोल्ड, प्रतीकात्मक

पाठांत प्रश्न

1. एक ही रूपरेखा में रंग भरें। जब भी समय हो एक विषय पर आधारित रूपरेखा बनाएँ (विभिन्न रंगत में)। अपनी रूपरेखा में रंगों के प्रभाव को देखें।
2. पोस्टर बनाने की प्रक्रिया के कौन से तीन मुख्य लक्ष्य हैं?
3. एक आदर्श पोस्टर में कौन से छह (6) गुण होने चाहिए?
4. पोस्टर के लिए (रचनात्मक होना और ध्यान आकर्षित करना) इतना महत्वपूर्ण क्यों है?
5. पोस्टर बनाने की प्रक्रिया में संकल्पना इतना महत्वपूर्ण भाग क्यों है?
6. पोस्टर की रूपरेखा बनाने के काम में क्या संतुलन है?
7. पोस्टर में लिखने के दौरान आप कुर्सी डिजाइन के लिए कोई भी आकार तथा शीर्षक का प्रकार चुन सकते हैं। एक अच्छा तरीका यह भी है कि शब्दों को काटकर विभिन्न आकार में दूसरे कागज पर लगाएँ। इन शब्दों को व्यवस्थित रूप से दूसरे कागज पर लगाकर फिर रूपरेखा पर आकार के प्रभाव को देखें ।

शब्दकोश

रचनात्मक	आविष्कारशील तथा कल्पनाशील
प्रतीकात्मक	एक विचार जिसमें कुछ रेखांकन का प्रतिनिधित्व करते हैं।
स्पष्ट	इस पाठ की सामग्री में इसका मतलब है अक्षरों, रेखाओं या रंगों का गाढ़ा अथवा स्पष्ट प्रयोग।
फर्क	दो अलग-अलग रंग जो फर्क बनाते हैं।
यथार्थवादी	वास्तविक जीवन जैसा लगने वाली कला।

6

बनावट का निर्माण और छपाई

चित्रकला में पोत एवं छापा चित्रण तकनीक का एक महत्वपूर्ण स्थान है। पोत के बिना एक सादृश्यमय चित्र बनाना संभव नहीं है। किसी चित्र की अनेक अनुकृतियाँ कलाकार छापा चित्रण की विभिन्न तकनीकों द्वारा ही प्राप्त करता है। चित्रकला में पोत एवं छापा चित्रण में आधारभूत तत्व धरातलीय गुण होते हैं। जैसे- विभिन्न प्रकार के पोत से पेड़ की सतह का खुदरापन, पत्थर की कठोरता, संगमरमर का चिकनापन एवं लकड़ी के ब्लॉक के रेशों का धरातलीय गुण इत्यादि। छापा चित्रण तकनीक में हम धरातलीय गुण को मुद्रण प्रक्रिया द्वारा प्राप्त कर लेते है। जब हमें वस्तु के पोत का सादृश्यमय चित्रण करना होता है तो हम चित्रकला के अन्य तत्व रेखा, रूप, वर्ण, तान के माध्यम से पोत का सादृश्यमय चित्रण पेंसिल, रंग तथा ब्रश इत्यादि की सहयता से अपने चित्रतल जैसे- ड्राइंग शीट (कागज), कैनवास तथा कपड़े इत्यादि पर करते हैं। छापा पद्धति में विविध पोत प्राप्ति हेतु हम विभिन्न प्रकार के तकनीकी औजारों जैसे- लिनो कटिंग टूल्स, वुड कटिंग टूल्स, एचिंग एवं इंग्रेविंग टूल्स तथा स्क्रीन प्रिंटिंग एवं लीथोग्राफी छापा चित्रण पद्धति में प्रयुक्त होने वाले रासायनिक मिश्रण एवं टूल्स का उचित प्रयोग करके विभिन्न प्रकार के सादृश्यमय एवं आधुनिक शैली के छापा चित्रों का सृजन करते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के बाद आप :

- चित्रकला में पोत के महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार के पोत एवं उनकी सृजन प्रक्रिया को प्रस्तुत कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार के पोत को पहचान सकेंगे;
- आधुनिक कलाकारों ने पोत को अपने चित्रों में किस प्रकार से प्रयोग में लिया है, इसकी भी जानकारी प्राप्त कर उल्लेख कर सकेंगे;

- विभिन्न प्रकार की छापा चित्रण प्रणाली एवं तकनीकों का वर्णन कर सकेंगे;
- लकड़ी के ठप्पों, फल-सब्जियों एवं अंगूठा एवं अंगुलियों के छापों के द्वारा चित्रण कर सकेंगे।

6.1 आवश्यक सामग्री

- ड्रांइग बोर्ड
- ड्राइंग शीट
- कपड़ा (मुद्रण हेतु)
- रंग, जलरंग, तैल रंग, कपड़ा रंगने के रंग (डाई कलर)
- पेंसिल-एचबी, 2बी, 4बी, 6बी
- ब्रुश
- स्याही, स्याही रोलर
- पोत सृजन हेतु विभिन्न माध्यम, जैसे- कपड़ा, टूथब्रश, लोहे की जाली, टाट, खादी का कपड़ा इत्यादि। लकड़ी के ठप्पे, विभिन्न प्रकार के फल एवं सब्जियां, फूल-पत्ते इत्यादि।

6.2 पोत (टेक्सचर) का सृजन

पोत चित्रण का वह महत्वपूर्ण तत्व है, जिसके अभाव में एक सादृश्यपूर्ण चित्र का सृजन नहीं किया जा सकता। अन्तराल कला का महत्वपूर्ण अंग है। अन्तराल वह स्थान है जहाँ पर कलाकार रेखाओं के माध्यम से रूप का निर्माण करता है। यदि कलाकार रेखाओं के माध्यम से एक यथार्थवादी रूप का सृजन करता है एवं तान (टेक्सचर) व वर्ण के माध्यम से उसमें हूबहू सजीव रंगाकन करता है, तब भी यह चित्र पोत के अभाव में पूर्ण सादृश्यमय नहीं बन सकता। जैसे, यदि वह पेड़ का चित्र बनाता है और पेड़ के तने में जैसा दिखाई देता है वैसे ही वर्ण में तान का उपयोग करता है परन्तु पोत (टेक्सचर) का उपयोग नहीं करता है तो दर्शक, पेड़ का तना नीम का है, पीपल का है या बरगद का है यह नहीं पहचान पाएगा, जब तक कि चित्रित तने में सजीव पोत (टेक्सचर) का उपयोग नहीं किया जाएगा।

मुख्य रूप से पोत (टेक्सचर) तीन प्रकार के होते हैं:

6.2.1 प्राकृतिक पोत (टेक्सचर)

प्राकृतिक पोत वह होता जो हमें प्रकृति में देखने को मिलता है, जैसे पेड़ की छाल का खुरदापन, पत्थर का कठोरपन, संगमरमर का चिकनापन, लकड़ी के रेशे इत्यादि। जैसा कि चित्र 6.1 में दिखाया गया है।

चित्र 6.1

6.2.2 अनुकृत पोत (टेक्सचर)

अनुकृत पोत वह होता है जो हमें प्रकृति से प्राप्त तो होते हैं लेकिन कलाकार इन्हें द्वि-आयामी चित्रभूमि पर अनुकृत करता है। इस अनुकरण हेतु वह विभिन्न प्रकार की रेखाओं, छोटे-छोटे रूपों एवं रंग व तान के माध्यम से हूबहू वैसा ही चित्रित कर लेता है जैसा कि प्रकृति ने उस वस्तु विशेष में निरूपित किया है। जैसा कि चित्र 6.2 में दिखाया गया है।

चित्र 6.2

6.2.3 सृजित पोत (टेक्सचर)

सृजित पोत वह होता है, जो कलाकार अपने कला के उपकरणों से एवं विभिन्न प्रकार से उनका उपयोग करके नये-नये पोत का सृजन करता है। जैसे पानी में तैल रंग को तेल में मिलाकर पानी में फैलाते हैं तो उसमें विभिन्न प्रकार के सुन्दर-सुन्दर पोतों का निर्माण होता है। इसी प्रकार एक धागे को विभिन्न रंगों में डुबोकर जब दो ड्राइंग शीट के बीच में रखकर, दबाव देकर धागे को एक सिरे से खींचते हैं तो दोनो ड्राइंग शीट में बहुत ही सुन्दर पोत का सृजन होता है। इसी प्रकार से स्पंज अथवा टाट से, लोहे की जाली से, पेड़ की छाल से अथवा पत्तों पर रंग लगाकर विभिन्न प्रकार के पोत (टेक्सचर) का सृजन कर सकते हैं। जैसा कि चित्र 6.3 में दिखाया गया है।

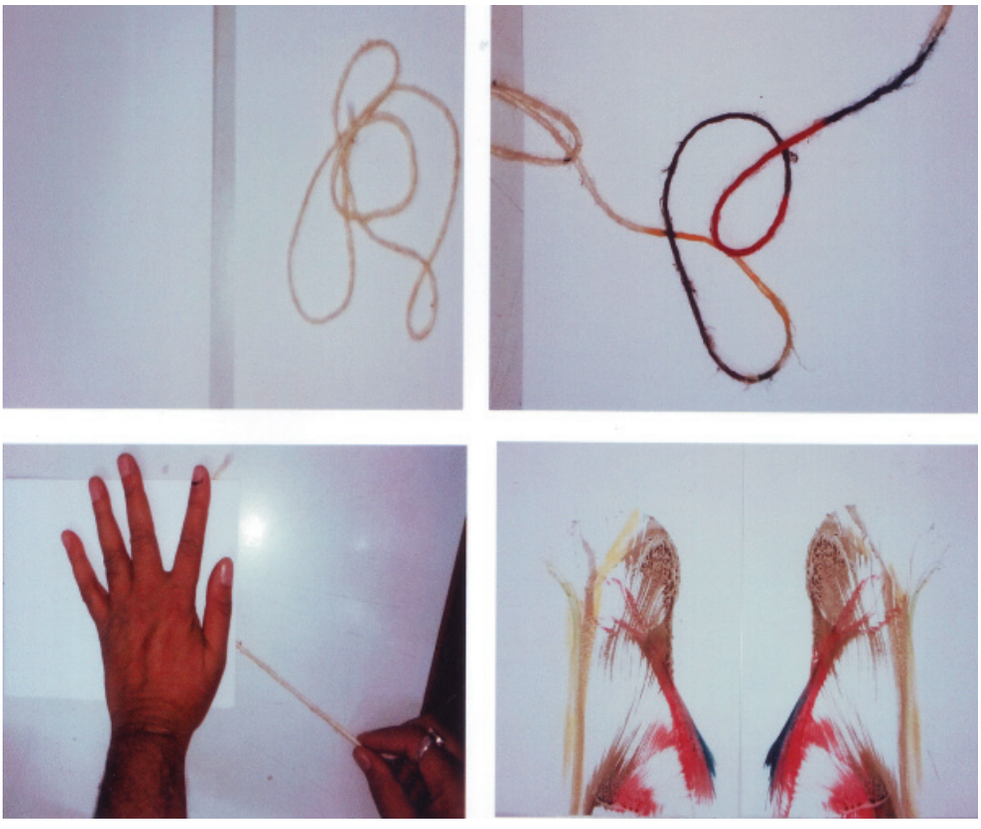

चित्र 6.3

भारतीय एवं पश्चिमी चित्रकला में पोतों के माध्यम से बहुत ही सुन्दर यथार्थवादी शैली में चित्रण किया गया है, जिन्हें देखकर दर्शक उस वस्तु के वास्तविक स्वरूप को आसानी से पहचान लेते हैं। आधुनिक कलाकारों ने भी अपने चित्रों में सादृश्यमय एवं कहीं-कहीं पर अमूर्त रूपों में भी विभिन्न प्रकार के पोतों का सृजन करके दर्शक को आश्चर्यचकित कर दिया है एवं एक अन्य लोक की परिकल्पना को भी साकार कर दिया है। जैसे विन्सेंन्ट वैनगो ने अपने चित्रों में तूलिका के माध्यम से तैल रंग के मोटे-मोटे धब्बों से बहुत ही सुन्दर पोतयुक्त चित्रों का चित्रण किया है, जैसे सनफ्लावर और स्टेरीनाइट इत्यादि।

शिक्षार्थी नीचे दिए गए उदाहरणों से अपनी ड्राइंग शीट पर विभिन्न प्रकार के अनुकृत एवं सृजित पोतों का चित्रण करेंगे, जैसे कि चित्र 6.4, 6.5, 6.6 में दिखाया गया है।

चित्र 6.4

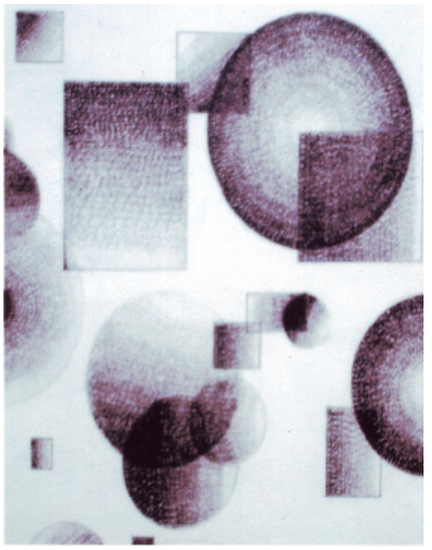

चित्र 6.5

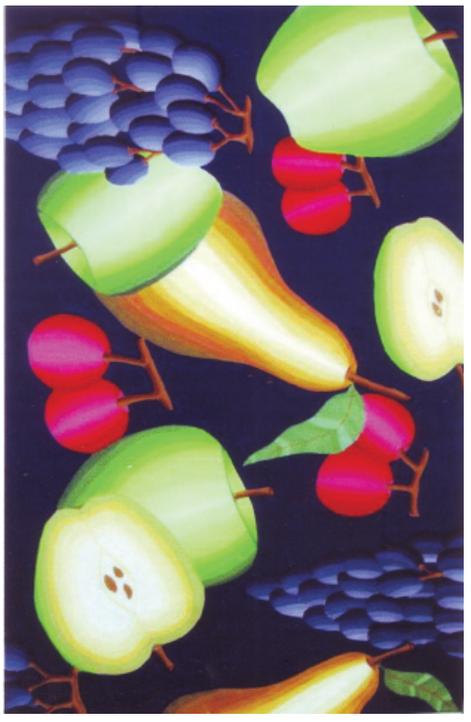

चित्र 6.6

चित्र 6.6(क)

6.3 पोत सृजन की पद्धति

प्रकृति पोत के उदाहरण जो हमें प्रकृति में देखने को मिलते हैं, जैसे विभिन्न पेड़ों की छाल, लकड़ी के विभिन्न प्रकार के रेशे, फल-फूल, सब्जियों और पत्तियों के विभिन्न पोत। इन्हें जब हम वर्ण, तान एवं रेखाओं के माध्यम से हूबहू चित्रित करते हैं तो वह 'अनुकृत पोत' कहलाते हैं।

कुछ अनुकृत पोत की प्राप्ति हेतु हम उन्हें चित्रपट के नीचे रखकर भी उसका प्रभाव प्राप्त कर सकते है, जैसे- लोहे की विभिन्न जालियों को, हार्डबोर्ड के पोत को, लकड़ी के रेशों को, बोरी के टाट को, खादी के कपड़े को चित्रपट के नीचे रखकर जब हम 4बी और 6बी पेंसिल को या ड्राई पेस्टल और आयल पेस्टल कलर को दबाकर चलाते हैं और लगाते है तो वास्वविक पोत हूबहू हमारा चित्र बन जाता है। इस प्रकार के विभिन्न पोत को चित्रभूमि में विभिन्न रूपों में संयोजित करके हम बहुत सुन्दर-सुन्दर चित्र संयोजन कर सकते हैं।

विधि

हम सबसे पहले उचित पोत का चुनाव करेंगे, जिसके प्रयोग से हम अपने चित्र धरातल पर अर्थात ड्राइंग शीट पर सुन्दर चित्र का सृजन करेंगे। हम एक लकड़ी के पटरे को ड्राइंग शीट के नीचे रखेंगे। इस पटरे के ऊपर रखी हुई ड्राइंग शीट पर अपने अनुभव के आधार पर एक सुन्दर चित्र का सृजन करेंगे। इस चित्र में हम 6बी पेंसिल को जब दबा कर चित्रण करेंगे तो नीचे पटरे पर जो पोत है वह हमारी ड्राइंग शीट पर, हमारे चित्र में हूबहू बन जाएगी, तब एक सुन्दर चित्र का सृजन होगा। इस प्रकार हम विभिन्न प्रकार के पोत को चित्र भूमि पर उकेर सकते हैं। जैसे लोहे की जाली, बोरी का टाट, पत्थर के रेशे इत्यादि।

6.4 मुद्रण प्रक्रिया

चित्रकला में मुद्रण से तात्पर्य छापा चित्रण से है। सर्वप्रथम मुलायम पत्थर उसके पश्चात् लकड़ी के छोटे-छोटे ठप्पों से छापा चित्रण का कार्य कागज एवं कपड़ों पर किया जाता था। प्रारम्भ में छापों का प्रयोग सरकारी दस्तावेजों को सत्यापित एवं हस्ताक्षरित करने हेतु राजा-महाराजा किया करते थे। धीरे-धीरे लकड़ी के ठप्पों से कपड़ों पर सुन्दर अलंकरण भी छापे जाने लगे। इस पद्धति का मुख्य लाभ यह है कि लकड़ी के ठप्पों से हम बहुत बड़ी संख्या में उनकी अनुकृतियों एवं प्रतिलिपियों को छाप सकते हैं।

कला में छापा चित्रण की विभिन्न पद्धतियाँ एवं तकनीक निम्न हैं :

6.4.1 काष्ठ फलक (वुडकट)

इस विधि में छोटे ब्लॉक में दो तल अर्थात एक उभरा हुआ तल तथा दूसरा गहरा, कटा हुआ तल, लकड़ी काटने के विभिन्न औजारों द्वारा बनाते हैं। इस ब्लॉक के उभरे तल पर रोलर से स्याही लगाकर उसके ऊपर कागज रखकर प्रिंट लेते हैं। छापा चित्रण पद्धति में मुख्य बात यह है कि हमें जो भी चित्र बनाना होता है वह ब्लॉक में उल्टा बनाते हैं जिससे कि प्रिंट होने पर वह सीधा दिखाई दे। इस पद्धति में हमारा चित्र गहरे कटे हुए धरातल में भी हो सकता है, जिसे हम खुदा हुआ तल प्रक्रिया कहते हैं, तथा उभरी हुई सतह पर भी चित्र का निर्माण कर सकते

हैं। इसे उभरी हुई सतह विधि कहते हैं। जैसा कि चित्र 6.7 सैन्ट थामस नामक काष्ठ फलक (वुडकट) चित्र में बनाया है।

चित्र 6.7

6.4.2 लिनोनियम कट (लिनोकट)

यह विधि भी बुड कट तकनीक की भाँति ही है। इसमें भी दो तल बनाकर प्रिंटिग की जाती है, परन्तु लिनोनियम, लकड़ी की तुलना में आसानी से कट जाता है क्योंकि यह एक प्रकार के रबर की शीट होती है, जिसके पीछे टाट लगा होता है। चित्र 6.8 में लिनोकट में बना घुड़सवार का छापाचित्र दिखाया गया है।

चित्र 6.8

अभ्यास 1

लिनो मुद्रण करें

लिनोकट एक मुद्रण प्रक्रिया का तकनीक है, जिसमें एकलिनो शीट सतह के लिए उपयोग किया जाता है।

प्रथम चरण

पहला चरण में एक पेंसिल ड्राइंग खींचना है। फिर इसे लिनो में स्थानांतरण करने की आवश्यकता है। आप सीधे लिनो पर भी बना सकते हैं (चित्र 6.9 तथा 6.9(क))।

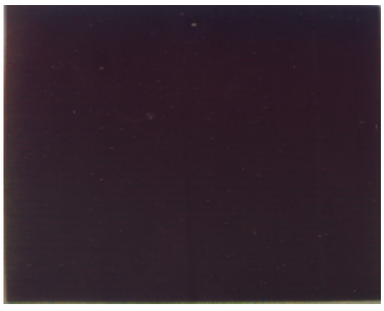

चित्र 6.9

6.9(क)

द्वितीय चरण

एक बार ड्राइंग को लिनों में स्थानांतरित करने के बाद, आप स्याही के साथ डिजाइन को काला गहरे कर सकते हैं। फिर लिनो को बनाने के लिए कार्टन के उपकरण का उपयोग करें और डिजाइन को रेखांकित करने के लिए अच्छे टूल का उपयोग करें। लिनो को रंगने के लिए ब्रश कलम का उपयोग करें (चित्र 6.10, 6.10(क) और 6.10(ख))।

चित्र 6.10

6.10(क)

6.10(ख)

तृतीय चरण

एक ही आकार का कागज लें और इसे डिजाइन पर रखें। अब आप पेपर के पीछे दबाव लागू करने के लिए अपने हाथ का रोलर या दो हाथों या चम्मच के पिछले हिस्से का उपयोग करें। आपके पास एक नया और घर का बना लिनो मुद्रण होगा (चित्र 6.11, 6.11(क) और 6.11(ख))।

चित्र 6.11

6.11(क)

6.11(ख)

6.5 जिंक प्लेट उत्कीर्णन (Engraving)

इस विधि में एक समतल जिंक प्लेट ली जाती है जिसके उपर विभिन्न प्रकार के इंग्रेविंग टूल्स से खुदाई व नक्काशी की जाती है। इस विधि का मुख्य चित्रकार अल्बर्ट ड्यूरर था। इस विधि में औजारों से खुदाई करने के पश्चात् रबर के सॉफ्ट रोलर से अथवा अंगूठे से प्लेट पर स्याही लगाई जाती है ताकि कटे भाग में स्याही बैठ जाए। तत्पश्चात् अखबारी कागज़ के टुकड़ों से प्लेट की स्याही को धीरे-धीरे साफ कर लेते हैं। अब हम देखते है कि जहाँ-जहाँ पर हमनें खुदाई और नक्काशी की थी उस-उस हिस्से में स्याही लगी रह गई है। जिस कागज (हैंडमेड पेपर) पर मुद्रण करना होता है उस कागज को हम एक-दो घण्टे पहले पानी के ट्रे में डाल देते हैं, जिससे कागज मुलायम हो जाए। इस कागज को पानी से निकाल कर, कागज को ब्लॉटिंग पेपर से सुखाकर, प्रिटिंग मशीन, जहाँ पर प्लेट रखी हुई होती हैं उसके ऊपर रख देते हैं, फिर भारी रोलर्स से दबाव डालकर प्रिंट लेते हैं। जैसा कि चित्र 6.12 में अन्ड्रिया माण्टेन्ना द्वारा बनाया गया मैडोना एवं चाइल्ड का छापा चित्र दिखाया गया है।

चित्र 6.12

6.5.1 जिंक प्लेट एचिंग (Etching)

यह प्रक्रिया भी इंग्रेविंग की भाँति जिंक या कॉपर प्लेट पर की जाती है। इसमें मुख्य अन्तर यह होता है कि इंग्रेविंग में हम सीधे इंग्रेविंग टूल्स से गहराई को खोदते हैं जबकि एचिंग में रासायनिक प्रक्रिया द्वारा जिंक प्लेट पर रासायनिक पदार्थ (बिटुमिन पाउडर, बेनजोल, पीला मोम और सफेद मोम से बने रसायन) को तल पर लगा लेते हैं, फिर चित्र के अनुसार टूल्स से जिंक प्लेट पर से रसायन को टूल्स से हटा लेते हैं। जिससे हमें प्लेट साफ दिखाई देने लगती है। इस प्लेट को जब हम पानी मिश्रित तेजाब में डालते हैं तो यह जिंक प्लेट तेजाब द्वारा ड्राइंग वाले हिस्से से खुद जाती है, जिसे अंग्रेजी भाषा में एचिंग कहते हैं। अंत में इंग्रेविंग विधि की भांति कागज पर मुद्रण कर लेते हैं। जैसा कि चित्र 6.13 में 'नीला पक्षी' नामक चित्र दिखाया गया है जो इस कला का उत्तम उदाहरण है।

चित्र 6.13

6.5.2 स्क्रीन प्रिंटिंग पद्धति

यह पद्धति मुख्य रूप से स्टेन्सिल पद्धति का ही आधुनिक रूप है। जैसा कि चित्र 6.14 में स्क्रीन प्रिंटिंग द्वारा बनाए गए एक पोस्टर चित्र में मदर टेरेसा की गोद में बच्चा दिखाया गया है।

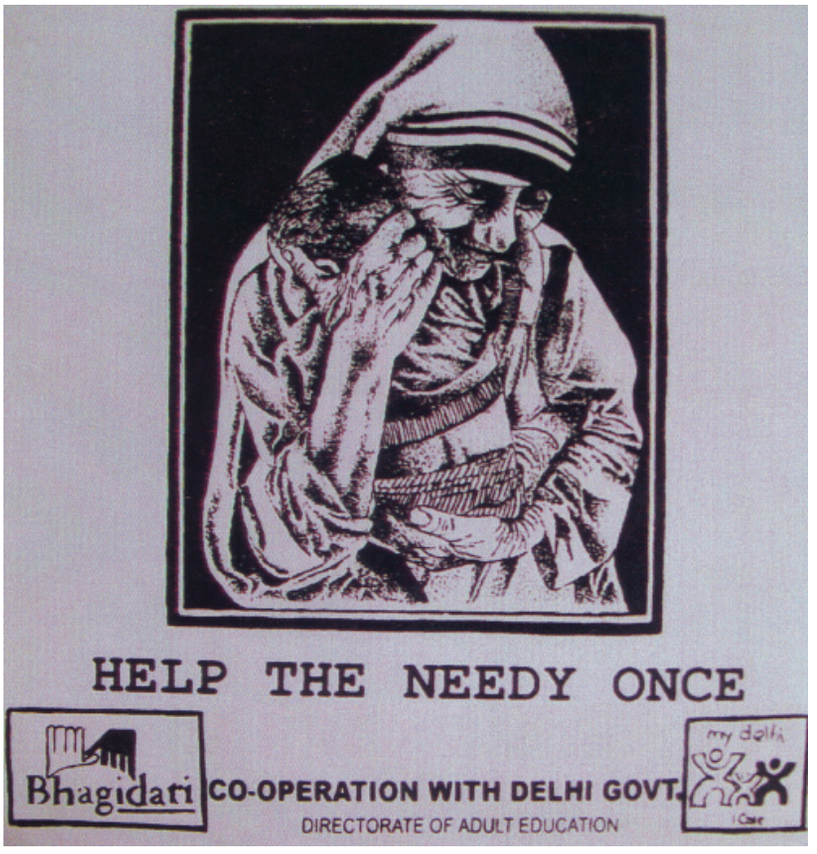

चित्र 6.14

अभ्यास 2

एक स्क्रीन मुद्रण बनाइए

प्रथम चरण

रेशम के एक टुकड़े को फ्रेम पर कसकर कीलों से तैयार कीजिएं। पीएवी (PVA) और अमोनिया डाइक्रोमेट के मिश्रण को कपड़े पर लगाया जाता है और एक अंधेरे कमरे में सूखने दिया जाता है क्योंकि मिश्रण प्रकाश के प्रति प्रतिक्रिया करता है।

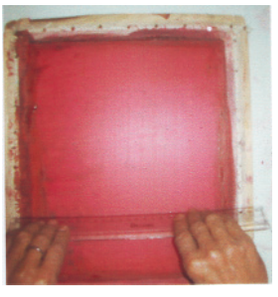

चित्र 6.15

चित्र 6.15(क)

द्वितीय चरण

जैसे ही, शीट सूख जाती है। कलाकार इस पर अपने स्याही ड्राइंग (ट्रेसिंग कागज या ट्रेसिंग फिल्म पर) रखता है।

चित्र 6.16

चित्र 6.16(क)

तृतीय चरण

स्क्रीन के ऊपर एक काँच की शीट रखी जाती है और फ्रेम को सूरज की रोशनी में रखा जाता है। सूर्य के प्रकाश के संपर्क में आने वाले क्षेत्रों पर रसायन चिपक जाता है और उसे अपारदर्शी बना देता है। चित्र की स्याही में ढ़ँके क्षेत्र अप्रभावित रहते हैं और रसायन नरम रहता है।

चित्र 6.17

चित्र 6.17(क)

चौथा चरण

जब फ्रेम को पानी में धोया जाता है, तो नरम रसायन घुल जाता है, जिससे एक पारदर्शी क्षेत्र उजागर हो जाता है। एक ड्राइंग शीट को प्रिटिंग टेबल पर रखा जाता है और फ्रेम को टेबल पर रखा जाता है ताकि इसे आसानी से शीट पर उतारा जा सके।

चित्र 6.18

चित्र 6.18(क)

पाँचवा चरण

जब सिल्क स्क्रीन पर स्याही लगाई जाती है। यह पारदर्शी जाल से होकर गुजरता है और शीट पर चिपक जाता है।

चित्र 6.19

चित्र 6.19(क)

छठा चरण

अंत में, स्क्रीन मुद्रण तैयार है।

चित्र 6.20

6.6 लिथोग्राफी

इस विधि में लिथो स्टोन का प्रयोग किया जाता है जो चूना पत्थर का होता है। इस पत्थर पर रासायनिक प्रक्रिया द्वारा दो तल बनाता है एक जहाँ पर स्याही लग जाती है, दूसरा तल जहाँ पर स्याही नहीं लगती है। लिथोस्टोन पर कार्य करने के लिए लिथो चॉक इत्यादि का प्रयोग किया जाता है। बाकी हिस्से पर ऐरेबिक गोंद लगाकर रासायनिक प्रक्रिया द्वारा दो तल का निर्माण कर लेते हैं। यह प्रक्रिया पूरी होने के पश्चात इस लिथो स्टोन पर रोलर से इंक लगाकर इसके ऊपर ड्राइंग शीट रखकर ऊपर से दबाव डालकर प्रिंट ले लेते हैं। जैसा कि चित्र 6.21 में दर्शाया गया चित्र लिथोग्राफी तकनीक द्वारा बनाया गया है।

चित्र 6.21

6.6.1 आलू के ब्लॉक से मुद्रण

बनावट और मुद्रण के विभिन्न तकनीकों से अपने आप को परिचित करें। बाद में, आसानी से उपलब्ध फलों, पत्तियों और सब्जियों का उपयोग करके छपाई के कुछ सरल रूपों का अभ्यास करें।

अभ्यास 3

आलू से छापा चित्रण

हम सबसे पहले आलू के ठप्पे से छापा चित्रण करना सीखेंगे। यह सबसे आसान एवं सरल और सर्वत्र उपलब्ध सामग्री है। चित्र संख्या 6.22 के अनुसार हम एक बड़े आलू को साफ करके बीच से दो भागों में काट लेंगे।

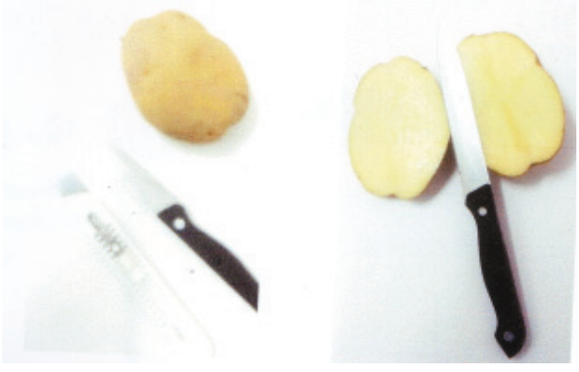

चित्र 6.22

इस कटे हुए हिस्से पर कार्बन पेंसिल से इच्छित ड्राइंग कर लेंगे। क्योंकि आलू में गीलापन होता है इससे कार्बन पेंसिल की ड्राइंग साफ दिखाई देती है। अब जिस हिस्से को प्रिंट करना होता है उस हिस्से को उभरा छोड़कर बाकी के हिस्से को हम काटकर निकाल देंगे। (चित्र 6.23)

चित्र 6.23

इसके पश्चात इसके ऊपर पोस्टर रंग लगाकर छाप लेंगें। यह छापा हम विभिन्न दूरियों पर अलंकरण के अनुसार छाप कर इनकी पुनरावृति कर लेंगे। एक ही रंग होने के कारण सारे छापों की पुनरावृति एक जैसी होगी। (चित्र 6.24)

चित्र 6.24

भिंडी से छापा चित्रण

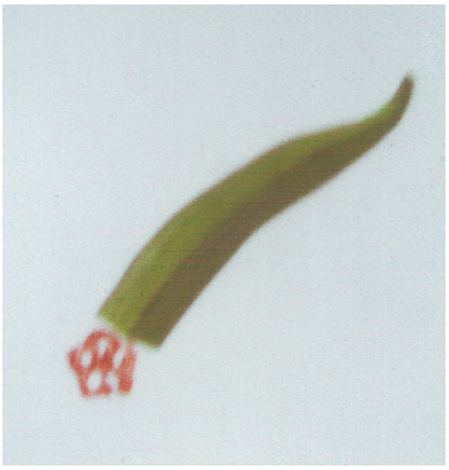

चित्र 6.25

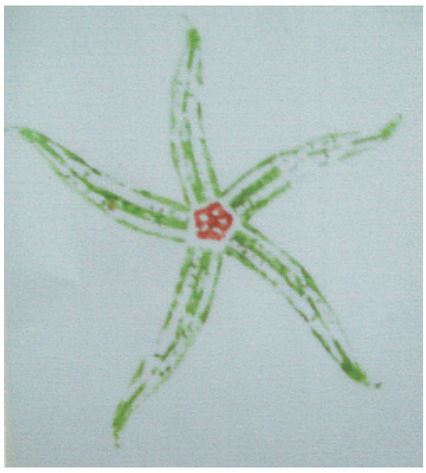

चित्र 6.26

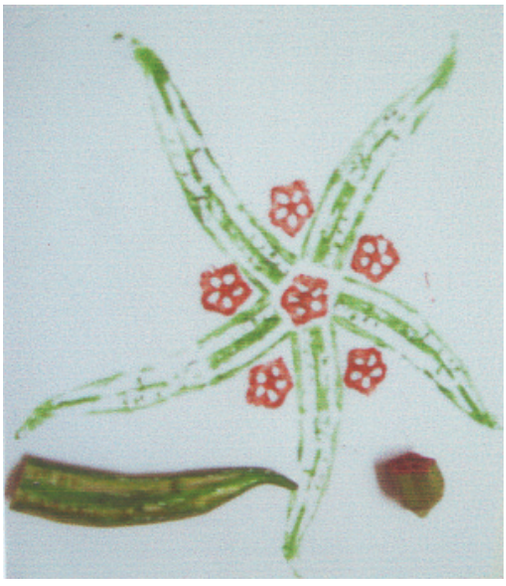

चित्र 6.26(क)

लकड़ी के छापे बनाने की भी यही विधि एवं तकनीक है। इसमें भी एक सतह उभरी तथा दूसरी सतह गहरी होती है। लकड़ी के छापों से हम कपड़ों पर विभिन्न प्रकार के सुन्दर-सुन्दर अलंकरण छाप सकते हैं। आज भी यह तकनीक राजस्थान के सांगानेर और बाड़मेर जिले में तथा देश-विदेश में कपडों की छपाई हेतु प्रसिद्ध है। दक्षिण भारत में लकड़ी के बड़े-बड़े छापों से देवी-देवताओं की बाहय रेखीय ड्राइंग के प्रिंट निकालकर, उनमें विभिन्न रंग भरकर अच्छे-अच्छे चित्रों का सृजन करते हैं।

आपने क्या सीखा

पोत (टेक्सचर) और मुद्रण

- समकालीन कला का अभिन्न अंग
- चित्रकारी के लिए समानता प्रदान करता है
- चित्रण के प्रति यथार्थवाद
- कोलाज में प्रयोग होता है
- कला की विकसित शैली
- मुद्रण करना
- कला की शैली माना जाता है

पाठांत प्रश्न

1. पाठ में दी गई विधि के अनुसार प्रत्येक विद्यार्थी फल-सब्जी एवं अन्य माध्यमों से विभिन्न प्रकार के पोतों के छापों का चित्रण करें।
2. हाफ ड्राइंग शीट पर किन्हीं दो छापों को लेकर उनकी पुनरावृति एवं अनुक्रम द्वारा एक चित्रण करें।
3. विभिन्न प्रकार के प्राप्त पोतों को रंगों एवं ब्रुश के द्वारा अनुकृत करें।
4. चित्रकला के विभिन्न माध्यमों, जैसे- पेंसिल, पेस्टल रंग, जल रंग, तैल रंग से विभिन्न प्रकार के अमूर्त चित्रों का सृजन करें।
5. बाजार से विभिन्न प्रकार के लकड़ी के ब्लॉक का संग्रह करें अथवा स्वयं लकड़ी के ब्लॉक पर दो तरह के तल बनाकर छापा चित्रण करें।
6. विभिन्न प्रकार की लकड़ियों के टुकड़े के ऊपर मोम लगाकर कुछ अलंकरण बनाकर उसके ऊपर पोस्टर रंग लगाकर उसका छापा लेंगे।

शब्दकोश

लिनोनियम	एक प्रकार का रबर
लिथोग्राफी	एक प्रकार के पत्थर की सतह से छपाई करना

मॉड्यूल - 3

कोलाज, ग्राफिक्स और विभिन्न कला रूपों का निर्माण

7. कोलाज निर्माण
8. अनुप्रयुक्त कला : ग्राफिक डिजाइन
9. आदिवासी एवं लोककला के संदर्भ में सृजनात्मक डिजाइन

7

कोलाज चित्रण

कोलाज एक ऐसी तकनीक है जिसका उपयोग दृश्यकला में किया जाता है। जहाँ कला के कार्यों के विभिन्न रूपों, माध्यमों का समावेश होता है। इससे एक नई और पूर्ण चीज बनती है।

कागज पर विभिन्न सामग्रियों को रचनात्मक तथा चयनात्मक रूप से व्यवस्थित किया जाता है। तत्पश्चात् उसे कलात्मक रूप देने के लिए गोंद से चिपकाया जाता है। कोलाज निर्माण एक बहुत ही रचनात्मक कला है जिसका इतिहास 200 ई.पू. से भी पुराना है। कोलाज तकनीक का उपयोग सबसे पहले तब हुआ जब चीन में कागज़ का आविष्कार हुआ था। हालाँकि जापान में कोलाज का उपयोग 10वीं सदी तक बहुत ही सीमित था। इस समय तक लेखक अपनी कविताएँ लिखने के लिए चिपके हुए कागज के सतह का उपयोग करना शुरू कर दिए थे। मध्यकालीन यूरोप में 13वीं सदी के दौरान धार्मिक चित्रों के लिए सोने का पत्तर, रत्न तथा अन्य धातुओं के रूप में कोलाज तकनीक का प्रयोग हुआ। 19वीं सदी में कोलाज विधि का उपयोग फोटो एलबम में किया जाने लगा। आज एडोब, फोटोशॉप आदि कम्प्यूटर साफ्टवेयर के आविष्कार से फोटो कोलाज निर्माण सरल हो गया है।

कोलाज शब्द के निर्माता पिकासो तथा बराक थे। फ्रेंच में जिसका अर्थ होता है गोंद। कोलाज का उपयोग सबसे पहले एक चित्रकार की तकनीक के रूप में 20वीं सदी में हुआ। कोलाज एक कलात्मक संकल्पना है जो आधुनिक शैली की शुरुआत से संबंधित है। पिकासो पहला व्यक्ति था जिसने कोलाज तकनीक का उपयोग अपने चित्र में 1912 ई. में किया। इन्होंने 'स्टिल लाइफ विद चेयर कैनिंग' पेंटिंग बनाई जिसमें इन्होंने कैनवास पर चेयर केन के साथ एक तेल लगा कपड़े का टुकड़ा चिपकाया। बराक ने कोलाज तकनीक का प्रयोग अपनी चारकोल चित्रकारी में किया। अतियथार्थवादी चित्रकारों ने कोलाज का विस्तृत उपयोग किया। इन छाया चित्रों में अखबारों की कटिंग, रंगीन तथा हाथों द्वारा बनाया कागज़, फीता, लत्ता, धागे, अतिरिक्त कला चित्रों तथा पाठ्यपुस्तकों के भाग, किसी अन्य वस्तु के छायाचित्र का उपयोग इत्यादि शामिल हैं।

उद्देश्य

इस पाठ के अभ्यास के बाद, आप :

- विभिन्न सामग्रियों को उपयोग करके कोलाज बना सकेंगे;
- विभिन्न प्रणालियों को प्रयोग कर सकेंगे;
- संतुलन तथा अनुपात का उपयोग कर सकेंगे;
- विभिन्न सामग्रियों के साथ भिन्न छायांकन अवधारणा का उपयोग कर सकेंगे जैसे- कागज और पत्थर;
- कैनवास तथा कागज़ पर विभिन्न सामग्रियों के प्रभाव का विश्लेषण कर सकेंगे;
- कुछ तकनीकों को पेपर कोलाज, चित्रकारी कागज पर भी बना सकेंगे।

7.1 उपयोग की जाने वाली सामग्री

- कागज
- अन्य अपशिष्ट वस्तुएँ
- खाली चॉकलेट डिब्बा
- घास
- कैंची
- पत्रिका
- गोंद
- चित्रण
- चित्रपूर्ण पुस्तकें
- तस्वीरें

7.2 कोलाज निर्माण की तकनीक तथा प्रणाली

कोलाज बनाने के लिए तकनीक तथा सामग्रियों के अनुरूप इन्हें उचित वर्गो में वर्गीकृत भी किया जा सकता है।

7.2.1 कागज कोलाज

इसे बनाने के लिए उपयोग में लाया जाता है कट आउट, फटा हुआ, कागज की कटिंग।

7.2.2 लकड़ी का कोलाज

यह बनाया जाता है लकड़ी की छाल, लकड़ी का तख्त, प्लाई, टूटे हुए फर्नीचर के भाग, लकड़ी की पट्टी, लकड़ी के जंगले की रद्दी। विशाल स्तर पर या कैनवास पर गोंद लगाकर।

7.2.3 डिकॉप (Decoupage)

यह कोलाज आमतौर पर परिभाषित किया जाता है शिल्प के रूप में जहाँ वस्तु पर चित्रों को चिपकाया जाता है। साजसज्जा के लिए प्रभाव हेतु एवं सुंदरता तथा संरक्षण के लिए चित्र का रंग भी किया जाता है। चित्रों पर प्राय: वार्निश से परत चढाई जाती है। देइपेज का उपयोग लालटेन, खिड़की संदूक, तथा अन्य वस्तुओं की सज्जा के लिए किया जाता है।

7.2.4 मौजेक

इस कला में कागज के छोटे टुकड़े को, खपरैल, संगमरमर के पत्थर आदि को एक साथ रखा जाता है। आमतौर पर ये चर्च तथा मंदिरों में पाया जाता है अथवा इमारतों की अन्य रूपरेखा में भी। पत्थर के छोटे टुकड़े अथवा विभिन्न रंग के शीशे के टुकड़े Tesserae के नाम से जाने जाते है जिनका उपयोग पैटर्न अथवा चित्र का आकार बनाने के लिए किया जाता है।

7.2.5 फोटोमोंटेज (Photomontage)

छायाचित्रों से बनाए गए कोलाज को Phatomentage कहते हैं। इस प्रक्रिया में विस्तृत एक छायाचित्र बनाने के लिए छायाचित्रों को सम्मिलित किया जाता है।

7.2.6 त्रिआयामी कोलाज

त्रिआयामी कोलाज एक ऐसी कला है जिसमें त्रिआयामी वस्तुओं को एक साथ रखा जाता है। जैसे: चट्टान, मोती, बटन, सिक्के अथवा यहाँ तक की मिट्टी को भी एक नया रूप देने के लिए।

7.2.7 डिजिटल कोलाज

जो कोलाज कम्प्यूटर के उपयोग से बनाया जाता है। डिजिटल तरीके से तैयार करके कोलाज को विभिन्न रूप दिये जा सकते हैं।

अभ्यास 1

कोलाज बनाएँ रंगीन कागजों के टुकड़ों से : 'हरे-भरे मैदान में घर'

कोलाज तकनीक का उपयोग आमतौर पर बच्चों की चित्रों वाली पुस्तक में किया जाता है। लेकिन इसके और भी उपयोग हैं- चलचित्र उद्योग, संगीत, साहित्य आदि।

चरण 1

अखबार तथा पत्रिका से कागजों को फाड़ें तथा काट्रिज कागज की सतह पर चिपकाएँ। विभिन्न रंगों के कागजों को अलग करें तथा अलग-अलग डिब्बों में रखें तथा चिपकाएँ। अब रंगीन कागजों को छोटे टुकड़ों में काटे तथा उसी रंग के डिब्बों अथवा कन्टेनर्स में रखें। चित्र 7.1 देखें।

चरण 2

ध्यान रखें कि जिस रंग का चयन किया है उसी रंग के तीन विभिन्न शेड होने चाहिए जैसे यदि आप नीला रंग चुनते हैं तो उसके गहरा, हल्का तथा मध्य रंग होने चाहिए। ठीक इसी प्रकार यदि अपने कला कार्य के लिए पीला रंग लेते हैं तो पीले रंग का हल्का, मध्य तथा गहरे रंग को एकत्रित करें और इन्हें तथा विभिन्न पात्रों में रखें। छोटे कटोरों का प्रयोग भी किया जा सकता है। पात्रों में कागजों को एकत्रित करने के लिए। अब दिए गए चित्र के टोन के अनुकूल पेंसिल से चित्र बनाएँ।

चित्र 7.1

चित्र में घर में अक्षर (ह), (म), (ग) चिन्ह अंकित करें। जिसका अर्थ है हल्का, मध्य तथा गहरा रंग। रंग का प्रयोग रंगों के मूल नियम के अनुसार करते हैं। उदाहरण जो क्षेत्र प्रकाश युक्त होंगे वे हल्के होंगे तथा छायादार क्षेत्र गहरे होते हैं मध्यम रंग से इन्हें रंगत जाता है हल्के तथा गहरे रंग के लिए कागज के टुकड़ों को गोंद से चित्रकारी कागज़ पर लगाना शुरू करें। अब हल्के से गहरे रंग या गहरे से हल्के रंग के चित्र 7.2 देखें।

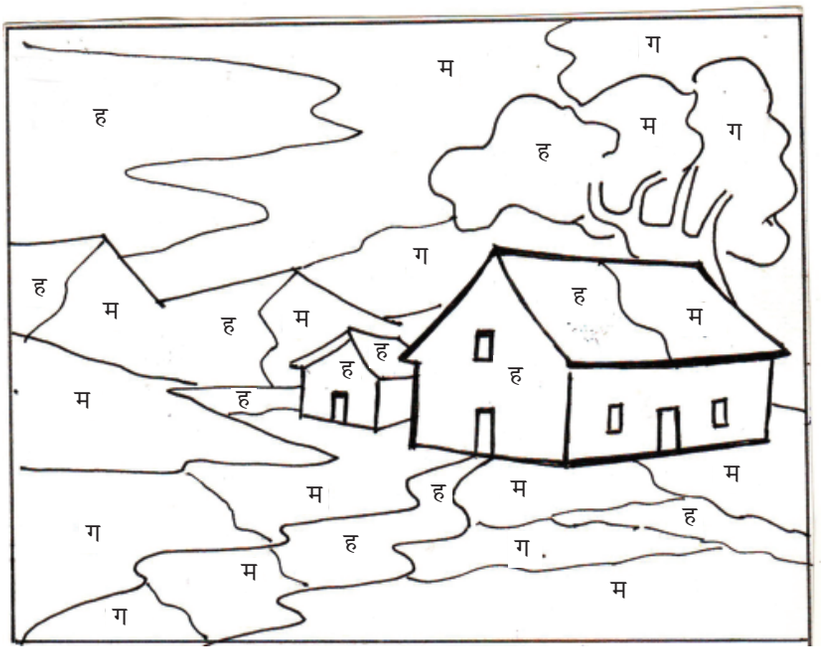

चित्र 7.2

चरण 3

कागज के ऊपरी भाग से कार्य करना आरम्भ करें। हल्के नीले को बांई और से चिपकाएँ। मध्य में नीले रंग का मध्यम रंग लगाएँ तथा गहरा रंग एकदम दाहिनी ओर लगाएँ। इसी प्रकार प्रकाश के स्रोत को ध्यान में रखते हुए सभी भागों में जैसे कि पेड़, पहाड़, भूमि आदि में कागज के टुकड़े लगाएँ। अब कोलाज पूरा हो चुका है। इसे आप सफेद कागज पर चिपका सकते हैं तथा इस सुंदर कला का आनंद भी ले सकते हैं। (चित्र 7.3 देखें)।

चित्र 7.3

अभ्यास 2

महानगर का फोटोमोंटेज बनाना

चरण 1

विषय वस्तु के अनुरूप चित्रों को एकत्रित करें। यह विशेष कार्य अखबारों और पत्रिकाओं से एकत्रित चित्रों द्वारा निर्मित किया गया है। चित्रों को इस प्रकार चिपकाएँ कि एक नई संरचना निर्मित हो। (चित्र 7.4 देखें)।

चित्र 7.4

चरण 2

जहाँ आवश्यक हो चित्रों को कैंची से काटें अथवा आप अलग प्रभाव के लिए कागज के कुछ टुकड़े फाड़ भी सकते हैं। विभिन्न चित्रों को काटकर इमारतों का प्रतिबिंब बनाएँ। कागज़ को फाड़कर बादल तथा मुख्य स्थान दर्शाएँ। (चित्र 7.5 देखें)।

चित्र 7.5

अभ्यास 3

अनुपयोगी वस्तुओं का उपयोग कर बनाया गया कोलाज

सामग्री : कागज, समाचार पत्र-पत्रिकाओं से काटे गये पेपर, कैंची, गोंद, चॉकलेट का खाली डिब्बा, स्ट्रो, कुछ अन्य प्रयोग में न आने वाली सामग्री।

चरण 1

एक चेहरे को काट लें तथा किसी गहरी पृष्ठभूमि पर चिपकाएँ (चित्र 7.6 देखें)।

चित्र 7.6

चरण 2

महिलाओं के विभिन्न हाव-भाव वाले चेहरे काट लें। चित्र में होठों पर चेन चिपकाएँ (चित्र 7.7 देखें)।

चित्र 7.7

चरण 3

दोनों ओर दो बड़े चित्र चिपकाएँ (चित्र 7.8 देखें)। आभूषण बनाने के लिए खाली चॉकलेट के डिब्बों को महिला की गर्दन पर चिपकाएँ। बड़े चेहरे के चारों ओर महिलाओं के चेहरे लगाएँ। कोलाज को सजाने के लिए टैक्स्ट तथा पेपर की पतली पट्टियाँ काटें।

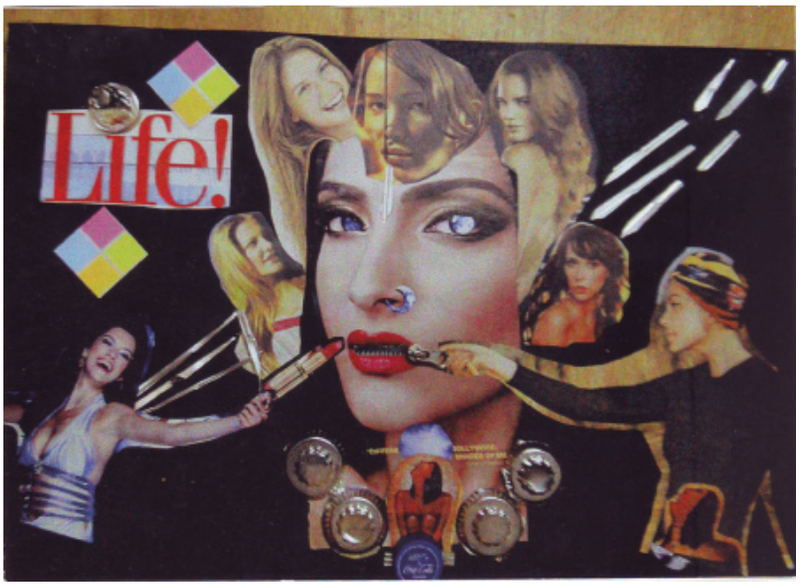

चित्र 7.8

आपने क्या सीखा

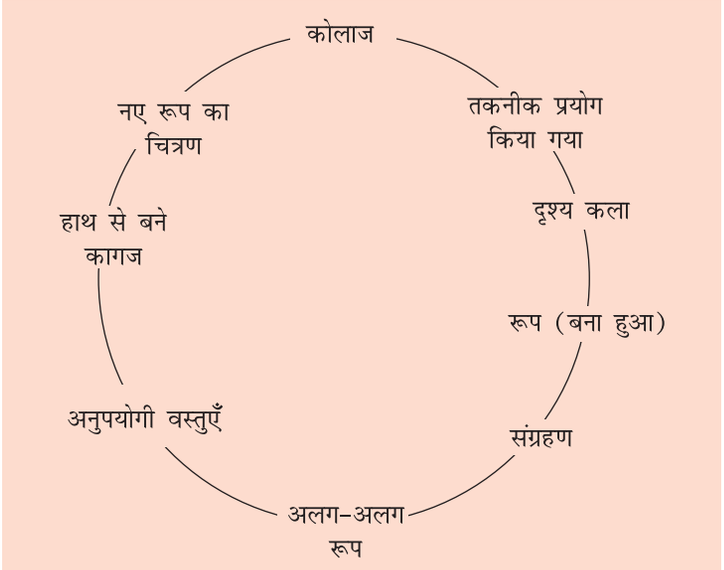

पाठांत प्रश्न

1. कोलाज क्या है?
2. कोलाज के निर्माण के लिए आमतौर पर कौन-कौन सी सामग्री प्रयोग की जाती है?
3. फ्रेंच में 'कोलाज' शब्द का क्या अर्थ है?
4. कोलाज निर्माण की श्रेणियों का वर्णन करें।
5. फूलदान अथवा प्लेट को कागज की कटिंग से सजाएँ।
6. कागज़ को फाड़ कर कोलाज बनाएँ।
7. कोलाज तकनीक का प्रयोग करते हुए एक पोस्टर बनाएँ (सड़क सुरक्षा)।
8. कोलाज तकनीक का प्रयोग करते हुए एक चित्र बनाएँ (कागजों के साथ)।
9. कागज के टुकड़े के साथ मौजेक बनाएँ।

शब्दकोश

दृश्य-कला	यह कला का ही एक रूप है जिसमें हावभाव हेतु दृश्य भाषा का उपयोग किया जाता है।
कोलाज	विभिन्न सामग्रियों की कतरनों को जोड़कर एक दृश्य प्रभाव देना।
डिकॉप	इस कोलाज को बनाने के लिए जो प्रणाली है उसमें सटीक वस्तु होती हैं जैसे:- फूलदान, लालटेन, गमलों पर चित्रों को चिपकाया जाता है एक सटीक पृष्ठभूमि बनाने के लिए।
चिपकाना	कागज के कपड़े अथवा अन्य किसी सामग्री को गोंद से सतह पर चिपकाया जाता है।
मौजेक	टाइल के छोटे टुकडें, कागज को बराबर आकार में काटकर दीवार अथवा कागज पर चिपकाया जाता है।
संग्रथित चित्र	विभिन्न चित्रों को चिपाकर बनाया गया कोलाज।
चित्रण	विषय को स्पष्ट करने अथवा प्रस्तुत करने के लिए रंगीन, काली या सफेद चित्रकारी बनाना।
फाड़ना	कागज़ अथवा कपड़े के नियमित अथवा अनियमित रूप से टुकड़ों में फाड़ना।
लकड़ी का कोलाज	लकड़ी के टुकडों अथवा लकड़ी के तख्ते का उपयोग करके बनाया गया कोलाज।
घनवादी	जो चित्रकारी संयोजन हेतु घन पैटर्न का उपयोग करता हो।
रत्न	अनमोल रत्न जिनका उपयोग आभूषण के लिए किया जाता है।

8

अनुप्रयुक्त कला : ग्राफिक डिजाइन

अनुप्रयुक्त कला के अंतर्गत ग्राफिक डिजाइन एक चाक्षुष संप्रेषण की कला है जिसमें छवियों, फांट एवं विचार के समन्वय से प्रेक्षक तक वांछित सूचना संप्रेषित की जाती है। ग्राफिक डिजाइनर छवियों एवं सुलेखन को मिलाकर अपने ग्राहक द्वारा वांछित संदेश लोगों तक पहुँचाते हैं। वे अक्षर आकारों (टायपोग्राफी) एवं छवियों (फोटोग्राफी, दृष्टांत चित्र एवं ललितकला) द्वारा प्रदत्त सृजनात्मक संभावनाओं को तलाशते हैं। यह डिजाइनर पर निर्भर करता है कि वे न केवल उपयुक्त अक्षर आकारों (टायपोग्राफी) एवं छवियों को ढूँढे या उनका सृजन करें बल्कि उनके बीच श्रेष्ठ संतुलन भी स्थापित करें। एक अच्छी डिजाइन हमारी दुनिया ही बदल देता है। चाहे जो भी संदेश वह संप्रेषित करे जैसे सामाजिक संदेश, किसी व्यवसाय को बढ़ावा, लोगों को किसी संस्था से जुड़ने का आह्वान, लोगों को किसी उम्मीदवार को वोट देने का आग्रह, अथवा राहगीरों को रास्ता बताने का कार्य एवं डिजाइन; हमेशा दर्शक से सम्पर्क बना लेता है। ग्राफिक डिजाइन एक रचनात्मक प्रक्रिया है जिसमें अक्सर डिजाइनर एवं ग्राहक भागीदार रहते हैं। इक्कीसवीं सदी में किसी ग्राफिक डिजाइन का आमतौर पर प्रयोग, पहचान चिन्ह (लोगो एवं ब्राडिंग) बनाने, प्रकाशन कार्य (पत्रिका, पुस्तक, एवं समाचार पत्र), विज्ञापन एवं उत्पादों के पैकेजिंग तैयार करने में किया जाता है। उदाहरण के लिए, हो सकता है कि किसी उत्पाद पैकेजिंग डिब्बे पर लोगो या अन्य आर्टवर्क बनाया गया हो, जिसको व्यवस्थित कथ्य एवं आकृतियों तथा रंगों जैसे शुद्ध डिजाइन तत्व मिलकर एक हो रहे हों। संयोजन, ग्राफिक डिजाइन का एक महत्वपूर्ण अंग है।

प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक समय तक कला ने बदलाव एवं विकास का एक लम्बा सफर तय किया है। चित्रांकन के औजार भी बदल गए हैं। पेंसिल, चारकोल एवं तूलिका से अब यह डिजिटल माउस तक पहुँच गए हैं। ड्राइंग शीट एवं कैनवास का स्थान अब डिजिटल स्क्रीन ने ले लिया है। अनेक प्रकार के उत्कृष्ट सॉफ्टवेयर, जैसे- पेंट, फोटोशॉप, इलस्ट्रेटर, कोरल ड्रॉ एवं इन डिजाइन आदि के प्रयोग से कला के विद्यार्थी एवं व्यावसायिक कलाकार एवं चित्रकार डिजिटल ग्राफिक डिजाइन तैयार करते हैं जो उनकी आवश्यकताओं के बहुत ही अनुरूप होते हैं। डिजिटल डिजाइन में चाक्षुष सौन्दर्य से बढ़कर अनेक तत्व, जैसे- आपसी विचार-विमर्श, सूचनाएँ, उपकरणों की समझ एवं इलैक्ट्रॉनिक कौशल भी आवश्यक होते हैं। परन्तु इन सबसे

बढ़कर, यह ग्राफिक डिजाइनर का सृजन कौशल है जो सबसे अधिक महत्व रखता है। हाथ से बनाये गए ग्राफिक डिजाइन की तुलना में डिजिटल डिजाइन पुनरुत्पादन हेतु अधिक सुविधाजनक होते हैं। छपाई पद्धति के डिजिटल हो जाने के कारण अब हाथ से बने ग्राफिक डिजाइन को भी पहले डिजाइन मोड में बदलना पड़ता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- ग्राफिक डिजाइन बनाने हेतु हाथ से एवं डिजिटल पद्धति से डिजाइन बनाने का कौशल विकसित कर सकेंगे;
- हाथ से एवं डिजिटल पद्धति से ग्रीटिंग कार्डस बना सकेंगे;
- पुस्तक एवं पत्रिका हेतु हाथ से तथा डिजिटल पद्धति से मुखपृष्ठ तैयार कर सकेंगे;
- कम्पनी, सेवा एवं उत्पाद हेतु लोगो तैयार कर सकेंगे;
- डिजिटल आर्टवर्क को कैसे संरक्षित किया जाए एवं अन्य उपयोगकर्ताओं से इनका किस प्रकार आदान-प्रदान किया जाए, यह स्पष्ट कर सकेंगे;
- आज के समय में डिजिटल आर्ट कितनी सुविधाजनक है, यह उल्लेख कर सकेंगे।

8.1 ग्रीटिंग कार्ड का डिजाइन तैयार करना

ग्रीटिंग कार्ड बहुत ही सामान्य उद्देश्य से बनाए जाते हैं। ये न केवल आपके प्रियजनों के चेहरे पर एक मुस्कुराहट ले आते हैं बल्कि ये यह भी बताते हैं कि आप उनके लिए क्या भावनाएँ रखते हैं। धार्मिक त्यौहार, जन्मदिन, विवाह की वर्षगांठ, विवाह अथवा कोई महत्वपूर्ण दिन आदि अवसरों पर हम इन्हें भेजते हैं और लोगों द्वारा भेजे गए कार्ड को प्राप्त करते हैं। आकर्षक ग्रीटिंग कार्ड जिन्हें अच्छी तरह डिजाइन किया गया हो, वे मित्रों एवं परिजनों को एक दूसरे के करीब ले आते हैं। ग्रीटिंग कार्ड आमतौर पर एक साधारण दस्तावेज होता है- एक मोड़ा हुआ कागज़ जिस पर संदेश के साथ मुखपृष्ठ पर कोई छवि या कथ्य छपा होता है।

8.1.1 हाथ से ग्राफिक डिजाइन तैयार करने हेतु आवश्यक सामग्री

- एच.बी एवं 2बी. पेंसिल
- 1/4 माप की कार्टिरेज पेपर शीट।
- 2, 4, 6 एवं 8 नम्बर के गोल ब्रश।
- पोस्टर कलर
- स्केल
- कंप्यूटर
- पेंट, कोरल ड्रा, एवं फोटोशॉप जैसे सॉफ्टवेयर।

अभ्यास 1

हाथों से ग्रीटिंग कार्ड बनाना

हम कार्टिरिज पेपर शीट पर पोस्टर कलर से दीपावली ग्रीटिंग कार्ड बनायेंगे।

प्रथम चरण

सर्वप्रथम एक ए4 माप की कार्टिरिज शीट लें एवं उसे दोहरा मोड़ लें। इस पर एक खड़ा आयाताकार बनाएँ एवं स्थान को डिजाइन के अनुरूप बाँट लें। अब इसमें एक कंदिल और एक प्रज्वलित दीपक चित्रित करें।

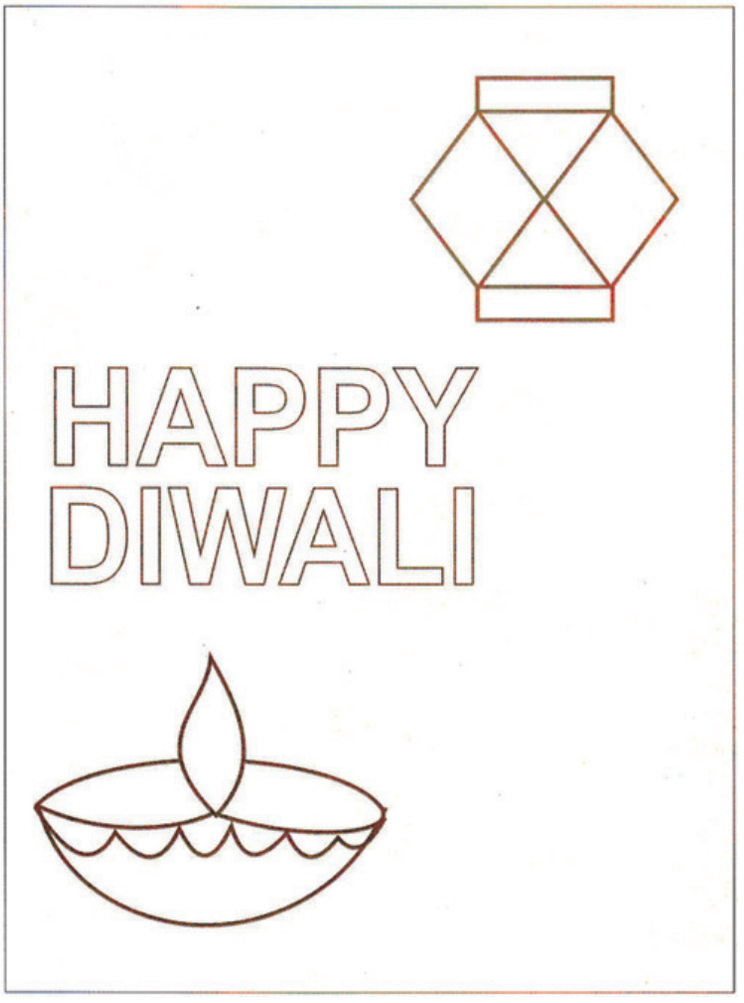

चित्र 8.1

दूसरा चरण

बाँयी ओर नीचे बनी कंदिल एवं दीपक तथा लौ में रंग भरें। बीच में 'Happly Diwali' लिखे। चित्र 8.2 देखें।

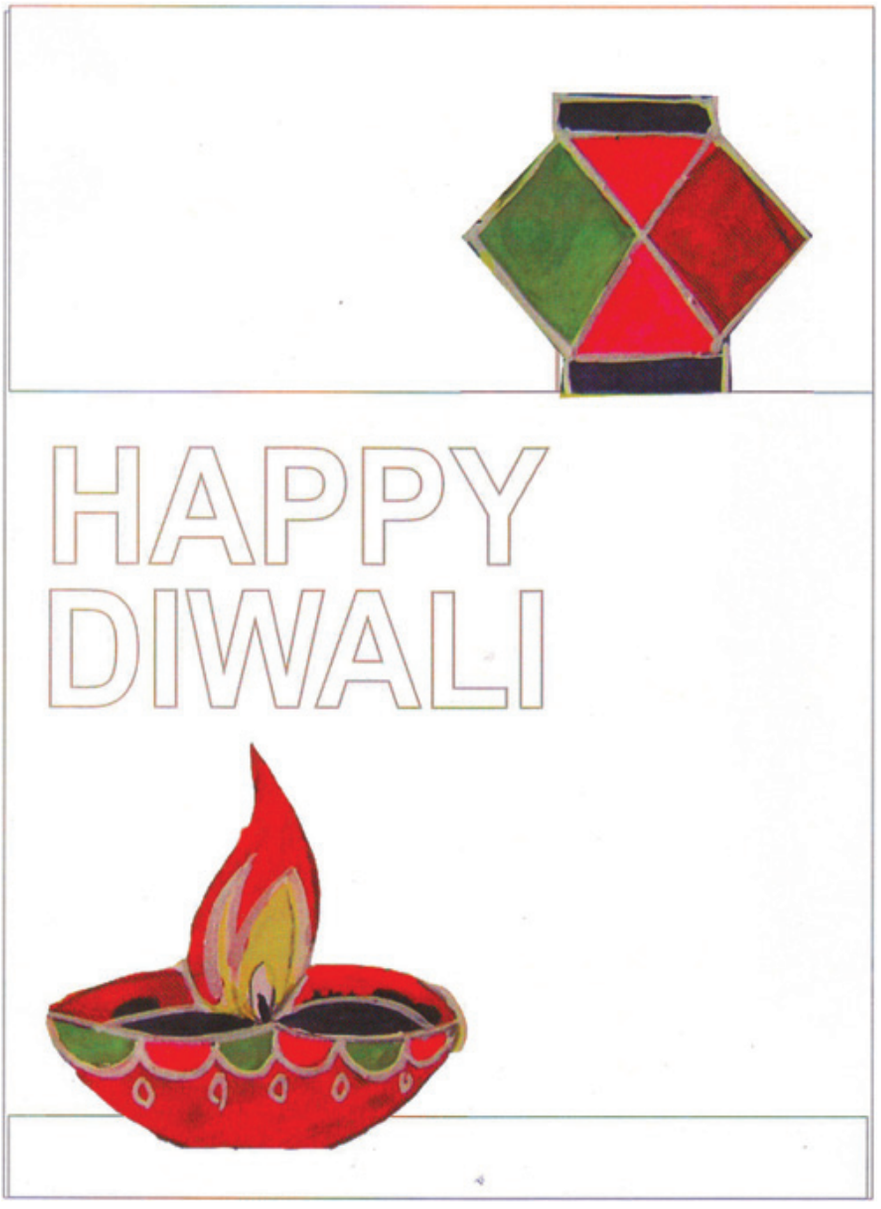

चित्र 8.2

तीसरा चरण

दिए गए डिजाइन के अनुसार पृष्ठभूमि में पीले और नीले रंग भरें। फिर कुंदील और दिए के चित्र में गहरे रंग भरें। 'Happly Diwali' लिख गए स्थान पर रंग भरें। कार्ड के खाली स्थान को भी चमकीली चीजों या मनपसंद चीजों से भर सकते हैं (चित्र 8.3 देखें)।

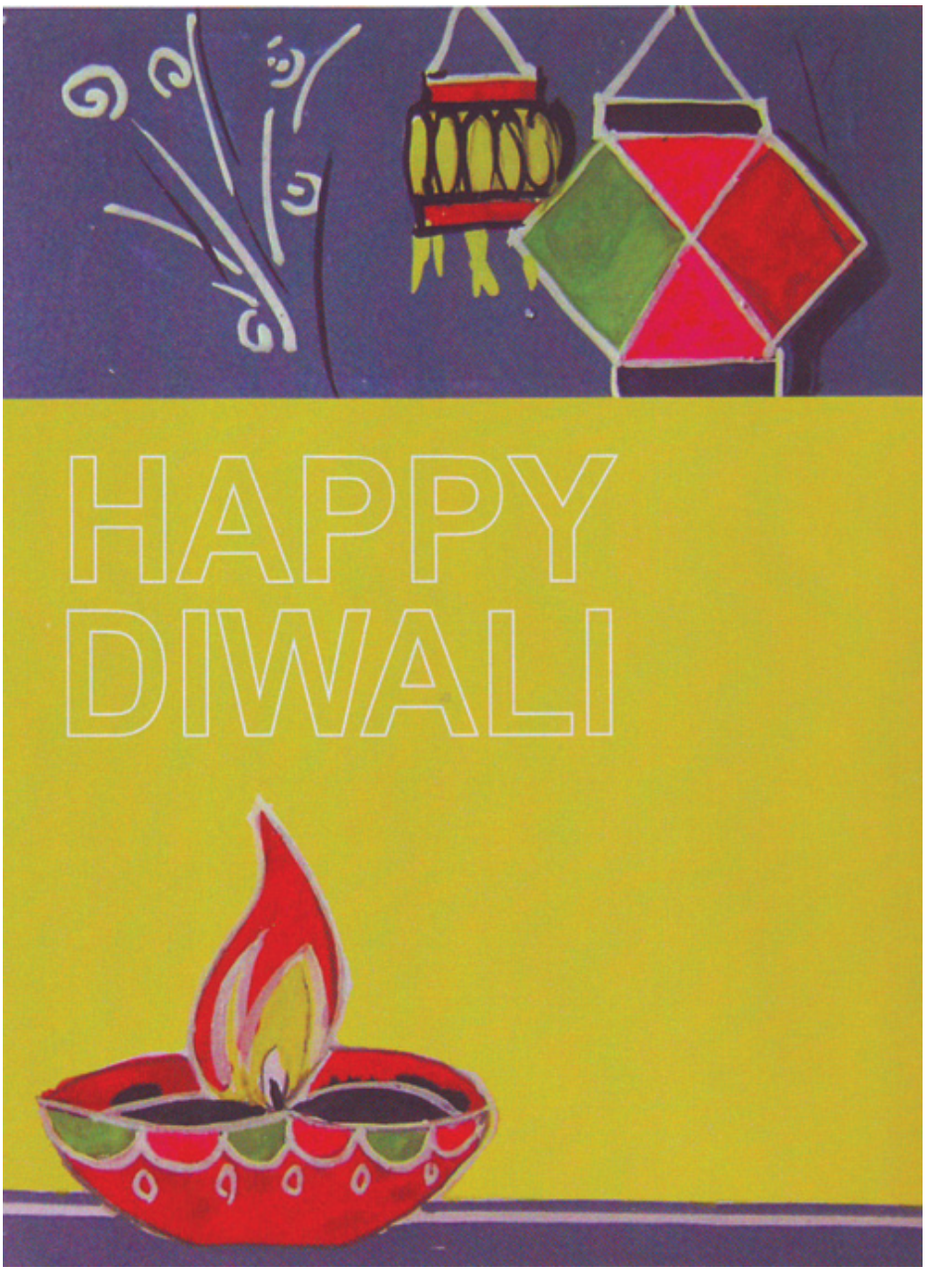

चित्र 8.3

चौथा चरण

बाह्य रेखाओं को विपरीत रंगों द्वारा चित्रित कर उनकी शोभा बढ़ाएँ। अब आपका रंग-बिरंगा ग्रीटिंग कार्ड तैयार है।

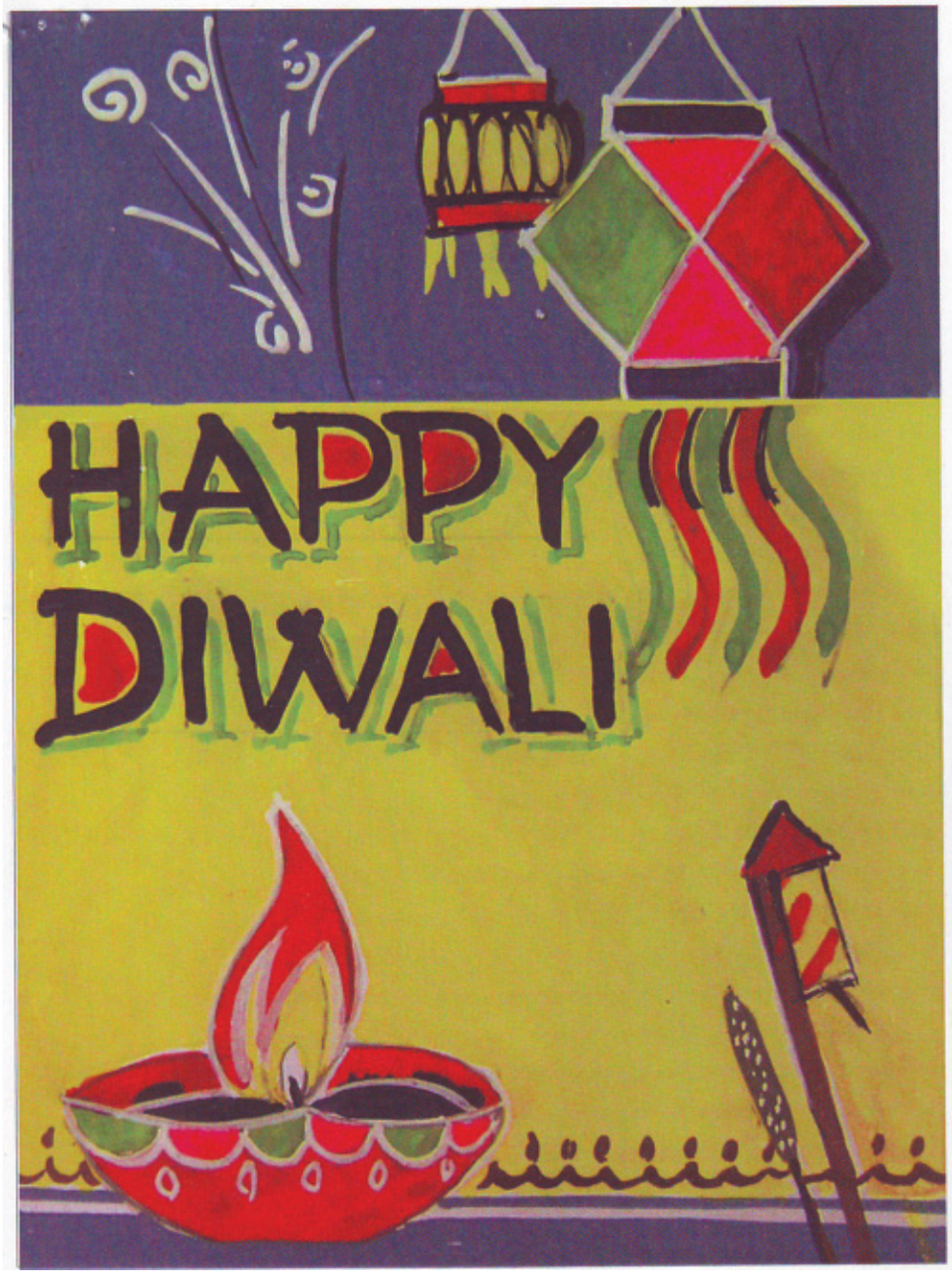

चित्र 8.4

अभ्यास 2

कंप्यूटर से ग्रीटिंग कार्ड डिजाइन करना

हम कंप्यूटर एक जन्मदिन कार्ड डिजिटल पद्धति से तैयार करेंगे।

प्रथम चरण

आपने कंप्यूटर पर पेंट साफ्टवेयर में एक नया पेज खोलें। टूल्स में से ब्रश टूल चुनें एवं क्रयोन ब्रश का ऑप्शन लें। अब अपनी पसंद का चमकीला रंग चुनकर पृष्ठभूमि में भरें एवं एक रंगीन पृष्ठभूमि तैयार कर लें जैसा कि चित्र 8.5 में दर्शाया गया है।

चित्र 8.5

द्वितीय चरण

अब क्लिपबोर्ड टूल में जाएँ और वहाँ क्लिपआर्ट आप्शन से एक केक का फोटो चुनें और उसे इंपोर्ट करके तैयार की गई पृष्ठभूमि पर वांछित स्थान पर पेस्ट कर दें। चित्र 8.6 के अनुरूप।

चित्र 8.6

तृतीय चरण

अब शेपटूल की सहायता से विभिन्न माप एवं रंगों के कुछ सितारों को केक के दाएँ एवं बाएँ बना दें। (चित्र 8.7 देखें)।

चित्र 8.7

चौथा चरण

अब टैक्सट टूल की सहायता से केक पर 'हैप्पी बर्थ डे' अलग रंग से लिख दें। अब कार्ड के निचले हिस्से में एक आयताकार की बाह्य रेखा खीचें तथा इसमें रिवर्स फोरमेशन में वांछित संदेश लिखें। अब आपका कार्ड तैयार है। इस डिजाइन को जेपीजी अथवा टिफ फार्मेट में डाक्यूमेंट फोल्डर में सुरक्षित करें।

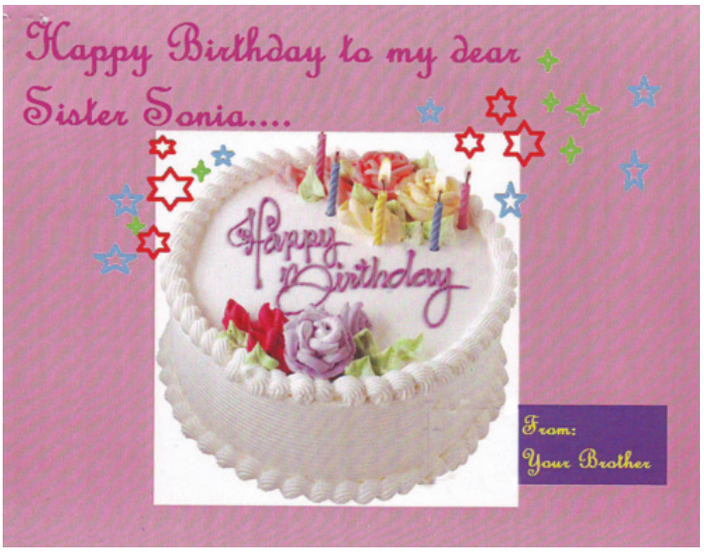

चित्र 8.8

अभ्यास 3

लोगो डिजाइन करना

लोगो किसी संस्था का प्रतीक चिह्न होता है। लोगो किसी कम्पनी की पहचान दिखाकर उसका प्रतिनिधित्व करता है तथा उसे एक अर्थ देता है। यह कम्पनी की ब्रैन्ड स्ट्रेटजी का अभिन्न अंग होता है तथा इसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। लोगो के अभाव में उपभोक्ताओं को भिन्न-भिन्न उत्पादों एवं सेवा प्रदाताओं को पहचानना कठिन हो जाता है। कोई कम्पनी क्या उत्पाद एवं सेवा दे रही है, लोगो उसे ग्राफिक के रूप में दर्शाता है। लोगो किसी भी ब्रान्ड को पहचान देता है तथा व्यवसाय का महत्व बढ़ाता है। कभी-कभी कम्पनी के नाम को लोगो डिजाइन का आधार बनाया जाता है। एक अनूठे अक्षर आकार (फौंट) एवं प्रारूप से उत्कृष्ट लोगो बनाया जा सकता है।

लोगो बनाने की प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण कार्य लोगो हेतु अवधारणा का चुनाव करना है। यह प्रक्रिया ठीक वैसी ही है जैसे किसी के लिए नाम का चुनाव। पहले आपको यह सुनिश्चित करना होता है कि लोगो द्वारा आप कम्पनी के बारे में क्या बताना चाहते हैं। एक कम्पनी को दर्शाने के अनेक ढंग हो सकते हैं। हो सकता है कि एक रीयल स्टेट कम्पनी के लिए घर की तस्वीर या कार बनाने वाली कम्पनी के लिए आपके मस्तिष्क में कार की तस्वीर लोगो के रूप में उभरे। किसी कम्पनी की विचारधारा दर्शाने हेतु आप एक अमूर्त छवि का भी प्रयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए एक अजमाई हुई एवं जमी हुई कम्पनी के लिए एक ज्यामितिक आकृति जैसे पिरामिड की आकृति उपयुक्त हो सकती है। कुछ कम्पनियाँ एक से अधिक व्यवसायों में हो सकती हैं, अत: वे अधिक बुनियादी छवियों को पसंद करेंगी। परन्तु आप इसे अधिक तकनीकी दर्शाने हेतु सीधी रेखाओं एवं धुमावों के माध्यम से बना सकते हैं अथवा इसे अधिक आनुपातिक एवं ज्यमितीय रूप देकर विशिष्ट रूप दे सकते हैं। लोग एक सहज लोगो को, जिसमें कोई सांकेतिक अर्थ निहित हो, आसानी से पहचान लेते हैं। किसी लोगो को आकर्षक एवं स्मरणीय होना चाहिए।

हाथ से लोगो तैयार करना

यहाँ हम भारतीय डाक हेतु हाथ से लोगो तैयार करेंगे। लोगो तैयार करने हेतु सबसे पहले आप एक रफ शीट पर कार्य करेंगे। जब आप ऐसा रेखांकन तैयार कर लेंगे जो आपके विषय के लिए उपयुक्त हो, तब आप उसे अंतिम रूप देने हेतु तैयारी करेंगे।

पहला चरण

कार्टिरेज पेपर शीट पर पेंसिल से वांछित रेखाचित्र तैयार करें। शीट के ऊपरी भाग में चित्र 8.9 के अनुरूप ग्राफिक आकृति तैयार कर लें।

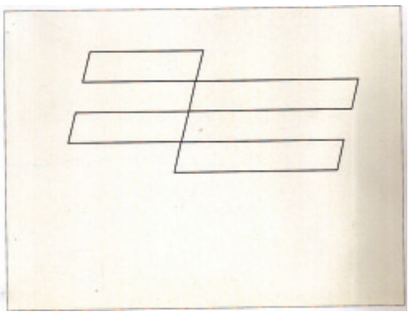

चित्र 8.9

द्वितीय चरण

शीट के निचले भाग में पेंसिल से 'इण्डियन पोस्ट' लिखें (चित्र 8.10 के अनुरूप)।

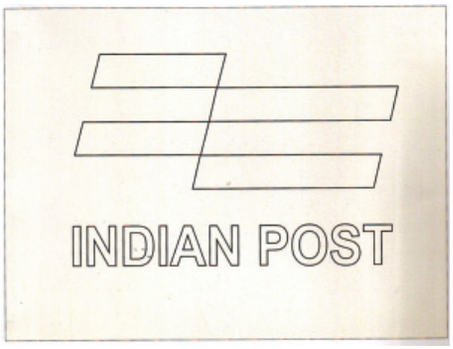

चित्र 8.10

तृतीय चरण

अब ग्राफिक आकृति में सफाई से रंग भरें। इस लोगो में पोस्ट ऑफिस लाल रंग में उपयुक्त रहेगा। (चित्र 8.11 के अनुरूप)

चित्र 8.11

चौथा चरण

अब शीट के निचले भाग में लिखे 'इण्डियन पोस्ट' वाक्य में बहुत ही सावधानीपूर्वक काला रंग भरें। डिजाइन को बेहतर करने हेतु अतिरिक्त धब्बे सफेद पोस्टर कलर से दूर करें। अपना लोगो अब तैयार है। (चित्र 8.12)

चित्र 8.12

अभ्यास 4

डिजिटल पद्धति से लोगो बनाना

लोगो का डिजिटल ग्राफिक डिजाइन बनाने के लिए हम एन. आई. ओ. एस. का लोगो चुन रहे हैं। शिक्षार्थी अभ्यास के लिए यही लोगो बना सकते हैं।

प्रथम चरण

कोरल ड्रॉ सॉफ्टवेयर में एक नया पेज खोलें, टूलबॉक्स से आयाताकार का टूल चुनें। चुनकर पेज पर एक आयाताकार की रचना करें। (चित्र 8.13 के अनुरूप)।

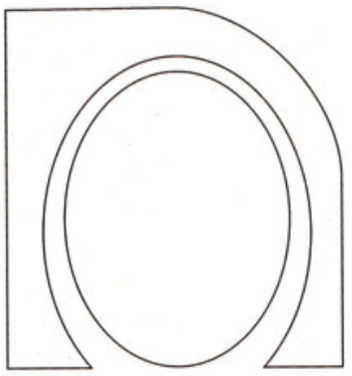

चित्र 8.13

जैसे कि हम देख सकते हैं कि इस लोगो में एन.आई.ओ.एस. सभी अक्षर एक साथ समाहित हैं। आई के लिए एक लौ के समान आकृति बनाई गई है।

द्वितीय चरण

अब फ्री हैण्ड टूल एवं शेष टूल की सहायता से सभी वांछित अक्षरों की अलग-अलग बाह्य रेखा खीचें। (चित्र 8.14 के अनुरूप)।

चित्र 8.14

तृतीय चरण

अब एक अलग परत पर लौ का चित्रण करें। अब तैयार कर लिए गए अक्षरों की प्रत्येक परत में गहरा नीला रंग भरें, लौ में नारंगी रंग भर दें। (चित्र 8.15 के अनुरूप)।

चित्र 8.15

चतुर्थ चरण

अब टैक्स्ट् टूल की सहायता से डिजाइन के निचले भाग में हिन्दी भाषा में संस्थान का ध्येय वाक्य लिखें एवं इसमें नारंगी रंग भर लें। लिखे हुए वाक्य को 'कन्वर्ट टू कर्व' करें। अब अलग-अलग भागों को ग्रुप कर लें। (चित्र 8.16 के अनुरूप)।

चित्र 8.16

अभ्यास 5

लोककला या जनजातीय शैली में पुस्तक का मुख्यपृष्ठ हाथ से बनाना

किसी भी पुस्तक के मुख्यपृष्ठ को डिजाइन करने का मूल सिद्धांत यह होता है कि उसका डिजाइन पुस्तक के कथानक से मेल खाता है। इसका आशय यह है कि पुस्तक डिजाइन पुस्तक में दिए गए कथ्य की शैली, प्रारूप एवं संदेश के अनुरूप होना चाहिए। एक पुस्तक में मुख्यपृष्ठ में निम्न तत्व होने चाहिए :

1. शीर्षक
2. उपशीर्षक
3. आकल्पन (डिजाइन) एवं प्रारूप
4. पुस्तक का अन्तिम पृष्ठ (बैक कवर)
5. स्पाइन
6. लेखक या संक्षिप्त जीवन वृतांत

यहाँ हम पुस्तक का केवल सामने वाला मुखपृष्ठ तैयार करेंगे।

सबसे पहले हम पुस्तक का चुनाव करेंगे। हम लोक कला की एक पुस्तक का मुख्य पृष्ठ बनाएँगे। क्योंकि यह पुस्तक भारतीय लोक कला पर केन्द्रित है अतः हमें मुख्यपृष्ठ बनाने में भी यह बात ध्यान में रखनी होगी। हम कुछ लोक चित्रों के रेखांकन तैयार कर सकते हैं। हम यहाँ वार्ली चित्रों का प्रयोग करेंगे क्योंकि यह एक प्राचीन भारतीय लोक कला का रूप है।

प्रथम चरण

पहले 1/4 माप की कोर्टिरेज पेपर शीट लें, उस पर एक आयताकार बनाएँ एवं वार्ली चित्रों के कुछ रेखांकन तैयार करें। (चित्र 8.17 के अनुरूप)।

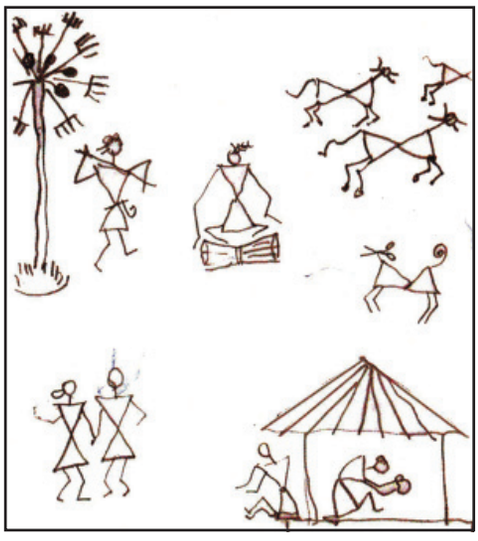

चित्र 8.17

द्वितीय चरण

कार्टिरेज पेपर शीट पर वार्ली चित्र शैली में कुछ रेखांकन बनाए। इन रेखांकनों को गहरा कर लें। ताकि जब पृष्ठभूमि में रंग भरा जाए तब भी यह रेखाकंन दिखते रहें। (चित्र 8.18 के अनुरूप)।

चित्र 8.18

तृतीय चरण

पृष्ठभूमि में एक हल्का हरा स्थान बनाते हुए पीला रंग भरें। अब बनाई हुई आकृतियों में गहरा कत्थई रंग भर दें। (चित्र चित्र 8.19 के अनुरूप)।

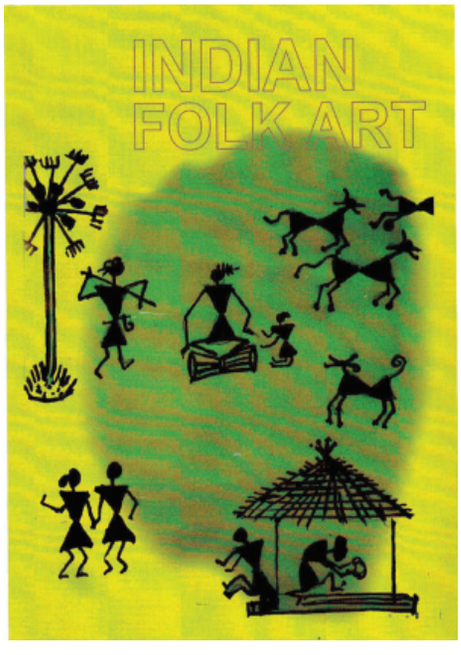

चित्र 8.19

चतुर्थ चरण

ऊपर की ओर पुस्तक का शीर्षक गहरे हरे रंग से लिखें ताकि रंग संगति बनी रहे। अब भारतीय लोक कला पर आपका मुखपृष्ठ तैयार है। (चित्र चित्र 8.20 के अनुरूप)।

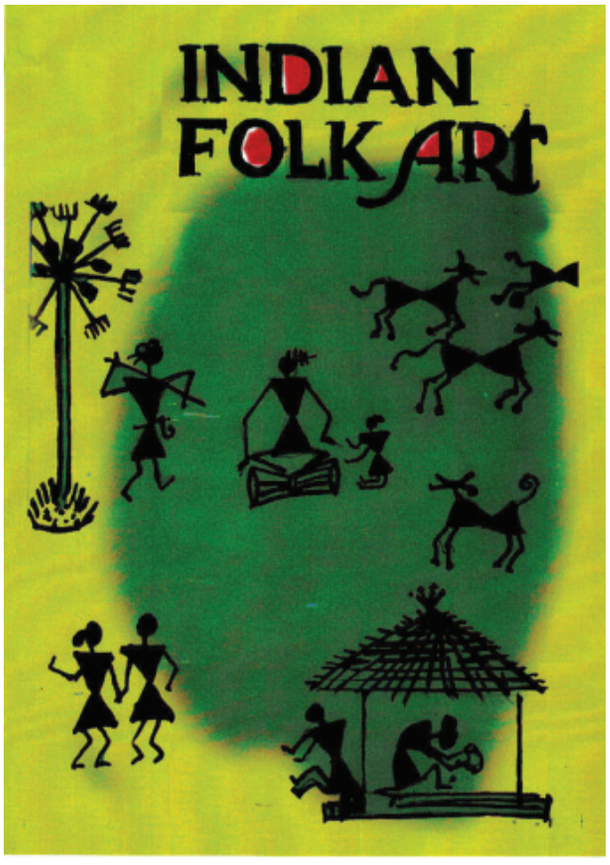

चित्र 8.20

अभ्यास 6

डिजिटल पद्धति से पुस्तक का मुख्यपृष्ठ डिजाइन करना

डिजिटल पद्धति से पुस्तक का मुख्यपृष्ठ डिजाइन करने के लिए भी वही मूल सिद्धांत हैं जो हाथ से डिजाइन बनाने के लिए हैं। यहाँ अंतर केवल यह है कि हम हाथ के स्थान पर लैपटॉप या डैस्कटॉप कंप्यूटर काम में लाते हैं। हम गणित के लिए मुख्यपृष्ठ डिजाइन तैयार करेंगे। यहाँ भी मुख्यपृष्ठ के लिए पुस्तक में दी गई सामग्री से मेल खाती हुई ग्राफिक डिजाइन प्रयुक्त की जाएगी।

प्रथम चरण

कोरल ड्रॉ में एक नया पृष्ठ खोलें एवं टूल बॉक्स से आयताकार टूल चुनकर एक आयताकार तैयार करें। अब क्लिप आर्ट से पृष्ठभूमि में लगाने हेतु पुस्तक की विषय वस्तु से मेल खाता हुआ ग्राफिक चुनें और इंपोर्ट करें। (चित्र 8.21 के अनुरूप)

चित्र 8.21

द्वितीय चरण

अब टैक्स्ट टूल की सहायता से मुख्यपृष्ठ के निचले आधे भाग में गणित के विभिन्न अंकों को एक सुन्दर कोलाज रूप में संयोजित करें। (चित्र 8.22 के अनुरूप)।

चित्र 8.22

तृतीय चरण

अब टैक्स्ट टूल की सहयता से पुस्तक का शीर्षक एवं उप शीर्षक तैयार करें तथा अन्य विवरण लिखें। (चित्र 8.23 के अनुरूप)।

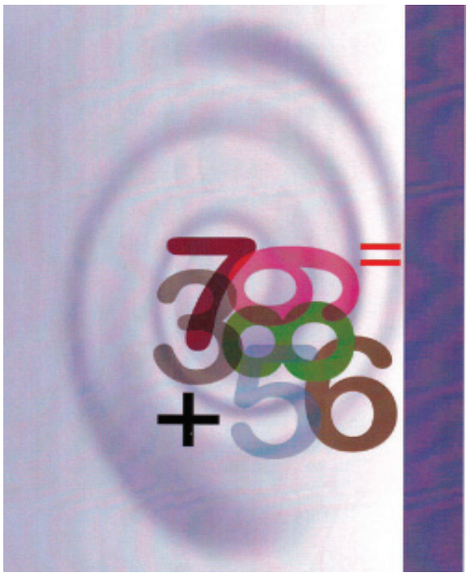

चित्र 8.23

चतुर्थ चरण

हमने यह मुख्यपृष्ठ रा.मु.वि.शि.सं. के लिए तैयार किया है। अतः उसका लोगो पृष्ठ के बाएँ, निचले भाग में बना दें। अब गणित विषय पर आपकी पुस्तक का मुख्यपृष्ठ डिजिटल मोड में तैयार है। अब इस डिजिटल डिजाइन को सी.डी.आर. एवं पी.डी.एफ. मोड में सुरक्षित कर लें तथा इसका प्रिंट ले लें। (चित्र 8.24 के अनुरूप)।

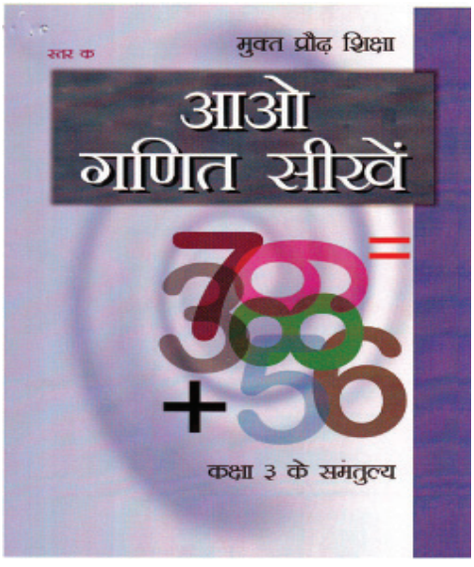

चित्र 8.24

आपने क्या सीखा

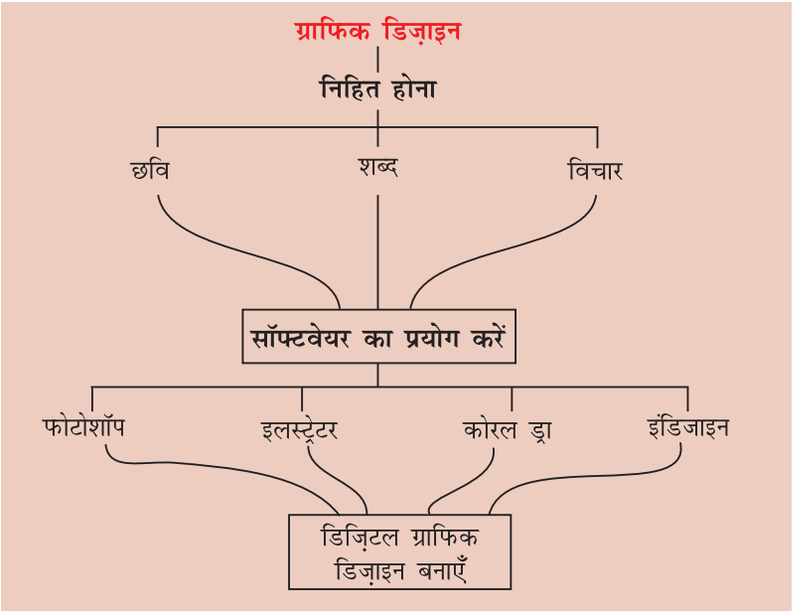

पाठांत प्रश्न

1. हाथ से पुस्तक का मुखपृष्ठ बनाएँ।
2. एक कार्ट्रिज शीट पर वारली शैली के कुछ मोटिफ लेकर एक ग्रीटिंग कार्ड बनाएँ।
3. A4 आकार की कार्ट्रिज शीट में लोगो डिज़ाइन करें।
4. पोस्टर कलर के साथ A4 आकार में दिवाली ग्रीटिंग कार्ड बनाएँ।

शब्दकोश

संचार	संदेश
टाइपोग्राफी	अभिलेख
खत्म करना	मुक्त हो जाना
प्रागैतिहासिक	प्राचीन
इंटरैक्शन	लेन-देन
दर्शन	दृष्टिकोण

9

आदिवासी एवं लोककला के संदर्भ में सृजनात्मक डिजाइन

डिजाइन, (आलेखन) मानव अनुभव, कौशल एवं ज्ञान का वह क्षेत्र है जिसकी सहायता से मानव अपने पर्यावरण को अपनी प्रतिदिन की आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल लेता है। हम मधुबनी चित्र, भील कला एवं दक्षिण भारतीय कोलम जैसी कलाओं को आदिवासी एवं लोककला के रूपों में देखेंगे। हम कुछ नया सृजित करने हेतु इन सभी लोक कलारूपों के अभिप्रायों का प्रयोग करेंगे। आलेखन को हम एक ऐसे क्रियाकलाप के रूप में देख सकते हैं जिसके द्वारा किसी विचार को एक उपयोगी एवं आलंकारिक वस्तु के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। उदाहरण के लिए हम इन लोककला के अभिप्रायों की पुनरावृति एवं पुन:नियोजन द्वारा अपने विचारों को एक नई अभिव्यक्ति प्रदान करेंगे।

ऐसी मान्यता है कि मधुबनी चित्र (जिन्हें मिथिला चित्र भी कहा जाता है।) का आरंभ रामायण काल में हुआ था। यहाँ के राजा जनक ने अपनी बेटी सीता के लिए श्रीराम से विवाह के अवसर पर लोगों से अपने घरों की दीवारों एवं प्रांगणों को चित्रांकित करने के लिए कहा था। मधुबनी चित्र एक निश्चित भू-भाग तक ही सीमित रही यद्यपि यह चित्र कौशल सदियों से चला आ रहा है। इन चित्रों की विषय-वस्तु एवं शैली लगभग समान ही रही है।

पश्चिमी एवं मध्य भारत के गौंड आदिवासियों के बाद भील भारत का दूसरा सबसे बड़ा आदिवासी समुदाय है। भारत के आदिवासियों का इतिहास, आर्यों के आगमन से भी पुराना है। वे सदियों से इस महाद्वीप के पर्वतीय क्षेत्रों पर राज्य करते रहे हैं। भारत के अन्य आदिवासियों की भांति भील आदिवासी भी प्रकृति के निकट रहे हैं एवं सामान्यत: कृषक जीवन व्यतीत करते हैं। उनकी कला के केन्द्र में उनका प्राकृतिक पर्यावरण होता है जो उनके गीतों, अनुष्ठानों एवं लोक किंवदन्तियाँ से युक्त होता है।

कोलम, ब्राह्मण संस्कृति से सम्बद्ध स्त्रियों द्वारा की जाने वाली वह सुंदर कला है जिसका उद्भव दक्षिण भारत में 300 वर्ष से भी पहले हुआ था। कोलम का उद्देश्य केवल सजावट नहीं है, विश्वास किया जाता है कि इनसे घर में समृद्धि आती है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- भारत के विभिन्न आदिवासी एवं लोक कलारूपों में अंतर कर सकेंगे;
- पुस्तक में दी गई लोक चित्रकला शैलियों में प्रयुक्त होने वाले आकारों, प्रतीकों एवं अभिप्रायों को पहचान सकेंगे;
- आदिवासी एवं लोक कलारूपों के सृजन की मूल अवधारणा को प्रस्तुत कर सकेंगे;
- विभिन्न पैटर्न की रचना कर सकेंगे;
- इन कलारूपों की पुरानी पारम्परिक तकनीक एवं आधुनिक दृष्टिकोण में अंतर कर सकेंगे;
- ज्यामितिक आकारों से अलग शैली बना सकेंगे;
- डिजाइन बनाने में लोक चिह्न/अभिप्रायों, प्रतीकों एवं संरचनाओं का प्रयोग कर सकेंगे।

9.1 मधुबनी चित्र

मधुबनी अथवा मिथिला चित्र परम्परागत रूप से वर्तमान मधुबनी, दरभंगा नगरों तथा मिथिला क्षेत्र के अन्य गाँवों में रहने वाली महिलाओं द्वारा बनाए जाते हैं। ये चित्र, केवल आकर्षक रेखांकन ही नहीं हैं, बल्कि इनमें ग्रामीणों द्वारा दैनिक अनुष्ठानों एवं उनके प्रकृति से साहचार्य से सम्बन्धित

चित्र 9.1

किंवदन्तियों की अभिव्यक्ति भी होती है। पारम्परिक रूप से चित्रांकन, गोबर मिट्टी से लिपी दीवारों पर की जाती है जिन्हें पहले चावल के आटे के घोल से रंगा जाता है। मधुबनी चित्रों में द्विआयामी छवियाँ चित्रित की जाती हैं। जो रंग काम में लाए जाते हैं उन्हें वनस्पतियों से प्राप्त किया जाता है। सजावटी पुष्प संरचनाएँ, बड़े नेत्रों वाली आकृतियाँ एवं हाशिए चित्रित किए जाते हैं। शैली के स्वभाव के अुनरूप प्राकृतिक एवं पौराणिक आकृतियाँ भी चित्रित की जाती हैं।

चित्र 9.2

सबसे अधिक चित्रित की जाने वाली विषयवस्तु है हिन्दू देवी-देवताओं के चित्र जैसे कृष्ण, शिव, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, सूर्य एवं चंद्र तथा तुलसी का पौधा, विवाह के दृश्य एवं उनके आस-पास हो रही घटनाएँ। खाली स्थानों में फूल-पत्तियाँ एवं पशु-पक्षियों की आकृतियाँ बनाई जाती हैं। इस शैली के चित्रों में रिक्त स्थान नहीं छोड़ा जाता। रंग सपाट भरे जाते हैं, उनमें शेडिंग नहीं की जाती। आकृतियों की बाहरी रेखा दोहरी बनाई जाती है और उनमें मध्य के स्थान को क्रास अथवा छोटी सीधी रेखाओं की पुनरावृति से भर दिया जाता है। केवल बाहरी रेखाओं द्वारा बनाए जाने वाले चित्रों में कोई रंग नहीं भरा जाता केवल रेखाओं से ही चित्रण पूर्ण किया जाता है। वर्तमान में व्यावसायिक उद्देश्यों से यह चित्र कागज, कपड़ा एवं कैनवास पर भी बनाए जा रहे हैं।

मधुबनी चित्रों में प्रयुक्त किए जाने वाले प्रतीक, अभिप्राय एवं आकार हैं : मानव आकृतियाँ, पक्षी, हाशिए, कृष्ण, मछली, सूर्य देव, पुष्प आकार एवं वृक्ष।

9.2 भील कला

पिठौरा भील चित्रों की परम्परा घरों में चित्रण की जाने वाली कला है। किंवदन्तियों एवं लोक विश्वासों में प्रचलित दैवीय छवियों से दीवारों एवं छत पर अलंकरण किया जाता है। प्रत्येक वर्ष घर की भीतरी दीवारों पर मिट्टी से उभारदार भित्ति अलंकरण एवं चित्र बनाए जाते हैं। चित्रकारी

हेतु रंग फूल-पत्तियों जैसे प्राकृतिक साधनों से प्राप्त किए जाते हैं तथा ब्रश नीम की टहनी से बना लिए जाते हैं। इन भित्ति अलंकरणों में बदलते मौसम उनकी रक्षा करने वाले देवी-देवता तथा अच्छी फसल आदि प्रतिबिम्बित होते हैं। भील चित्रों में जन्म एवं अन्य समारोहों से प्रस्फुटित होने वाले मानव उल्लास को व्यक्त किया जाता है।

चित्र 9.3

चित्र 9.4

भील चित्रों में प्रयुक्त होने वाले प्रतीक, अभिप्राय एवं आकार : हाशिए के डिजाइन, हिरण, चूहा, सर्प, पक्षी, हाथी सवार, कार्यरत मानव आकृतियाँ एवं मुर्गा आदि।

9.3 कोलम

कुछ समय पहले तक कोलम चावल के मोटे पिसे आटे से बनाए जाते थे ताकि चीटियों को खाने की तलाश में अधिक दूर न जाना पड़े। चावल का चूर्ण, पक्षियों एवं अन्य छोटे जीवों को भी खाने हेतु आकर्षित करता था, इस प्रकार वह किसी घर में आने हेतु अन्य जीवों को आमंत्रित करता था, अत: यह प्रकृति में समरसता पूर्ण सह-अस्तित्व की भावना को बढ़ावा देता है। हिन्दुओं का यह विश्वास है कि घर के दरवाजे पर चावल के आटे से चित्रांकित किए जाने वाले ज्यामितीय रूपाकार एवं आकल्पन घर में लक्ष्मी को आमंत्रित करते हैं एवं बुरी आत्माओं को दूर भगाते हैं। विभिन्न देवी-देवताओं हेतु बनाए जाने वाले कोलम विशिष्ट होते हैं। कोलम कई तरह से बनाए जाते हैं इनमें कुछ ज्यामितीय एवं अंकशास्त्रीय रेखांकनों की भांति बिन्दुओं के ढांचे तैयार किए जाते हैं तो कुछ मुक्त हस्त चित्रित किए जाते हैं। बिन्दु जिन्हें पुल्ली कहा जाता हैं, उन्हें निश्चित क्रम में संयोजित कर लिया जाता है, इन बिन्दुओं को रेखा द्वारा आपस में जोड़कर चित्रात्मक आकल्पन तैयार कर लिए जाते हैं, कोलम में बनाए जाने वाले आकल्पन दो प्रकार के होते हैं। पहले वे, जिनमें बिन्दुओं को सीधी रेखाओं से जोड़कर रूपाकार बनाते हैं तथा दूसरे वे जिनमें घूमी हुई सांकल जैसे आकारों को जोड़कर आश्चर्यजनक रूपाकार तैयार किए जाते हैं। विश्वास किया जाता है कि यह बिन्दु हमारे जीवन में आने वाली चुनौतियों के प्रतीक हैं तथा इनके आस-पास घुमती रेखाएँ हमारी जीवन यात्रा को दर्शाती हैं।

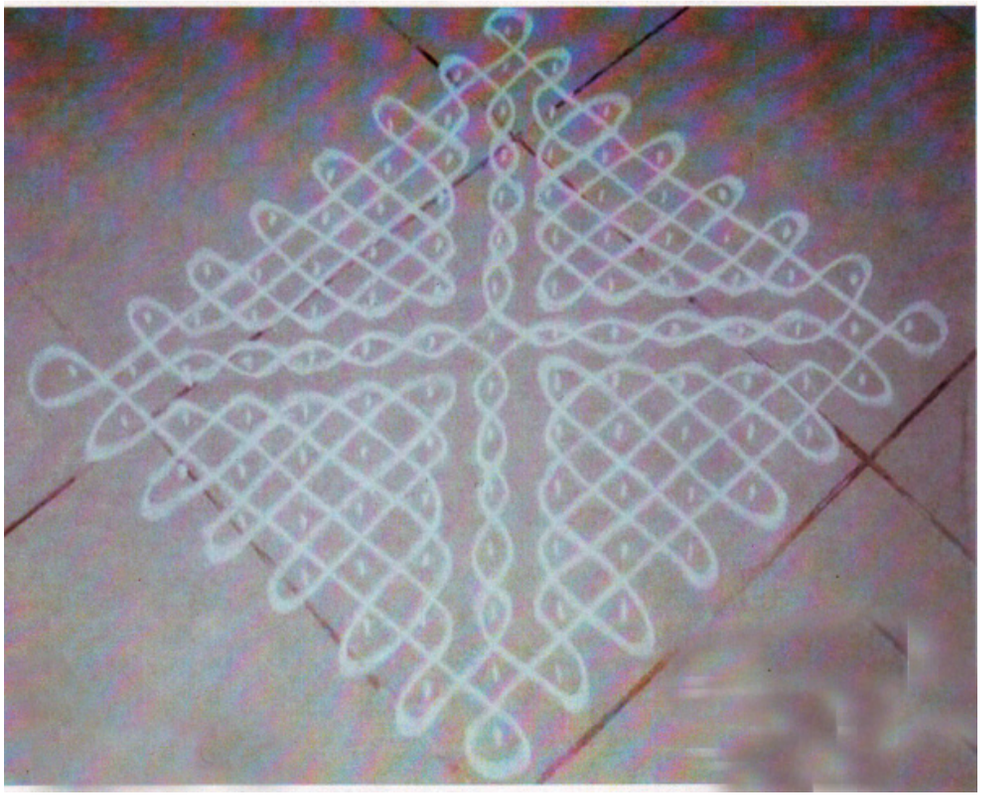

चित्र 9.5

चित्र 9.6

कोलम चित्रों में प्रयुक्त होने वाले प्रतीक, अभिप्राय एवं आकार : बिन्दु, बिन्दुओं को जोड़ने वाली सीधी रेखाएँ, बिन्दुओं को जोड़ने वाली घुमावदार रेखाएँ, बिन्दुओं से अलग बनी सीधी एवं घुमावदार रेखाएँ, बिना हाथ रोके एक ही प्रवाह में बनाई गई रेखाएँ।

9.4 आवश्यक सामग्री

मधुबनी, भील एवं कोलम चित्र बनाने हेतु शिक्षार्थी के पास निम्न सामग्री होनी चाहिए :

1. ड्राइंग बोर्ड अथवा कठोर पट
2. ड्राइंग शीट अथवा कपड़ा
3. ड्राइंग पिन
4. पैंसिल
5. रबर
6. जलरंग
7. रंग मिलाने हेतु रंग पट्टिका
8. जलरंगो के ब्रश
9. काला पेन
10. भूमि पर चित्र बनाने हेतु चावल का चूर्ण एवं कपड़ा
11. रंगों को मिलाने हेतु प्याली

अभ्यास 1

ड्राइंग शीट पर मधुबनी शैली में सूर्यदेव का चित्रण करना।

प्रथम चरण

सबसे पहले ट्रेसिंग पेपर पर वांछित आकल्पन तैयार करते हैं, अब इसे कार्बन पेपर की सहायता से ड्राइंग शीट पर चित्रित करेंगे।

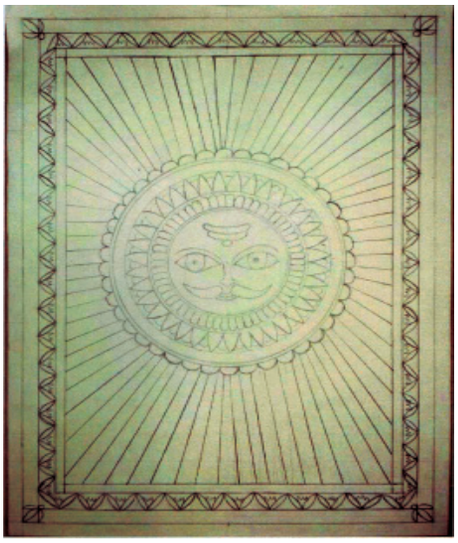

चित्र 9.7

द्वितीय चरण

आप इसमें सूर्य के चेहरे के नाक नक्श चित्रित कर सकते हैं जैसा कि मधुबनी चित्रों में सामान्यत: देखने को मिलता है।

चित्र 9.8

तृतीय चरण

कागज पर बनाए चित्र में पोस्टर कलर का प्रयोग करें। रंगों को सपाट भरें, शेडिंग न करें। पारम्परिक तौर पर नारंगी एवं लाल रंग का ही उपयोग किया जाता है, परन्तु आप इसे आकर्षक बनाने हेतु गुलाबी, बैंगनी, नीला, आदि रंग भी प्रयोग कर सकते हैं। (चित्र 9.9)

चित्र 9.9

चतुर्थ चरण

बाह्य रेखाओं को बनाने हेतु काले रंग का प्रयोग करें। आमतौर पर बाह्यरेखा दोहरी बनाई जाती है तथा उनके मध्य के स्थान को क्रास अथवा छोटी-छोटी सीधी रेखाओं से भर दिया जाता है। चारों ओर हाशिया (बार्डर) अवश्य बनाएँ। यह आपके चित्र को एक नया आयाम देगा। (चित्र 9.10)

चित्र 9.10

काले रंग का प्रयोग कर बाह्य रेखा बनाएँ और 24 घंटे तक सूखने के लिए छोड़ दें। आपका मधुबनी चित्र तैयार है।

अभ्यास 2

ड्राइंग शीट पर एक पिठौरा घोड़ा चित्रित करना

भीलों का विश्वास है कि उनके देवी-देवता घोड़े पर सवारी करते हैं। इसी कारण वे पिठौरा के घोड़े को शुभ प्रतीकों के रूप में चित्रित करते हैं।

प्रथम चरण

चित्रकला का यह एक अत्यन्त सरल रूप है। इसके लिए आपको किसी भी विशेष ज्ञान की आवश्कता नहीं हैं, बस सृजनशील मस्तिष्क एवं थोड़ी सी कला में रूची ही काफी है। पहले ड्राइंग शीट पर वांछित आकृति रेखांकित करें। (चित्र 9.11)

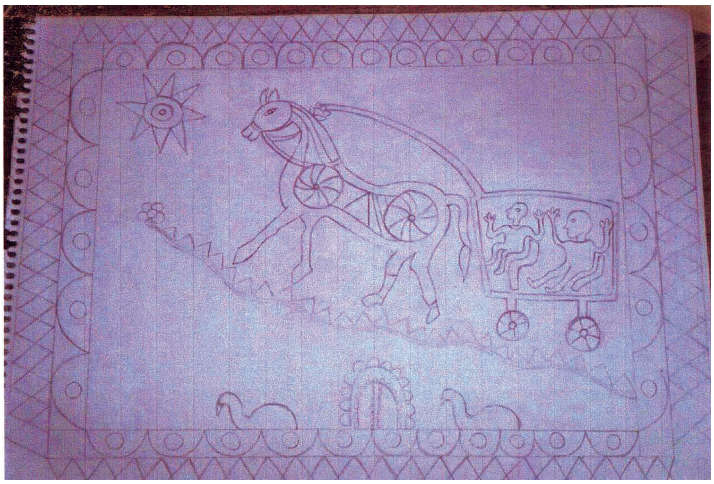

चित्र 9.11

द्वितीय चरण

आप घोड़े की आकृति एवं उसके चेहरे के विवरण वैसे ही चित्रित कर सकते हैं जैसे की भील चित्रों में बनाए जाते हैं। (चित्र 9.12)

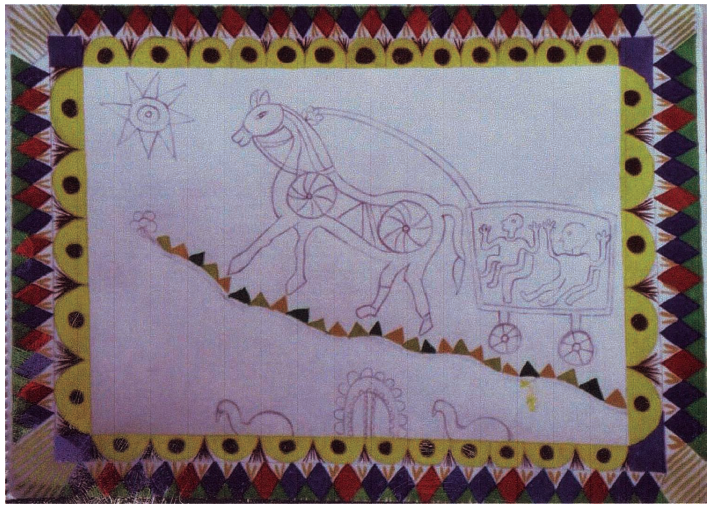

चित्र 9.12

तृतीय चरण

कागज पर सपाट रंग भरें, किसी प्रकार की शेडिंग न करें। पारम्पारिक तौर पर लाल, हरा एवं नारंगी जैसे बुनियादी रंग भरे जाते हैं। (चित्र 9.13 देखें)

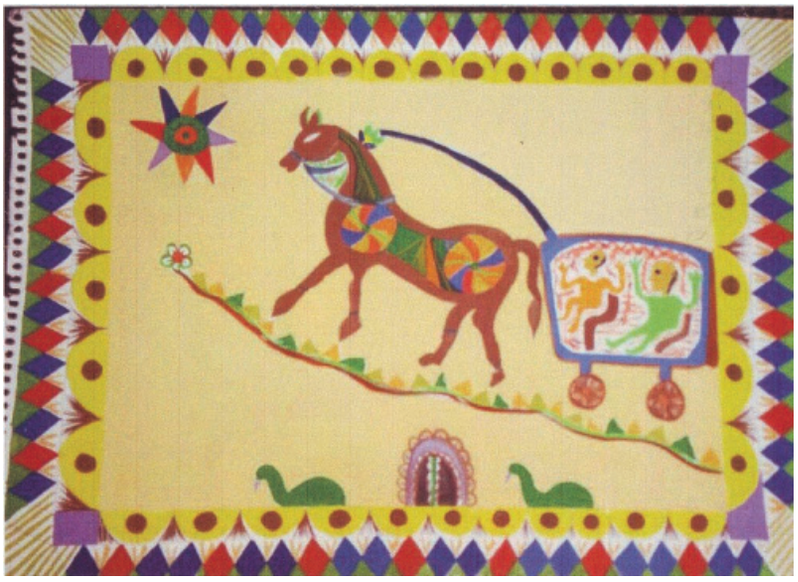

चित्र 9.13

चतुर्थ चरण

घोड़े में रंग भरने के उपरान्त रेखाओं पर समान आकार के बिन्दु सफेद, हरे, नीले एवं पीले रंग से अंकित करें। सम्पूर्ण घोड़े की आकृति में रिक्त स्थान को रंग से भर दें। (चित्र 9.14 देखें)

चित्र 9.14

अब आपके पिठौरा घोड़े का भील चित्र तैयार है।

अभ्यास 3

एक ड्राइंग शीट पर कोलम का चित्र बनाएँ

प्रथम चरण

शीट पर मध्य के स्थान में सात बिन्दु का कॉलम बनाएँ। अब इस मध्य स्थान के दोनों ओर पांच-पांच बिन्दुओं के दो कॉलम बनाएँ। इस बिन्दु समूह के दोनों ओर दोनों सिरों पर एक-एक बिन्दु बनाएँ। अब इन बिन्दुओं के मध्य रेखा घुमाते हुए एक दूसरे पर ओवरलैप करते हुए लूप चित्रित करें। (चित्र 9.15 देखें)

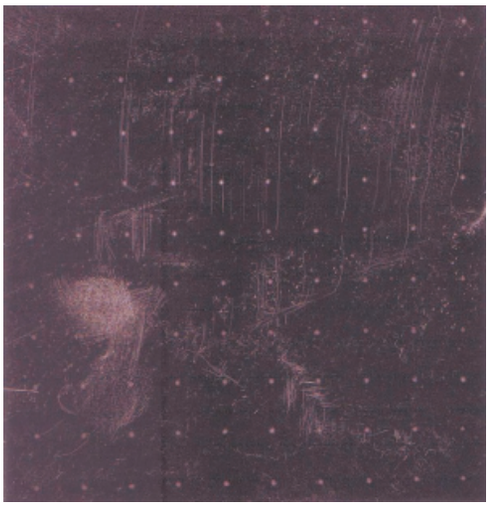

चित्र 9.15

द्वितीय चरण

कोलम में सामान्यत: इन स्वतंत्र बिन्दुओं को घेरते हुए छोटे-छोटे वृत्त बनाए जाते हैं। अन्त में इस बिन्दु समूह को घेरते हुए चार वृत चित्रित कर कोलम पूर्ण किया जाता है। (चित्र 9.16 देखें)

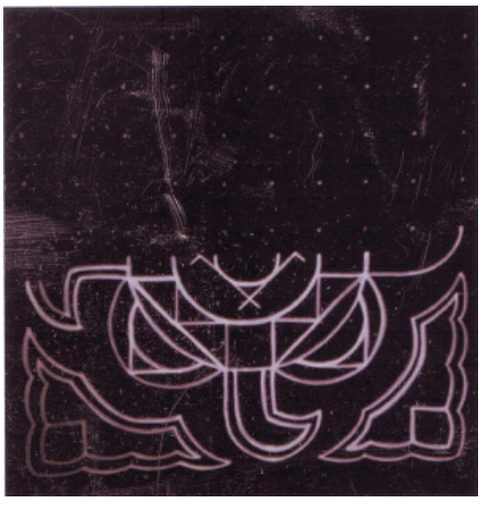

चित्र 9.16

तृतीय चरण

फिर, एक और लूप बनाएँ जो कोलम डिजाइन की परिधि के साथ-साथ पिछले लूपों को जोड़ता है (चित्र 9.17)।

चित्र 9.17

चतुर्थ चरण

कोलम में आमतौर पर ऐसे स्वतंत्र बिंदुओं के चारों ओर छोटे वृत्त खींचे जाते हैं और अंत में कोलम पैटर्न को पूरा करने के लिए उपर्युक्त बिंदुओं के चारों ओर चार वृत्त खींचे जाते हैं (चित्र 9.18)।

चित्र 9.18

अब आपका कोलम चित्र पूरा हो गया है।

आपने क्या सीखा

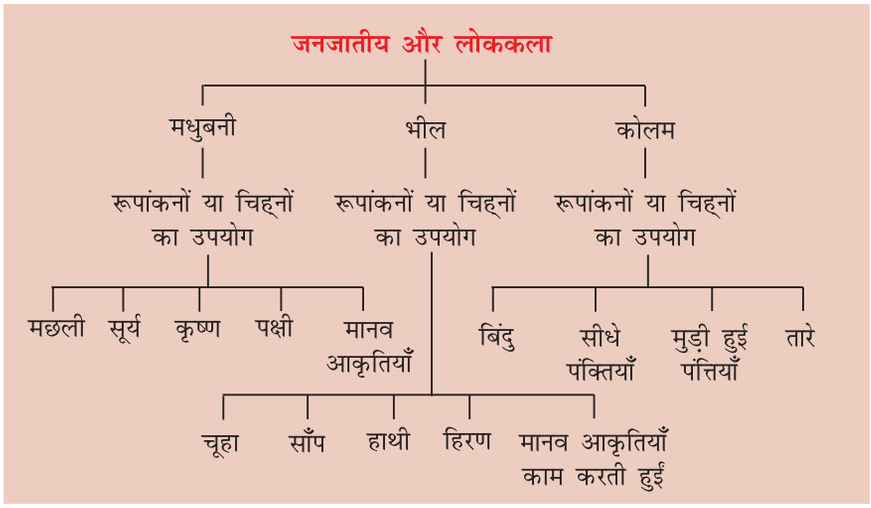

पाठांत प्रश्न

1. दोहरी बाह्य रेखाएँ हाशिए एवं मिट्टी के रंगों का प्रयोग करते हुए, मधुबनी चित्र शैली का एक सामान्य नमूना चुनकर उसे ड्राइंग शीट पर चित्रित करें।
2. भील कला के दिए गए पशु-पक्षी आकृतियों के नमूने से एक चित्र संयोजन तैयार करें एवं उसमें भील चित्रों की तकनीक के अनुसार रंगांकन करें।
3. ड्राइंग शीट पर सीधी रेखाओं की सहायता से एक कोलम बनाएँ।
4. परम्परागत तकनीक का प्रयोग करते हुए भूमि पर एक कोलम चित्र बनाएँ।
5. मधुबनी चित्रों में सामान्यत: चित्रित की जाने वाली विषय-वस्तु एवं आकल्पनों को सूचीबद्ध करें।

शब्दकोश

सटा हुआ	निकटवर्ती
सीमित	प्रतिबंधित
लोककथा	लोक में प्रचलित कथाएँ
धार्मिक कृत्य	धार्मिक समारोह

आलंकारिक	रूप सजाने के लिए
झटका	उबड़ खाबड़
भू-भाग	क्षेत्र/प्रदेश
राज किया	शासन किया
समृद्धि	फलना-फूलना, विस्तार होना आदि
असंख्यक	पौराणिक संकल्पना की आधुनिक व्याख्या
लोकसाहित्य	मिथक तथा प्रसिद्ध व्यक्ति से संबंधित लोक किवदन्तियाँ
फसल कटाई	कृषि कार्य
समारोह	रीति-रिवाज़ का अवसर
दानेदार	खुरदरा
खाका	मूल प्रारूप
एकमात्र	केवल/अकेला
आदिवासी	क्षेत्र विशेष के मूल निवासी।

पहला मोड़

पाठों के विषय में प्रतिपुष्टि (Feed back on Lessons)

पाठ संख्या	पाठ का नाम	विषय वस्तु			भाषा		उदाहरण		आपने क्या सीखा	
		कठिन	रोचक	भ्रामक	सरल	जटिल	उपयोगी	उपयोगी नहीं	अत्यंत सहायक	सहायक नहीं
1.										
2.										
3.										
4.										
5.										
6.										
7.										
8.										
9.										

चौथा मोड़

तीसरा मोड़

प्रतिपुष्टि प्रपत्र को आज ही भरें तथा डाक से भेजें

अन्तिम मोड़ और बंद कर दीजिए

प्रिय शिक्षार्थियो

अपनी पाठ्य पुस्तकों को पढ़कर आपको आनंद आया होगा। हमने पाठ्य सामग्री को यथासंभव प्रासंगिक तथा रूचिकर बनाने के लिये भरसक प्रयास किया है। विषय सामग्री का विकास आप और हम दोनों पर निर्भर करता है। आपकी प्रतिपुष्टि विषय सामग्री को सुधारने में हमारी सहायता करेगी। अपने समय में से कुछ मिनट अवश्य निकाले तथा प्रतिपुष्टि प्रपत्र को भर कर हमें भेज दीजिए ताकि एक रूचिकर तथा उपयोगी विषय सामग्री का निर्माण किया जा सके।

धन्यवाद

समन्वयकर्ता

चित्रकला प्रयोगात्मक

प्रश्नों के विषय में प्रतिपुष्टि (Feed back on Questions)

पाठ संख्या	पाठ का नाम	पाठगत प्रश्न		पाठान्त प्रश्न		
		उपयोगी	उपयोगी नहीं	सरल	कठिन	अत्यंत कठिन
1.						
2.						
3.						
4.						
5.						
6.						
7.						
8.						
9.						

दूसरा मोड़

आपके सुझाव

_____

_____

_____

_____

क्या आपने चित्रकला प्रयोगात्मक के अध्ययन के लिये कोई अन्य पुस्तक पढ़ी है? हाँ/नहीं
यदि हाँ तो उसे पढ़ने का कारण दें।

_____

_____

नाम : _____
नामांकन संख्या : _____
पता : _____
_____

विषय : _____
पुस्तक संख्या : _____

सहायक निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
ए - 24-25, इंस्टीट्यूशनल एरिया
सेक्टर - 62 नोएडा (यू.पी.)

डाक टिकट

किसी अनुलग्नक की अनुमति नहीं